

आवास भारती

वर्ष 21 | अंक 81 | अक्टूबर-दिसम्बर, 2021



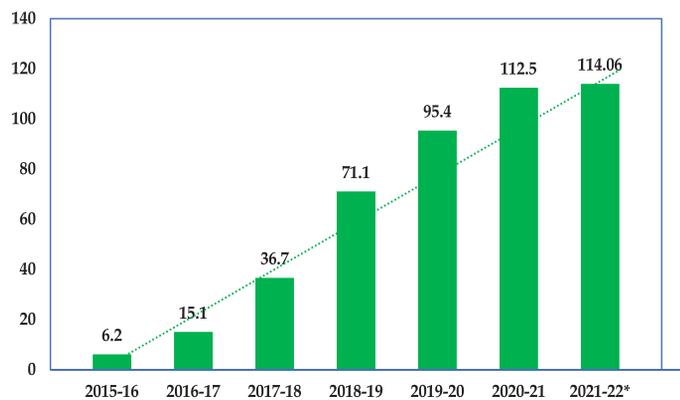
राष्ट्रीय
आवास बैंक
NATIONAL
HOUSING BANK

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) – “सबके लिए आवास मिशन”

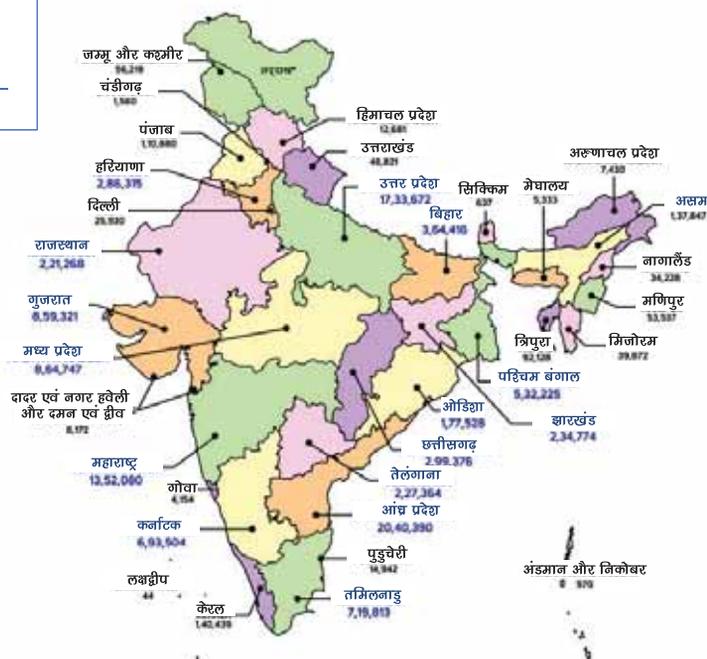
पीएमएवाई (यू) के विकल्प और प्रगति

आईएसएसआर	सीएलएसएस	एचपी	बीएलसी
स्व-स्थाने मलिन बस्ती पुनर्विकास	ऋण आधारित सब्सिडी योजना	भागीदारी में किफायती आवास	लाभार्थी आधारित वैयक्तिक आवास निर्माण / विस्तार हेतु सब्सिडी
निजी भागीदारी के साथ संसाधन के रूप में भूमि का उपयोग। अतिरिक्त एफएसआई / टीडीआर / एफएआर परियोजनाओं को वित्तीय व्यवहार बनाने के लिए यदि अपेक्षित हो।	ईडब्ल्यूएस / एलआईजी और एमआईजी के लिए ब्याज राहत सब्सिडी। आवास ऋण पर 3 – 6.5 प्रतिशत की ब्याज सब्सिडी	किफायती आवास परियोजनाओं में केंद्रीय सहायता जहां 35 प्रतिशत निर्मित घर ईडब्ल्यूएस श्रेणी के लिए हैं	ईडब्ल्यूएस श्रेणी के व्यक्तियों के लिए जिन्हें व्यक्तिगत आवास निर्माण / विस्तार की आवश्यकता है
भारत सरकार अनुदान @ ₹1 लाख प्रति आवास	सब्सिडी के माध्यम से ₹2.6 लाख तक का लाभ	भारत सरकार अनुदान @ ₹1.5 लाख प्रति आवास	भारत सरकार अनुदान @ ₹1.5 लाख प्रति आवास
4.58 लाख आवास स्वीकृत	17.35 लाख आवास स्वीकृत	22.91 लाख आवास स्वीकृत	69.22 लाख आवास स्वीकृत

स्वीकृत आवासों की संख्या (लाख में)



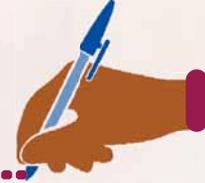
पीएमएवाई-यू की राज्य-वार प्रगति - स्वीकृत आवासों की संख्या



शीर्ष 15 राज्यों को नीले रंग में हाइलाइट किया गया है।
स्रोत: आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय। *22 नवंबर 2021 के अनुसार अंतिम।
*जम्मू और कश्मीर में शामिल



संपादक की कलम से...



प्रिय पाठकगण,

मुझे अक्टूबर-दिसंबर, 2021 का 81वां अंक अपने प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत सुखद प्रसन्नता हो रही है। आवास भारती के माध्यम से हमारी यह कोशिश है कि हम राष्ट्रीय आवास बैंक की व्यावसायिक गतिविधियों के साथ-साथ आवास, बैंकिंग, अर्थव्यवस्था आदि तकनीकी विषयों पर विचारोत्तेजक लेख प्रस्तुत करें, जिससे पत्रिका के उद्देश्य की सिद्धि हो सकें। राष्ट्रीय आवास बैंक ने अपनी पूर्व परंपरा को कायम रखते हुए एक बार पुनः जुलाई-दिसंबर छमाही में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किए जहां एक ओर बैंक के पुनर्वित्त संवितरण का आंकड़ा इस वित्तीय वर्ष में दिसंबर, 2021 तक 6677 करोड़ रुपये और फरवरी, 2022 के अंत तक 10402 करोड़ रुपये को पार कर गया। दिसंबर, 2021 को समाप्त छमाही में बैंक ने 1942 करोड़ रुपये का सकल और 1453 करोड़ रुपये का कर पश्चात लाभ अर्जित किया। बैंक ने हाल ही में भारत में आवास की प्रवृत्ति एवं प्रगति रिपोर्ट 2021 भी प्रस्तुत की जिसमें आवास क्षेत्र की मुख्य प्रवृत्ति एवं प्रगति का लेख पत्रिका में प्रस्तुत किया गया। प्रबुद्ध पाठकों की जानकारी के लिए यह इंगित किया जाता है कि बैंक अपनी तीनों भूमिका: पर्यवेक्षण, वित्तपोषण और संवर्धन एवं विकास में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है।

मेरा सभी पाठकों से अनुरोध है कि वे इस रिपोर्ट का अवश्य अध्ययन करें। भारत में आवास वित्त संवितरण का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। वित्त वर्ष 2020-21 की स्थिति के अनुसार, प्राथमिक ऋणदाता संस्थानों द्वारा 5,04,263 करोड़ रुपये का वैयक्तिक आवास ऋण संवितरण किया गया एवं सितंबर, 2021 की स्थिति के अनुसार प्राथमिक ऋणदाता संस्थाओं का बकाया वैयक्तिक आवास ऋण 23,42,552 करोड़ रुपये के आंकड़ों को पार कर गया है अगर हम राज्य-वार संवितरण देखें तो कई राज्यों जैसे महाराष्ट्र, तमिलनाडु, तेलंगाना, गुजरात, कर्नाटक आदि के काफी बड़ी राशि के वैयक्तिक आवास ऋण के संवितरण हुए हैं जो इन राज्यों में बढ़ रहे नगरीकरण की ओर संकेत करते हैं। अगर हम आवास वित्त कंपनियों के कुल ऋण पोर्टफोलियों की बात करें तो यह 31 मार्च, 2020 को 12,19,186 करोड़ रुपये से बढ़कर 31 मार्च, 2021 को 12,94,950 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। बैंक द्वारा इस रिपोर्ट में आवास वित्त क्षेत्र में कोविड-19 के अध्ययन पर भी विचार कर उसका सार प्रस्तुत किया गया है। यह किया गया अध्ययन हमें बताता है कि कोविड-19 के फैलते संक्रमण और उसके बाद के लॉकडाउन ने पूरे आवास वित्त उद्योग के समक्ष कई सारी नई चुनौतियां खड़ी कर दी, जो पहले से ही 2019 से चलनिधि की कमी से जूझ रहा था। हालांकि, चलनिधि समावेश और ऋणस्थगन उपायों की सहायता से आवास वित्त कंपनियों ने महामारी के दौरान अपने कार्यों को बेहतर तरीके से आगे बढ़ना जारी रखा।

इसके अतिरिक्त, आ.वि.कं. की समग्र ऋण स्वीकृतियां वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही की तुलना में वित्त वर्ष 2020-21 की तीसरी तिमाही में दोगुने से अधिक रही। संवितरण ने भी इसी प्रवृत्ति को अपनाया और चुकौती के बावजूद कुल बकाया में भी बढ़ोतरी हुई। तीसरी तिमाही में वृद्धि विशेष रूप से वर्ष के अंत के दौरान जबरदस्त रही है, जिसमें किरायेदार और लक्जरी आवास बाजार पूर्व-कोविड स्तरों के करीब पहुंच गया। होम लोन की कम दरें, समेकन, वर्क फ्रॉम होम के कारण बड़े घरों की जरूरत और संपत्तियों में रेडी-टू-मूव रिहायशी आवास बाजार की वापसी के कारण रहे।

इसी के साथ आवास वित्त ऋणों का जीएनपीए प्रतिशत समान बना रहा और तीन तिमाहियों में घट गया और वर्ष की अंतिम तिमाही यानी जनवरी-मार्च 2021 के दौरान मामूली वृद्धि दर्ज की गई। इसके अलावा, एनएनपीए के स्तर में स्वीकृतियों, बकाया और संवितरण वृद्धि के बावजूद गिरावट बनी रही। यह आवास वित्त बाजार के पूर्व-कोविड स्तरों पर आने का स्पष्ट संकेत है।

अब धीरे-धीरे भारतीय अर्थव्यवस्था एवं आवास वित्त क्षेत्र कोविड-19 के प्रभाव से निकल कर आगे बढ़ रहा है एवं अर्थव्यवस्था सुधार के साथ पुनः गति पकड़ रही है। हमें विश्वास है कि आने वाले समय में जगत को कोविड-19 के दुष्प्रभावों से मुक्ति मिलेगी एवं आवास वित्त क्षेत्र में कारोबार और तेजी से आगे बढ़ेगा एवं इस प्रक्रिया में राष्ट्रीय आवास बैंक पूर्व की तरह अपनी उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह करते हुए आम आदमी के अपने घर के सपने को और प्रभावी रूप से साकार करेगा। इस अंक पर पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।


(रंजन कुमार बरुन)
उप महाप्रबंधक एवं संपादक



आप की पाती

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "आवास भारती" के 79वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित लेख "कंठस्थ" में अनुवाद करना बहुत आसान करके तो देखिए, कोविड के दौर में जिंदगी में बदलाव "भारत एवं ओलंपिक्स" "प्राकृतिक आपदा" विशेष रूप से पठनीय और ज्ञानवर्धक हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी लेख एवं कविताएं भी उत्कृष्ट स्तर के हैं।

आशा है कि भविष्य में भी आप नवीनतम एवं रोचक विषयों के साथ इस पत्रिका का प्रकाशन करते रहेंगे। पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए संपादन मंडल को बधाई एवं शुभकामनाएं।

(नम्रता बजाज)
प्रबंधक (राजभाषा)
केंद्रीय भण्डारण निगम

महोदय,

आपके द्वारा भेजा गया पत्र संख्या: राआबैं/ईपीडी.राजभा0आभा0/79/आउट/05117/2021 दिनांक 20.09.2021 प्राप्त हुआ। मैं राष्ट्रीय आवास बैंक को आपकी एक और नवीन एवं उत्तम गृह पत्रिका- आवास भारती के अप्रैल-जून 2021 का 79वां अंक प्रकाशित करने के लिए बधाई और धन्यवाद देता हूँ। इस अंक में आपके द्वारा भारत में क्रिप्टोकारेंसी का भविष्य, कोविड के दौर में जिंदगी में बदलाव एवं वित्तीय संस्थानों में आकड़े विश्लेषण की उपयोगिता आदि विषयों पर लेख सराहनीय है। साथ ही साथ समसामायिक विषयों यथा भारत एवं ओलंपिक्स, किफायती किराया आवास परिसर एवं भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मौद्रिक नीति पर दी गई जानकारी आम आदमी तक पहुंचाने हेतु मैं राष्ट्रीय आवास बैंक को बधाई और मुबारकवाद देता हूँ।

मैं आशा करता हू कि निकट भविष्य में भी आप हमें ऐसे ही नित नये विषयों की जानकारी देते रहेंगे।

(डॉ शैलेश कुमार अग्रवाल)
निर्माण सामग्री एवं प्रौद्योगिकी संवर्द्धन परिषद (बीएमटीपीसी)

महोदय,

आपके द्वारा भेजा गया पत्र संख्या: राआबैं/राजभा0/आवास भारती 80/आउट 07992/2021/14 दिसंबर 2021 प्राप्त हुआ। मैं राष्ट्रीय आवास बैंक को आपकी एक और नवीन एवम उत्तम गृह पत्रिका- आवास भारती के जुलाई-सितंबर 2021 का 80 वा अंक 'आजादी का अमृत महोत्सव' व विश्व पर्यावास दिवस 2021 के अवसर पर प्रकाशित करने के लिए बधाई और धन्यवाद देता हूँ। इस अंक में आपके द्वारा आवास, अर्थव्यवस्था, वित्तीय प्रबंधन आदि तकनीकी विषयों पर लेख प्रकाशित करने के साथ देश में आवास क्षेत्र में हो रही प्रगति की सूचना और विश्व में कार्बन उत्सर्जन में बढ़ोतरी के कारण, हरित आवास-वर्तमान समय की आवश्यकता, देश की प्रगति में वित्तीय समावेशन के भूमिका इत्यादि लेख बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक हैं इसके लिए मैं राष्ट्रीय आवास बैंक को बधाई और मुबारकवाद देता हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि निकट भविष्य में भी आप हमें ऐसे ही नित नये विषयों की जानकारी देते रहेंगे।

(डॉ शैलेश कुमार अग्रवाल)
निर्माण सामग्री एवं प्रौद्योगिकी संवर्द्धन परिषद

महोदय,

आपके कार्यालय की जुलाई-सितंबर, 2021 गृह पत्रिका का 80वां अंक "आवास भारती" की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में "आजादी का अमृत महोत्सव" व विश्व पर्यावास दिवस, 2021 के लिए आप बधाई के पात्र हैं। कृपया स्वीकार करें। पत्रिका में राजभाषा से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का समावेश अत्यंत रोचक और सुखद है और यह इंगित करता है कि आप राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति सजग हैं। पत्रिका के सभी लेख और रचनाएं सराहनीय हैं जिसके लिए संपादक मंडल भी बधाई का पात्र है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

धन्यवाद,

(राकेश कुमार सुन्दरियाल)
हिंदी अधिकारी
सैन्ट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड



आवास भारती

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
1. हरित किफायती आवास	12
2. होम लोन स्विच करते समय क्या ध्यान रखें	15
3. सतर्क रहेंगे तभी तो समृद्धि मिलेगी	17
4. संतुलित आहार – स्वस्थ जीवन का आधार	19
5. गुरु मंत्र	22
6. भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी	24
7. भारत में ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर्स पारितंत्र	27
8. स्वतंत्र भारत @75: ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भरता	29
9. क्रोध: जीवन का सबसे बड़ा शत्रु	31
10. मैं उदास क्यों हूँ!	34
11. भारत में हरित आवास	36
12. ई-वेस्ट और प्रदूषण	38
13. आवास ऋण के विकल्प	41
14. डिजिटल इंडिया – प्रारूप एवं अर्थव्यवस्था में इसकी उपयोगिता	43
15. प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण- एक अच्छा कदम	45
16. घर सुरक्षित हो अपना	47

कुल तकनीकी लेख	– 08
कुल सामान्य लेख	– 08
कुल योग	– 16

आवास भारती

राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा पत्रिका
(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

पंजी. संख्या, दिल्ली इन / 2001 / 6138

वर्ष 21, अंक 81, अक्टूबर-दिसम्बर, 2021

प्रधान संरक्षक

श्री शारदा कुमार होता
प्रबंध निदेशक

संरक्षक

श्री राहुल भावे
कार्यपालक निदेशक

प्रधान संपादक

वै. राजन
महाप्रबंधक

संपादक

रंजन कुमार बरून
उप महाप्रबंधक

सहायक संपादक

शोभित त्रिपाठी
राजभाषा अधिकारी

संपादक मंडल

अमित सिन्हा, उप महाप्रबंधक
प्रशांत कुमार राय, सहायक महाप्रबंधक
सुकृति वाधवा, प्रबंधक
संजीव कुमार सिंह, प्रबंधक
रौनक अग्रवाल, सहायक प्रबंधक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार,
मौलिकता एवं तथ्य आदि लेखकों के अपने हैं।
संपादक या बैंक का इनके लिए
ज़िम्मेदार अथवा सहमत होना
अनिवार्य नहीं है।



राष्ट्रीय
आवास बैंक
NATIONAL
HOUSING BANK

(भारत सरकार के अंतर्गत सांविधिक निकाय)

कोर-5 ए, 3-5 वां तल,
भारत पर्यावास केंद्र
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003



आवास भारती

राष्ट्रीय आवास बैंक की व्यवसायिक व अन्य गतिविधियां

बैंक द्वारा सतर्कता सप्ताह का आयोजन - विविध कार्यक्रम

भारत वर्ष 15 अगस्त, 2022 को अपनी स्वतंत्रता के स्वर्णिम 75 वर्ष पूरे करेगा। केंद्रीय सतर्कता आयोग ने इसे ध्यान में रखते हुए एवं भ्रष्टाचार निरोध के प्रति अपनी प्रतिबद्धता एवं सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा को सुनिश्चित करने की दिशा में एक आत्मनिर्भर भारत निर्माण की नव जागृति के अनुक्रम में 26 अक्टूबर से 01 नवंबर, 2021 तक **'Independent India @75: Self Reliance with Integrity'** / **'स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता'** की थीम के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह का निर्णय लिया है। राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा भी इस अनुसरण में 26 अक्टूबर से 01 नवंबर, 2021 तक पूरे जोश एवं उत्साह के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन बैंक के मुख्यालय व विभिन्न कार्यालयों में किया गया। सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलक निम्नानुसार है:

I. राष्ट्रीय आवास बैंक में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा 26 अक्टूबर से 1 नवंबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया है। इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह का विषय **'Independent India @ 75: Self Reliance with Integrity'** / **'स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता'** है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान, बैंक लोकहित प्रकटीकरण और मुखबिर संरक्षण संकल्प, 2004 (पीआईडीपीआई) के तहत उपलब्ध शिकायत प्रणाली पर लोगों को जागरूक करने पर ध्यान केंद्रित किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के आयोजन की शुरुआत श्री एस. के. होता, प्रबंध निदेशक एवं श्री विजय कुमार त्यागी, मुख्य सतर्कता अधिकारी, राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर बैंक के अधिकारियों को द्विभाषी में 'सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा' (अंग्रेजी और हिंदी में) दिलाने के साथ शुरू हुई।

श्री एस.के. होता, प्रबंध निदेशक ने अपने भाषण में कहा कि राष्ट्रीय आवास बैंक सशक्त मूल्यों एवं नैतिकता द्वारा अधिशासित एक संगठन है तथा हमेशा से उत्कृष्टता हासिल करने का प्रयास करता रहा है। राष्ट्रीय आवास बैंक के मुख्य सतर्कता अधिकारी ने इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक संगठन को तीन मूल तत्वों पारदर्शिता, प्रकटीकरण एवं अच्छे कॉरपोरेट अभिशासन परंपराओं को और बढ़ाना चाहिये।

आयोजन के दौरान, प्रबंध निदेशक द्वारा भारत पर्यावास केंद्र, लोधी रोड, नई दिल्ली में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के विषय को प्रदर्शित करने वाले एक कियोस्क तथा एक फोटो प्वाइंट का उद्घाटन किया गया। लोकहित प्रकटीकरण और मुखबिर संरक्षण संकल्प, 2004 (पीआईडीपीआई) के बारे में आम जनता को जागरूक करने के लिए राष्ट्रीय आवास बैंक के सभी कार्यालयों में इस विषय से संबंधित बैनर प्रदर्शित किए गए।

बैंक ने सतर्कता पर जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य के साथ इस आयोजन में सहभागिता सुनिश्चित करने के लिये बैंक के अधिकारियों एवं उनके परिवारजनों हेतु ड्राइंग/पेंटिंग, स्लोगन लेखन तथा निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया।



राष्ट्रीय आवास बैंक के अधिकारियों द्वारा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी के नेतृत्व में ली गई सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2021 के अवसर पर कियोस्क का उद्घाटन



आवास भारती

● आवास वित्त कंपनियों के प्रबंध निदेशक/मुख्य कार्यपालक अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम

राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा 26 अक्टूबर से 1 नवंबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह का विषय 'Independent India @75: Self Reliance with Integrity' / 'स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता' है।

राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा 27 अक्टूबर, 2021 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह की पूर्व संध्या पर आवास वित्त कंपनियों के प्रधान अधिकारीगण (मुख्य कार्यपालक अधिकारी/प्रबंध निदेशक/अनुपालन अधिकारियों) के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

श्री एस. के. होता प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय आवास बैंक ने सत्र के दौरान नैतिक परंपराओं एवं सुगठित अभिशासन पर विशेष ध्यान देने के साथ पारदर्शिता पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा आवास वित्त कंपनियों के लिए स्केल आधारित नियामक ढांचे की शुरुआत के साथ, नीतियों में बदलाव की दिशा में क्रमिक कदम उठाए जा रहे हैं जो सुगठित कॉरपोरेट अभिशासन कार्यप्रणाली को विकसित करेगा।

श्री वी. के. त्यागी, मुख्य सतर्कता अधिकारी, राष्ट्रीय आवास बैंक ने आवास वित्त कंपनियों को राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा दिए गए समर्थन की सराहना की और पिछले तीन वर्षों में सामने आई चुनौतियों के बावजूद आवास वित्त कंपनियों के प्रदर्शन की सराहना की। उन्होंने आवास वित्तीय प्रणाली में अनुपालन की परंपरा को फैलाने पर जोर दिया। उन्होंने आस्ति गुणवत्ता में सुधार तथा आवास वित्त क्षेत्र को मजबूत करने हेतु पूर्व चेतावनी संकेतकों का पता लगाने के लिए आवास वित्त कंपनियों में डिजिटलीकरण को लागू करने का आह्वान किया।



आवास वित्त कंपनियों के प्रबंध निदेशक/मुख्य कार्यपालक अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम

आवास वित्त कंपनियों द्वारा आवास वित्त प्रणाली में नैतिक संहिताओं एवं कार्यप्रणाली के प्रभावी कार्यान्वयन के आश्वासन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

● क्षेत्रीय कार्यालय/क्षेत्रीय प्रतिनिधि कार्यालयों में सतर्कता जागरूकता सप्ताह प्रतियोगिताएं

सतर्कता जागरूकता सप्ताह में क्षेत्रीय कार्यालय/क्षेत्रीय प्रतिनिधि कार्यालय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय आवास बैंक बेंगलुरु क्षेत्रीय कार्यालय ने साई कृष्णा विद्या मंदिर के आठवीं, नौवीं और दसवीं कक्षा के बच्चों के लिए दिनांक 29-10-2021 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह (वीएडब्ल्यू) "स्वतंत्र भारत@ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता" विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की।



साई कृष्णा विद्या मंदिर के विद्यार्थियों के साथ चित्रकला प्रतियोगिता



चित्रकला प्रतियोगिता – बेंगलुरु क्षेत्रीय प्रतिनिधि कार्यालय



आवास भारती

- **भोपाल क्षेत्रीय प्रतिनिधि कार्यालय** ने दिनांक 26 अक्टूबर 2021 को गवर्नमेंट सुभाष हायर सेकेंडरी स्कूल फॉर एक्सीलेंस, शिवाजी नगर के छात्रों के लिए “स्वतंत्र भारत@ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता” विषय के तहत निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की।

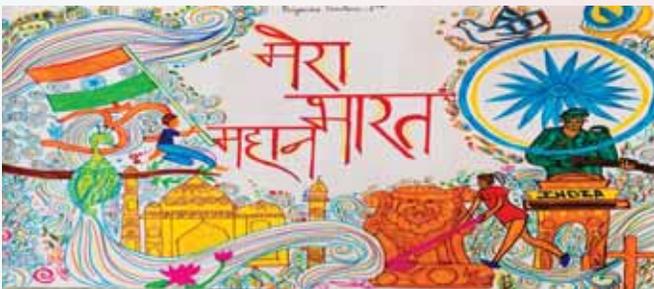


गवर्नमेंट सुभाष हायर सेकेंडरी स्कूल फॉर एक्सीलेंस के छात्र



पुरस्कार वितरण

- राष्ट्रीय आवास बैंक, लखनऊ क्षेत्रीय प्रतिनिधि कार्यालय ने महामना मालवीय विद्या मंदिर, गोमतीनगर लखनऊ के छात्रों के लिए “स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता” विषय के तहत चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की।



महामना मालवीय विद्या मंदिर के छात्र द्वारा की गई चित्रकला



- II. भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा आत्मनिर्भर भारत के आह्वान के साथ भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में “आजादी का अमृत महोत्सव” का शुभारंभ किया गया है। इस संबंध में राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा कई विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया एवं कई विशेष कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी दर्ज की है जिसका विवरण निम्नानुसार है:

- **राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा लखनऊ में ‘आजादी का अमृत महोत्सव प्रदर्शनी (एक्सपो) में ‘भारत में प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग एवं ऊर्जा दक्ष आवास वित्त (SUNREF INDIA)’ का संवर्धन**

लखनऊ, 07 अक्टूबर, 2021: केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा 05 से 07 अक्टूबर तक लखनऊ के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में ‘आजादी @75 – न्यू अर्बन इंडिया: ट्रांसफॉर्मिंग अर्बन लैंडस्केप’ शीर्षक नामक तीन दिवसीय प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन (एक्सपो-कम-कॉन्फ्रेंस) का आयोजन किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आत्मनिर्भर भारत के आह्वान के साथ भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में ‘आजादी का अमृत महोत्सव’ का शुभारंभ किया गया। माननीय रक्षा मंत्री, श्री राजनाथ सिंह जी, माननीय आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री, श्री हरदीप सिंह पुरी जी तथा माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, श्री योगी आदित्य नाथ जी अन्य गणमान्य व्यक्तियों में शामिल थे जिन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित होकर इसकी शोभा बढ़ाई।

राष्ट्रीय आवास बैंक ने प्रदर्शनी-सह-सम्मेलन में अपनी सहभागिता दर्ज की एवं इस अवसर का उपयोग सनरेफ भारत कार्यक्रम की विशेषताओं को प्रदर्शित करने तथा किफायती हरित आवास की अवधारणा को आवास संबंधी विकास का कार्य देखने वाले सरकारी संस्थानों, रियल एस्टेट विकासकों, प्राथमिक ऋणदाता संस्थानों तथा पूरे राज्य एवं देश से भाग लेने वाली आम जनता के बीच लोकप्रिय बनाने के लिये किया।

राष्ट्रीय आवास बैंक आवास हेतु देश में शीर्ष वित्तीय संस्थान है, जो फ्रांस विकास एजेंसी (एएफडी) एवं यूरोपीय संघ (ईयू) के सहयोग से सनरेफ इंडिया कार्यक्रम को कार्यान्वयित कर रहा है।

सनरेफ इंडिया कार्यक्रम, एएफडी से €100 मिलियन की ऋण व्यवस्था एवं यूरोपीय संघ से €12 मिलियन के अनुदान द्वारा समर्थित, बैंकों, आवास वित्त कंपनियों को हरित एवं किफायती आवास परियोजनाओं तथा उसमें निवेश करने



आवास भारती

की अनुज्ञा प्रदान करता है। यह कार्यक्रम पिछले 3 वर्षों से चल रहा है तथा इसके अंतर्गत लगभग 60% निधियां (लगभग €60 मिलियन) पहले ही संवितरित की जा चुकी है। इसका उद्देश्य देश के भीतर 4200 किफायती हरित आवास परिवारों के विकास हेतु निधियां प्रदान करना है।

सनरेफ इंडिया टीम द्वारा हरित आवास के लाभों जैसे पर्यावरणीय, आर्थिक एवं सामाजिक लाभ अर्थात पानी का कम उपभोग, कम ऊर्जा उपयोग, ग्रीनहाउस गैसों के कम उत्सर्जन आदि के साथ ज्ञान संपार्श्विक से लोगों को जागरूक किया तथा कौन सी तकनीक को अपनाकर एक सामान्य घर हरित घर बन सकता है, इस बारे में लोगों तक जानकारी पहुंचाई।

प्रदर्शनी में उपस्थित, वी. वैदीश्वरन, कार्यपालक निदेशक, राष्ट्रीय आवास बैंक ने कहा, "हम हरित आवास एवं इसके लाभों के संबंध में विभिन्न पणधारकों एवं विशेषतः आम जनता की उत्सुकता तथा रुचि को देखकर काफी प्रसन्न हैं। राष्ट्रीय आवास बैंक हरित पहल के साथ भारत सरकार के किफायती आवास एजेंडे को बढ़ावा देने हेतु कटिबद्ध है। सनरेफ इंडिया कार्यक्रम, यूरोपीय संघ (ईयू) एवं फ्रांस विकास एजेंसी (एएफडी) द्वारा समर्थित तथा बैंक द्वारा कार्यान्वित, देश में हरित किफायती आवास को बढ़ावा देता है।



● राष्ट्रीय आवास बैंक ने दिनांक 23 अक्टूबर, 2021 को आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर स्वच्छता अभियान का आयोजन किया

राष्ट्रीय आवास बैंक, नई दिल्ली ने दिनांक 23 अक्टूबर, 2021 को आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर जंगपुरा एक्सटेंशन, नई दिल्ली में एक स्वच्छता अभियान का आयोजन किया, जिसके तहत कई स्वच्छता गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एस.के. होता, प्रबंध निदेशक, श्री राहुल भावे, कार्यपालक निदेशक एवं श्री वी. वैदीश्वरन, कार्यपालक निदेशक सहित बैंक के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। स्वच्छता अभियान में बैंक के अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर प्रबंध निदेशक श्री होता ने अपने आस-पास स्वच्छतापूर्ण वातावरण बनाए रखने के महत्व के संबंध में बात की एवं प्रकृति के प्रति निर्वहन के लिए आह्वान किया।



दिनांक 23 अक्टूबर, 2021 को आयोजित स्वच्छता अभियान

● राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा भोपाल, मध्य प्रदेश में आयोजित लोकसंपर्क कार्यक्रम 'जनता से जुड़ना'

राष्ट्रीय आवास बैंक ने दिनांक 29 नवंबर, 2021 को भोपाल में "आजादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों में "जनता से जुड़ना" नामक लोकसंपर्क कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में श्री निकुंज श्रीवास्तव, आईएएस, आयुक्त, नगरीय प्रशासन एवं विकास, मध्य प्रदेश विशिष्ट अतिथि थे। श्री एस. के. होता, प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय आवास बैंक, श्री राहुल भावे, कार्यपालक निदेशक, राष्ट्रीय आवास बैंक, श्री एस.डी. महूरकर, फील्ड महाप्रबंधक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं एसएलबीसी संयोजक, मध्य प्रदेश तथा श्री सुधीर केसरवानी, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक एवं आधार हाउसिंग फाइनेंस कंपनी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री डी.एस. त्रिपाठी सहित वरिष्ठ गणमान्य अतिथियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इसके अतिरिक्त, इस कार्यक्रम में बैंकों, आवास वित्त



आवास भारती

कंपनियों (आ.वि.कं.), क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों आदि के 50 से अधिक अधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान भारत तथा मध्य प्रदेश में आवास एवं आवास वित्त पर फोकस करते हुए विचार-विमर्श हुआ।

विचार-विमर्श के दौरान, इस बात पर जोर दिया गया कि सभी हितधारकों जैसे बैंकों तथा आ.वि.कं. को परस्पर समन्वय के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सभी को औपचारिक आवास वित्त विशेष रूप से निचले तबके के लोगों के लिए सुलभ, किफायती एवं सुगमता से उपलब्ध हो। सभी हितधारकों और प्रतिभागियों ने भारत में आवास एवं आवास वित्त क्षेत्र में योगदान करने तथा भारत के सभी नागरिकों के लिए "सबके लिए आवास" के सपने को वास्तविकता में परिवर्तित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी।



● रा.आ.बैंक द्वारा प्रदान की गयी पुनर्वित्त में रियायतें

उत्तर-पूर्व और जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख पर विशेष फोकस

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर, रा.आ.बैंक ने विभिन्न श्रेणियों के उधारकर्ताओं को दिए गए वैयक्तिक आवास ऋण के पुनर्वित्त पर ब्याज दर रियायतों में वृद्धि की है। ग्रामीण आवास, हरित आवास, 10 लाख रुपये तक के छोटे आकार के आवास ऋण, महिलाओं एवं दिव्यांगों को दिए गए आवास ऋण पर फोकस करते हुए, रा.आ.बैंक ने बैंकों तथा आवास वित्त कंपनियों को अपनी पुनर्वित्त उधार दरों के तहत 25 आधार बिंदु रियायतें दी हैं। आकांक्षापूर्ण जिलों में सभी वैयक्तिक आवास ऋणों को भी पुनर्वित्त में 25 बीपीएस की रियायत प्रदान की जाएगी। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के उधारकर्ताओं को दिए गए आवास ऋण के संबंध में यह रियायत 30 बीपीएस है।

इसके अतिरिक्त, कम निवेश वाले क्षेत्रों में औपचारिक आवास ऋण के प्रवाह को बढ़ाने पर फोकस करने के लिए, उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा जम्मू और कश्मीर और लद्दाख के केंद्र शासित प्रदेशों में बैंकों/आ.वि.कं. द्वारा दिए गए आवास ऋण के एवज में पुनर्वित्त के संबंध में 25 बीपीएस की रियायत पुरःस्थापित की गई है।

ये बढ़ी हुई रियायतें दिनांक 1 अक्टूबर, 2021 से 30 सितंबर, 2022 की अवधि के दौरान रा.आ.बैंक द्वारा सभी नए पुनर्वित्त संवितरण हेतु उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा की जाने वाली इन विशेष पहलों के परिणामस्वरूप बैंकों/आवास वित्त कंपनियों द्वारा समाज के निचले तबके को तथा विशेष फोकस वाले क्षेत्रों में दिये जाने वाले ऋणों में वृद्धि होगी।

अधिक जानकारी रा.आ.बैंक की वेबसाइट www.nhb.org.in पर उपलब्ध है।

● राष्ट्रीय आवास बैंक का अहमदाबाद, गुजरात में लोकसंपर्क कार्यक्रम 'जनता से जुड़ना'

राष्ट्रीय आवास बैंक के अहमदाबाद क्षेत्रीय प्रतिनिधि कार्यालय ने दिनांक 14 दिसंबर, 2021 को अहमदाबाद में "आज़ादी का अमृत महोत्सव" के अंतर्गत आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों में 'जनता से जुड़ना' लोकसंपर्क कार्यक्रम का आयोजन किया।

श्री लोचन सेहरा, आईएएस, सचिव (आवास एवं निर्मल गुजरात), शहरी विकास



तथा शहरी आवास विभाग, गुजरात सरकार लोकसंपर्क कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। श्री वी. वैदीश्वरन, कार्यपालक निदेशक, राष्ट्रीय आवास बैंक, श्री विनीत सिंघल, महाप्रबंधक, राष्ट्रीय आवास बैंक, श्री अभिषेक कुमार सिन्हा, उप महाप्रबंधक, वित्तीय समावेशन एवं विकास, भारतीय रिजर्व बैंक, अहमदाबाद, श्री बलदेव पटेल, सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा (एसएलबीसी गुजरात) तथा श्री मनोज विश्वनाथन, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड सहित गणमान्य अधिकारियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। सहभागियों में बैंक, आ.वि.कं. आरआरबी एवं एसएलएनए के अधिकारी शामिल थे। लोकसंपर्क कार्यक्रम में बैंकों, आवास वित्त कंपनियों (आ.वि.कं), क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, लघु वित्त बैंकों, राज्य आवास नोडल एजेंसियों आदि के 80 से अधिक अधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान भारत तथा गुजरात में आवास एवं आवास वित्त में नई चुनौतियों एवं अवसरों पर फोकस करते हुए विचार-विमर्श हुआ। विचार-विमर्श के दौरान, इस बात पर जोर दिया गया कि सभी हितधारकों जैसे बैंकों तथा आ.वि.कं. को परस्पर समन्वय के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सभी को औपचारिक आवास वित्त विशेष रूप से निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के लोगों के लिए सुलभ, किफायती एवं सुगमता से उपलब्ध हो। सचिव, आवास, गुजरात सरकार ने सहभागियों के साथ विचार-विमर्श के दौरान भूमि प्रयोग संपरिवर्तन, मलिन-बस्ती पुनर्विकास एवं निम्न आय वर्ग के लिए किफायती आवास में त्वरित अनुमोदन सहित सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का उल्लेख किया है। सभी हितधारकों एवं सहभागियों ने भारत के सभी नागरिकों के लिए "सबके लिए आवास" के सपने को वास्तविकता में परिवर्तित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दर्शायी।



राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा 14 दिसंबर, 2021 को अहमदाबाद, गुजरात में आयोजित लोकसंपर्क कार्यक्रम 'जनता से जुड़ना' की कुछ झलकियाँ



III. अन्य विविध गतिविधियाँ

- सनरेफ इंडिया कार्यक्रम के तहत आयोजित हरित किफायती आवास पर प्रशिक्षण

राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा भोपाल में शहरी प्राधिकरण के अधिकारियों, ऋणदाताओं के लिये हरित आवास पर प्रशिक्षण

भोपाल, 22 अक्टूबर, 2021: राष्ट्रीय आवास बैंक जो कि आवास हेतु देश में शीर्ष वित्तीय संस्थान है, ने द्वारा भारत में प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग एवं ऊर्जा दक्ष आवास वित्त (सनरेफ) इंडिया कार्यक्रम के क्षमता निर्माण एवं लोगों को जागरूक करने की पहल के अंतर्गत 21-22 अक्टूबर को शहर में भोपाल विकास प्राधिकरण (बीडीए) के अधिकारियों तथा प्राथमिक ऋणदाता संस्थानों (पीएलआई) के प्रतिनिधियों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम को फ्रांस विकास एजेंसी से €100 मिलियन की ऋण व्यवस्था एवं यूरोपीय संघ से €12 मिलियन के अनुदान का समर्थन प्राप्त है। यह भारत में बैंकों एवं आवास वित्त कंपनियों को हरित तथा किफायती आवास परियोजनाओं हेतु ऋण देने और निवेश करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

प्रशिक्षण का पहला दिन बीडीए अधिकारियों के लिए था। दूसरे दिन प्रशिक्षण भोपाल स्थित अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों एवं आवास वित्त कंपनियों सहित पीएलआई की स्थानीय शाखा कार्यालयों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित किया गया था। सत्र में 50 से अधिक सहभागियों ने भाग लिया। राष्ट्रीय आवास बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय के सहयोग से प्रशिक्षण सत्र भोपाल में आयोजित किया गया था। क्षेत्रीय प्रतिनिधि कार्यालय प्रभारी श्री वैभव रामटेके, क्षेत्रीय प्रबंधक ने हरित आवास पर जोर दिया। कार्यक्रम में श्री सुभाष, क्षेत्रीय प्रबंधक, राष्ट्रीय आवास बैंक ने भी बैंक की 'गो ग्रीन पहल' पर विचार-विमर्श किया।



श्री बुद्धेश कुमार वैद्य, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, बीडीए, प्रशिक्षण कार्यक्रम के अतिथि वक्ता, ने हरित आवास, पर्यावरण एवं सामाजिक अनुपालन को एकीकृत करने तथा भवन निर्माण पद्धतियों में हरित तकनीकों को अपनाने के महत्व और लाभों पर प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण सत्र में तकनीकी अवधारणाओं को शामिल किया गया तथा अधिकारियों को उनकी निर्माण पद्धति में हरित तकनीकों को शामिल करने में सक्षम बनाने हेतु हरित किफायती आवास पर जागरूक किया गया। प्रशिक्षकों ने हरित भवन निर्माण में उपयोग की जाने वाली विभिन्न तकनीकों एवं सामग्रियों के बारे में विस्तार से बताया। सनरेफ कार्यक्रम के तहत पुनर्वित्त प्राप्त करने के लिए पीएलआई द्वारा आवेदन की पूरी प्रक्रिया प्रवाह को सविस्तार से बताया गया।

श्री कुशल पाल, प्रबंध निदेशक, सेंट बैंक होम फाइनेंस लि., पीएलआई प्रशिक्षण सत्र के अतिथि वक्ता, ने समाज के एक बड़े वर्ग को जागरूक करने के लिए हरित किफायती आवास को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने पर्यावरण, सामाजिक एवं अभिशासन (ईएसजी) कारकों के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

प्रशिक्षण के माध्यम से प्रवर्तकों, उपयोगकर्ताओं और अन्य हितधारकों के लिए विभिन्न आर्थिक एवं ईएसजी लाभों जैसे पानी की कम खपत, एवं ऊर्जा का



कम उपयोग तथा ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आदि के विषय में अवगत कराया गया।

● सनरेफ इंडिया हाउसिंग प्रोग्राम – क्षेत्रीय प्रचार कार्यक्रम

राष्ट्रीय आवास बैंक और फ्रांस विकास एजेंसी ने हरित किफायती आवास के लिए प्रतिस्पर्धी निधियन को बढ़ावा दिया

कोलकाता, 10 दिसंबर, 2021: भारत के शीर्ष आवास वित्त संस्थान, राष्ट्रीय आवास बैंक (रा.आ.बैंक), फ्रांस विकास एजेंसी (एएफडी), और यूरोपीय संघ (ईयू) ने आज 'सनरेफ इंडिया हाउसिंग प्रोग्राम' के माध्यम से हरित और किफायती आवास परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए संसाधनों के आबंटन के प्रति अपनी साझा प्रतिबद्धता दोहराई।

एएफडी से €100 मिलियन की ऋण व्यवस्था द्वारा समर्थित यह कार्यक्रम बैंकों, आवास वित्त कंपनियों (आ.वि.कं.) और घर खरीदारों को हरित तथा किफायती आवास परियोजनाओं एवं इससे संबद्ध निवेशों के निधियन हेतु सक्षम बनाता है।

इस पहल के एक भाग के रूप में, हरित किफायती आवास की महत्ता को उजागर करने के लिए कोलकाता में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बैंकों, आ.वि.कं., रियल एस्टेट डेवलपर्स, सरकारी एजेंसियों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ हरित-बिल्डिंग विशेषज्ञ, आर्किटेक्ट और हरित सामग्री उत्पादकों ने भाग लिया। राष्ट्रीय आवास बैंक और फ्रांस विकास एजेंसी के अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में हरित आवास के कई लाभों – पर्यावरण, आर्थिक और सामाजिक – को रेखांकित किया।

राष्ट्रीय आवास बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री राहुल भावे ने अपने संबोधन में कहा, 'सनरेफ इंडिया हाउसिंग प्रोग्राम के रियायती वित्त पोषण और हरित आवास की दिशा में अन्य क्षमता निर्माण की पहलों से आवास के क्षेत्र में पर्यावरण के अनुकूल रणनीतियों और प्रौद्योगिकियों के उपयोग में वृद्धि आएगी। इसके अतिरिक्त, यूरोपीय संघ से €12 मिलियन का अनुदान प्राप्त हुआ है, जिसमें भारत में कार्यक्रम के प्रचार के लिए €3 मिलियन का तकनीकी सहायता अनुदान एवं परियोजना विकासकों द्वारा ग्रीन लेबल प्रमाणन पर होने वाले व्यय का समर्थन करने के लिए €1 मिलियन शामिल है।'

सनरेफ इंडिया हाउसिंग प्रोग्राम पेरिस समझौते के तहत भारत की प्रतिबद्धता, विकासशील देशों में COP26 के दौरान बनी सर्वसम्मति से जलवायु परिवर्तन



आवास भारती

का समाधान करने के लिए और कम कार्बन-उत्सर्जन मार्ग की दिशा में काम करने के लिए यूरोपीय संघ की वैश्विक प्राथमिकताओं के अनुरूप है।

इस संदर्भ में, किफायती हरित आवास एक स्तर जोड़ता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि भवन अपने पूरे जीवन चक्र में पर्यावरण के अनुकूल और संसाधन-कुशल बने रहें। वास्तव में, आवास क्षेत्र में कृषि, ऊर्जा और परिवहन जैसे अन्य प्रमुख उत्सर्जक क्षेत्रों की तुलना में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी लाने की अपार संभावनाएं हैं।

एलीसी पोर्नेट, प्रमुख – ऊर्जा और जलवायु वित्त, एएफडी, ने कहा कि 'निर्माण क्षेत्र ऊर्जा का एक प्रमुख उपभोक्ता है, एवं इसका जलवायु परिवर्तन सहित पर्यावरण पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लेकिन भारत में केवल 1 प्रतिशत ईमारतें ही हरित बिल्डिंग मानदंडों के अनुरूप हैं। अतः हरित दृष्टिकोण

के एकीकरण के साथ, नए विकास कार्यक्रमों को एक अलग दृष्टिकोण से आरम्भ करने की बहुत बड़ी संभावना है।

रिकॉर्ड के लिए, वर्ष 2025 तक, सनरेफ इंडिया हाउसिंग प्रोग्राम से 4,200 परिवारों को लाभ होगा, जिनमें से कम से कम आधे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से होंगे।

श्री विशाल गोयल, महाप्रबंधक, राष्ट्रीय आवास बैंक ने कहा कि कोलकाता में इस कार्यक्रम का आयोजन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि शहर में पिछले कुछ वर्षों में ग्रीन-रेटेड आवासीय भवनों में तेजी से वृद्धि हुई है।

श्री विक्रम देवा, सहायक महाप्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राष्ट्रीय आवास बैंक में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह की झलकियाँ





हरित किफायती आवास

— अशोक कुमार , उप महाप्रबंधक

आवास क्षेत्र भारतीय निर्माण क्षेत्र में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है। विशाल जनसंख्या आधार, आय का बढ़ता स्तर और तेजी से शहरीकरण के कारण इस क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हो रही है। हालांकि, तीव्र शहरीकरण विभिन्न चुनौतियों को भी जन्म दे रहा है, जिसमें भीड़भाड़; ऊर्जा, पानी, जैसी बुनियादी सुविधाओं पर बढ़ता दबाव, प्राकृतिक संसाधनों की कमी; और सबसे महत्वपूर्ण बात, समाज के निचले तबके में रहने वाले लोगों के लिए किफायती आवासों की अनुपलब्धता, शामिल है।

यह अनुमान किया जा रहा है कि वर्तमान दर के अनुसार वर्ष 2050 तक आवासीय बिजली की मांग में 8 गुना वृद्धि हो जाएगी। अतः ऐसे घरों का विकास और निर्माण आवश्यक है जो न केवल प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कम या सन्तुलित तरीके से करें बल्कि उनका पुनर्चक्रण हो सकता हो। उदाहरणस्वरूप उसमें दिन के समय प्राकृतिक रोशनी की सुविधा हो ताकि दिन के समय रोशनी के लिये बिजली का उपयोग न करना पड़े।

इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2001 के ऊर्जा संरक्षण कानून के



अन्तर्गत देश के भवनों के लिये ऊर्जा संरक्षण कोड (ईसीबीसी) विकसित किये गए। हाल ही में ईसीबीसी में समयानुकूल संशोधन किये गए हैं ताकि पर्यावरण अनुकूल घरों को बढ़ावा दिया जा सके।

आज हम पर्यावरण अनुकूल घरों के बारे में चर्चा करेंगे। ये घर जलवायु परिवर्तन की रफ्तार को नियंत्रित करने में भी सहायता प्रदान कर सकते हैं। जैसा हम सभी जानते हैं कि सम्पूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को महसूस कर रहा है, जिसका मुख्य कारक कार्बन डाइऑक्साइड है जो लगभग 55 प्रतिशत वैश्विक तापन के लिये जिम्मेदार है और निर्माण, अन्य उद्योगों के साथ 40 प्रतिशत मानव-निर्मित कार्बन उत्सर्जन के लिये जिम्मेदार है, अतः सरकारें और व्यक्ति दोनों पर्यावरण के अनुकूल घरों के निर्माण का कार्य अधिक गम्भीरता से ले रहे हैं।

भारत में सरकारी नीतियों और निजी निवेश में आवास को सर्वोपरि महत्व दिया गया है। बढ़ती आवास मांग को समान रूप से पूरा करने के लिए सरकार कई प्रयास कर रही है। ऐसी ही एक पहल है सबके लिए आवास मिशन, जिसका लक्ष्य वर्ष 2022 तक सभी को आवास उपलब्ध कराना है। प्रधानमंत्री आवास योजना – शहरी (पीएमएवाई-यू), सबके लिए आवास मिशन के तहत एक योजना है और इसे आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय (एमओएचयूए) द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। यह योजना 25 जून 2015 को शुरू की गई थी, इस योजना का उद्देश्य सभी पात्र शहरी परिवारों को पक्का घर उपलब्ध कराकर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस), निम्न आय समूह (एलआईजी) और मध्यम आय समूह (एमआईजी) घरेलू श्रेणियों सहित मलिन बस्ती वासियों के बीच शहरी आवास की कमी को दूर करना है।

आवास एक ऊर्जा और संसाधन-गहन क्षेत्र है और इसमें अन्य प्रमुख क्षेत्रों की तुलना में ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन को काफी कम करने की अपार संभावनाएं हैं। किफायती आवास क्षेत्र में हरित पहल को अपनाना एक गेम चेंजर हो सकता है क्योंकि यह आवास की कमी को पूरा करने के लिए कार्रवाई का एक वैकल्पिक मार्ग खोलेगा। यह पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए स्थायी रणनीतियों, पर्यावरण के अनुकूल उपायों और सर्वोत्तम कार्यविधियों को व्यवस्थित रूप से शामिल करने में भी मदद करेगा। इसके अलावा, यह पेरिस समझौते और सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के तहत देश के कार्बन कटौती लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। वर्तमान में, हरित आवासीय क्षेत्र देश के कुल शहरी आवासीय क्षेत्र का लगभग 1% है और मुख्य रूप से मध्यम और उच्च आय वाले लोगों की आवासीय मांग को पूरा करता है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि ईडब्ल्यूएस और एलआईजी के लिए बड़े पैमाने पर



आवास भारती

बनाई जा रही आवास इकाईयाँ हरित और टिकाऊ हों। आवासीय क्षेत्र का ऊर्जा उपयोग आने वाले वर्षों में बढ़ने की उम्मीद है क्योंकि पहले की तुलना में अधिक लोग के पास बिजली तक पहुंच है और रोशनी और एयर कंडीशनिंग से जुड़े बिजली के उपकरण भी उन्नत हुए हैं।



पर्यावरण के प्रति लोगों में बढ़ती जागरूकता के कारण पर्यावरण अनुकूल घरों की माँग पिछले कुछ वर्षों में लगातार बढ़ती रही है, माँग बढ़ने के कारण इस क्षेत्र में नई तकनीकों का विकास भी किया जा रहा है साथ ही पहले से उपलब्ध तकनीकों में भी सुधार हो रहा है। इन तकनीकों में पवन टरबाइन से, सौर पैनलों तक, उच्च दक्षता प्रकाश व्यवस्था, अति कुशल इन्सुलेशन, ग्लेजिंग, जल संरक्षण, रीसाइक्लिंग और बहुत कुछ शामिल हैं।

हरित भवन क्या है?

वर्ल्ड ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल की परिभाषा कहती है, "एक 'हरित' भवन एक ऐसी ईमारत है, जो अपने डिजाइन, निर्माण या संचालन में, नकारात्मक प्रभावों को कम करती है या समाप्त करती है, और हमारे जलवायु और प्राकृतिक पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पैदा कर सकती है। हरित भवन बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करता है और हमारे जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है।"

ग्रीन घरों में अपशिष्ट घटाना, रीसाइक्लिंग, स्थानीय और नवीकरणीय सामग्री का उपयोग, अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग और आवास के बेहतर तरीके के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करना। एक ग्रीन हाउस का मुख्य पर्यावरणीय विशेषता पीवीसी मुक्तता है पीवीसी, या विनाइल, निर्माण में प्रयुक्त सबसे आम और सबसे हानिकारक सामग्री में से एक है। ये रसायन हवा, पानी और खाद्य पदार्थों में मिल सकते हैं, जिससे कैंसर, प्रतिरक्षा प्रणाली की क्षति और हार्मोन के व्यवधान जैसे गम्भीर स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।

किसी भी हरित आवास की एक प्रमुख विशेषता कम ऊर्जा का उपयोग है। वास्तव में, हरित आवास सामान्य घरों से 20 प्रतिशत कम ऊर्जा का उपयोग करते हैं। जल संरक्षण और रीसाइक्लिंग सिद्धान्तों को घर के निर्माण और इसके दैनिक कार्यों के लिये लागू किया गया है। किसी भी पर्यावरण अनुकूल घर की एक प्रमुख विशेषता कम ऊर्जा का उपयोग है। वास्तव में, हरित आवास सामान्य घरों से 20 प्रतिशत कम ऊर्जा का उपयोग करते हैं। जल संरक्षण और रीसाइक्लिंग सिद्धान्तों को घर के निर्माण और इसके दैनिक कार्यों के लिये लागू किया गया है।

हरित भवन निर्माण रेटिंग प्रणाली: रेटिंग प्रणाली का व्यापक उद्देश्य डेवलपर्स और मकान खरीदारों को बिना किसी अतिरिक्त लागत के उच्च स्तर का टिकाऊपन सुनिश्चित करना है। इसलिए, दृष्टिकोण यह है कि ऐसे हरित उपायों को चुनिंदा रूप से अपनाया जाए जो सरल हैं और फिर भी पर्यावरण के संरक्षण पर गहरा प्रभाव डालते हैं। परियोजनाओं को मूल्यांकित और प्रमाणित करने के लिए कई हरित भवन निर्माण लेबल उपलब्ध हैं।

- एकीकृत आवास मूल्यांकन के लिए हरित रेटिंग (गृह)
- भारतीय हरित भवन परिषद् (आईजीबीसी)
- बेहतर दक्षता के लिए डिजाइन में उत्कृष्टता (ऐज)
- जेईएम सरस्टेनेबिलिटी (हरित) प्रमाणन कार्यक्रम
- लीडरशिप इन एनर्जी एंड एनवायरनमेंटल डिजाइन (एलईईडी)
- ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई)



पीएलआई द्वारा कुछ हरित कार्य प्रणालियाँ और उत्पाद

हरित आवास वित्त बाजार भारत में अपने विकास के शुरुआती चरण में है। बैंक



आवास भारती

और आवास वित्त कंपनियों हरित आवास को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए उत्पाद विकसित करने की प्रक्रिया में हैं। इसमें हरित किफायती आवास खंड को उधार देने के लिए प्रोत्साहन विकसित करना शामिल है। हरित भवनों की उच्च निर्माण लागत को देखते हुए परियोजना वित्त दरों पर छूट प्रदान करने की आवश्यकता है। किफायती आवास परियोजना के लिए उधार दर ऋण की साख और अवधि पर निर्भर करती है। किफायती आवास के लिए हरित आवास निर्माण कार्यविधियों को अपनाने से ऊर्जा संसाधनों और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव में काफी कमी आएगी। इससे निर्मित भवनों की परिचालन लागतों में बचत होगी। पर्यावरण पर अधिक सकारात्मक प्रभाव पैदा करने के लिए, विशेष रूप से बड़े शहरों में इमारतों की योजना बनाते समय सतत ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने प्रतिकूल जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में योगदान देने के उद्देश्य से एक हरित बैंकिंग नीति अपनाई है। नीति के उपायों में से एक है ऐसे घर खरीदने वाले उधारकर्ताओं को प्रोत्साहन प्रदान करना जो हरित परियोजनाओं, यानी ऐसी परियोजनाएं जो कार्बन उत्सर्जन को कम करती हैं और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देती हैं, हालांकि, पूछिए तो, इसकी विशेषताएं अन्य आवास ऋण उत्पादों से बहुत अधिक भिन्न नहीं हैं, सिवाय इसके कि यह मार्जिन में 5% रियायत, ब्याज दर में 0.25% रियायत और प्रसंस्करण शुल्क की छूट प्रदान करता है।

साउथ इंडियन बैंक (एसआईबी) की हरित ऋण योजना रियायती ब्याज दरों पर दी जाने वाली एक वित्तीय योजना है। इसका उद्देश्य ऊर्जा दक्ष परियोजनाओं में निवेश को सहायता प्रदान करना है। इसका उद्देश्य घर-खरीदारों को उन भवनों का चयन करने के लिए प्रोत्साहित करना है जो हरित रेटिंग एजेंसियों जैसे लीडरशिप इन एनर्जी एंड एनवायरनमेंटल डिजाइन (एलईडी) इंडिया और भारतीय हरित भवन परिषद् (आईजीबीसी) द्वारा प्रमाणित हैं।

अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (आईएफसी) ने आवास फाइनेंसर्स लिमिटेड में 1.30 बिलियन (+ 20 मिलियन) का निवेश किया है। इस गठजोड़ से राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और दिल्ली/एनसीआर के ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में कम आय वाले उन उपभोक्ताओं को आवास ऋण उपलब्ध होने की उम्मीद है जिनके पास बंधक ऋण की पहुंच बहुत कम या बिल्कुल नहीं है।

भारत में हरित भवन

भारत में हरित भवन का बाजार वर्तमान में विकास के प्रारंभिक चरण में है, जिसमें

केवल 5% भवनों को हरे रंग के रूप में वर्गीकृत किया गया है। भारतीय हरित भवनों का बाजार 2022 तक लगभग 10 बिलियन वर्ग फुट तक पहुंचने की उम्मीद है, जिसका मूल्य 35 बिलियन अमरीकी डालर से 50 बिलियन अमरीकी डालर के बीच है। भारतीय हरित भवन परिषद् के अनुसार, भारत ने 7.17 बिलियन वर्ग फुट



‘हरित भवन फुटप्रिंट’ हासिल किया है। देश में लगभग 6,000 हरित परियोजनाएं और 5.77 लाख एकड़ से अधिक बड़ी विकास परियोजनाओं पर काम चल रहा है। एक सर्वे के अनुसार, महाराष्ट्र भारत में हरित भवनों में पहले स्थान पर है, इसके बाद कर्नाटक, हरियाणा, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश का स्थान है। हरित भवनों और उनके दीर्घकालिक लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ने से निश्चित रूप से हरित भवन निर्माण को बढ़ावा मिलेगा। कोविड-19 महामारी ने लोगों को स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया है और घर के मालिक तेजी से उन इमारतों में रहना पसंद कर रहे हैं जिनमें बेहतर वेंटिलेशन सिस्टम, पर्याप्त दिन के उजाले और ताजा पानी हो। पेरिस जलवायु समझौते के तहत, भारत 2030 तक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 35 प्रतिशत और कार्बन को लगभग तीन बिलियन टन कम करने के लिए काम कर रहा है। भारत में ‘सबके लिए आवास’ योजना किफायती और हरित आवास को आत्मसात करने का अवसर प्रदान कर सकता है और इस प्रकार, भारत के आवासीय बाजार में एक स्थायी परिवर्तन पैदा कर सकता है। हरित भवनों को बढ़ाने के लिए, भारत को मानकों के मानकीकरण, आकर्षक प्रोत्साहन योजनाओं और हरित भवनों के निर्माण के लिए पर्याप्त कुशल और जानकार जनशक्ति की आवश्यकता है।



होम लोन स्विच करते समय क्या ध्यान रखें

— आशीष जैन, क्षेत्रीय प्रबंधक



आमतौर पर लोग पहले घर खरीदने का मन बनाते ही एक घर या प्लैट देखने लगते हैं। काफी खोजबीन के बाद जब पसंद आता है तब धन की व्यवस्था करते हैं। सबसे पहले यह देखते हैं कि अपने पास एवं संबंधियों से कितना मिल सकता है। इसके बाद बैंक ऋण लेने के बारे में सोचते हैं। कई बार तो ब्रोकर या दलाल अथवा बिल्डर ही अपनी डीलिंग वाले बैंकों से लोन दिलाने की बात करते हैं। खरीददार बिल्डर के समझाने के कारण ऋण बाजार में दूसरे बैंकों पर नहीं जाता, क्योंकि उसकी भागदौड़ बच जाती है और वैसे भी हमारे देश में बैंकिंग व्यवस्था बहुत पुरानी एवं रूढ़िवादी है। यहां बैंकों में नए ग्राहक का बहुत स्वागत नहीं किया जाता। प्रायः रुखी-सूखी भाषा में आव-भगत होती है तरह-तरह के दस्तावेज मांगे जाते हैं। बैंक के ही कुछ लोग उन्हें दलालों के माध्यम से आने की सलाह देते हैं, जहां उनकी फीस अलग से देनी होती है। इन्हीं सब बातों के कारण लोग दलाल या बिल्डर द्वारा सुझाए गए बैंक से ऋण लेने को तैयार हो जाते हैं फिर, चाहे वह बाजार दर से एक से दो प्रतिशत महंगा ही क्यों न मिल रहा हो।

जब एक बार घर खरीद की प्रक्रिया पूरी हो जाती है और उन्हें पता चलता है कि वे अब बैंक बदल कर कम ब्याज का विकल्प चुन सकते हैं तो वह ऐसा करने को तैयार हो जाते हैं। बहुत सारे बैंक होम लोन स्विच करने वाले ग्राहकों का दौड़कर स्वागत करते हैं क्योंकि ऐसे ऋणी को लोन देने में कम जोखिम होता है। पहले ऋण देने वाले बैंक ने सारी औपचारिकताओं एवं दस्तावेजों की प्रक्रिया पूरी कर



चुका होता है अतः इस बैंक को इस भागदौड़ से छुटकारा मिल जाता है। यही कारण है कि घर खरीदने के बाद लोग होम लोन की कम ब्याज दर वाले उस बैंक की तलाश शुरू कर देते हैं जो कम दर पर लोन देने की पेशकश कर रहा

हो। अब वे अपना लोन दूसरे बैंक में स्विच करने की संभावनाओं पर विचार करने लगते हैं। लेकिन क्या कम ब्याज दरों पर लोन स्विच करना वास्तव में फायदेमंद



होता है? इसमें ऐसे कारक अहम भूमिका निभाते हैं। लंबी अवधि में यह विकल्प लोन की लागत भी बढ़ा सकता है और नहीं भी। यदि आप अपने लोन को स्विच कराने के बारे में सोच रहे हैं तो लंबी अवधि के मद्देनजर सभी पहलुओं पर गौर कर लें। इसमें नीचे दी गई जानकारी उपयोगी हो सकती है।

देखें कितनी आएगी लागत : दूसरे बैंक में लोन स्विच कराने पर आपको एक बार फिर लोन प्रोसेसिंग फीस देनी होगी। प्रीपेमेंट चार्ज भी सिर्फ फ्लोटिंग दर पर लोन लेने वालों के लिए खत्म किया गया है। फिक्स्ड दर पर लोन लेने वालों को प्रीपेमेंट फीस देनी पड़ सकती है। कई बार कुछ बैंक ऐसा विशेष अभियान चलाते हैं, जिस दौरान ऐसी स्कीमों में छूट आदि दी जा रही होती है। ऐसे मौकों का फायदा उठाना चाहिए।

नए बैंक की ब्याज दर बढ़ने की संभावना पर गौर करें : मौजूदा बैंक के ब्याज दर बढ़ाने के तुरंत बाद लोन दूसरे बैंक में स्विच नहीं करना चाहिए। हो सकता है दूसरा बैंक भी मौजूदा बैंक का अनुसरण करते हुए अपनी ब्याज दरें बढ़ा दे। ऐसे में दूसरे बैंक की ब्याज दर मौजूदा बैंक की ब्याज दर से अधिक हो सकती है। विभिन्न बैंकों की ब्याज दरों का रुझान समझने के लिए आप फाइनेंशियल वेबसाइट्स की मदद ले सकते हैं।

दूसरे बैंक की मंजूरी भी जरूरी : यदि ऊपर बताई गई बातें स्पष्ट कर लेने के बाद आप लोन स्विच कराना चाहते हैं तो दूसरे बैंक को भी आपकी होम लोन रिफाइनंस का आवेदन स्वीकार करना होगा। कुछ कारण हैं जिनकी वजह से वह



आवास भारती

बैंक एप्लीकेशन खारिज कर सकता है:

- यदि प्रॉपर्टी अंडर कंस्ट्रक्शन हो और प्रोजेक्ट बैंक से अप्रूव न हो।
- यदि आपने मौजूदा होम लोन की ईएमआई नियमित अदा न की हो।
- प्रॉपर्टी के कंस्ट्रक्शन में देरी हो रही हो। कब्जा प्राप्ति में देरी की संभावना हो।
- यदि लोन का बड़ा हिस्सा पहले ही अदा कर चुके हों और बैंक को आपको लोन देने में फायदा नहीं दिख रहा हो। क्योंकि अधिकांशतः बैंक अपने द्वारा दिए गए ऋण पर ब्याज पहले वसूलते हैं मूल बाद में। यदि अवधि निकल गई है, तब आप ब्याज का अधिकांश हिस्सा चुका चुके होते हैं अब आप मूल चुका रहे होते हैं।
- यदि लोन के कुल ब्याज का बड़ा हिस्सा पहले अदा कर चुके हों और सिर्फ मूलधन की राशि बकाया हो, तो लोन स्विच करने में आपको ज्यादा बचत नहीं होगी। ऐसे में संभावित बचत का तुलनात्मक विश्लेषण करें। इसके बाद आप मौजूदा बैंक के साथ बने रहने का विकल्प भी चुन सकते हैं।

होम लोन ट्रांसफर की प्रक्रिया : होम लोन ट्रांसफर कराने में काफी कागजी प्रक्रिया होती है। कई निजी बैंक या बैंक एजेंट इसके लिए आपसे सीधे संपर्क करते हैं। इसके बावजूद आपको बैंक के कई चक्कर भी लगाने पड़ सकते हैं। आमतौर पर लोन ट्रांसफर में यह प्रक्रिया होती है :

- मौजूदा बैंक आपको एक कंसेंट लैटर/एनओसी देता है। इसमें बकाया राशि पर उल्लेख होता है।
- यह कागजात आपको उस नए बैंक को देने होते हैं, जिसमें आप स्विच करना चाहते हैं।



- इन दस्तावेजों के आधार पर नया बैंक आपकी ऋण राशि (लोन अमाउंट) पुराने बैंक को मंजूर करता है और आपके नाम बकाये का भुगतान मिलने के बाद पुराना बैंक आपका लोन खाता बंद कर देता है।

- इसके बाद प्रॉपर्टी के दस्तावेज नए बैंक को ट्रांसफर होते हैं। इसके साथ पुराने बैंक को बची लोन की अदायगी रद्द हो जाती है, क्योंकि यह अदायगी अब नए बैंक में देय हो जाती है।



- हालांकि ज्यादातर बैंक प्लोटींग दर वाले होम लोन पर प्रीपेमेंट पेनल्टी नहीं लेते हैं, लेकिन फिक्सड दर वाले लोन पर यह अभी भी लागू है। यह प्रीपेमेंट फीस बकाया मूलधन के 2 से 5 फीसदी के बराबर हो सकती है। वहीं, बैंक यह चार्ज पेनल्टी के रूप में भी लेते हैं। कहीं-कहीं इसमें छूट भी मिलती है।
- होम लोन स्विच कराने में आपको सभी मंजूरी लेनी होगी। इसमें प्रॉपर्टी का लीगल वेरिफिकेशन, क्रेडिट एग्जल और नए बैंक के साथ टेक्निकल इवैल्यूएशन आदि शामिल हैं। अंत में होम लोन स्विच कराना उसी स्थिति में फायदेमंद होता है जब ऐसा लोन अवधि के शुरूआती वर्षों में किया जाए।

कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि घर खरीदने एवं कब्जा मिलने के साथ ही ऋण (लोन) लेने के बाद अगले दो से पांच सालों के भीतर ही दूसरे बैंक में लोन स्विच करने में फायदा होता है। लोन स्विच करना तब भी फायदेमंद होता है जब ऋण की राशि काफी बड़ी हो और लंबी अवधि के लिए लिया गया हो। जैसा कि पहले ही कहा जा चुका है कि अवधि के बीच में लोन स्विच करना उतना लाभकारी साबित नहीं होता जब तक कि ब्याज दर में भारी अंतर न हो। इसके साथ ही ऐसा करने से पहले सभी पहलुओं पर मौद्रिक लाभों पर भी विचार कर लेना चाहिए। वैसे आजकल होम लोन की प्रथा तेजी से बढ़ रही है और कई बैंक होम लोन स्विच करने वाले ग्राहकों को प्राथमिकता देना पसंद करते हैं। इससे उन्हें नए लोन की अपेक्षा कम भागदौड़ में अधिक बिजनेस मिल जाता है। इससे एक लाभ यह भी रहता है कि बैंक अपने ऋणों पर ब्याज दरें बढ़ाने के पहले कई बार सोचते हैं क्योंकि इससे उन्हें अपने ग्राहकों के द्वारा होम लोन स्विच करने का भय बना रहता है और कोई भी बैंक प्रायः नहीं चाहता कि उसके ग्राहकों/उपभोक्ताओं की संख्या में कमी आए।



सतर्क रहेंगे तभी तो समृद्धि मिलेगी

— रंजन कुमार बरून, उप महाप्रबंधक



आपने कई जगह लिखा देखा होगा और कई लोगों को कहते भी सुना होगा कि सावधानी हटी और दुर्घटना घटी। घर परिवार को लेकर तो हम इस बात को ध्यान में रखते हैं लेकिन जैसे ही बात देश या समाज की आती है तो यहां हम अलग तरह से बर्ताव करते नजर आते हैं। फिर चाहे ऑफिस में कोई काम कर रहे हों या फिर कभी किसी से काम करवाना हो। छोटी-छोटी अनदेखी का असर आज यह हुआ है कि इंसान के जन्म लेने से लेकर उसके मरने तक में भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है और हम इसके इतने अभ्यस्थ हो गए हैं कि हमें पता भी नहीं चलता कि हम क्या कर रहे हैं। मैं आंकड़ों के खेल में नहीं पड़ना चाहूंगा क्योंकि वहां तो हमारी स्थिति हमारे सारे प्रयासों के बाद भी नहीं सुधरी है।

आपने कभी सोचा है कि भारत में इतने संसाधन होने के बाद भी उस तेजी से आगे क्यों नहीं बढ़ पा रहा जिस गति से उसे बढ़ना चाहिए था। क्या कारण है कि आज भी हम विकास की वो गति नहीं पकड़ पा रहे जिसकी हमें जरूरत है। क्या कारण है कि आज भी किसी परियोजना को पूरा होने में दशकों लग जाते हैं। जिस पुल को कुछ लाख रूपए में बन जाना चाहिए वो करोड़ों खर्च करने पर भी तैयार नहीं हो पाते और अगर हो भी जाते हैं तो कुछ दिन के बाद ही ढह जाते हैं। क्यों लाखों-करोड़ों खर्च कर भी हमारी नदियां साफ नहीं हो पा रहीं और क्यों इतने सारे सरकारी और निजी प्रयासों के बाद भी आज भी हमारे कई गांवों और शहरों के बच्चों को सही शिक्षा नसीब नहीं हो रही। क्यों हम आज भी



24 घंटे बिजली, एक बेहतर सड़क और पीने के साफ पानी के लिए तरस रहे हैं। अगर हम ध्यान से देखें तो पाते हैं कि इसका एक बड़ा कारण है कि हम सतर्क नहीं हैं। अगर आपके घर के पास सड़क बन रही है तो वो ठीक से बन रही है

या नहीं इसे देखना हम अपना काम नहीं मानते। हम हर चीज के लिए भ्रष्टाचार को दोष तो दे देते हैं लेकिन क्या कभी हमने सोचा है कि यह इतना कैसे फैल गया। इन सबके के मूल में है हमारा सतर्क न होना। इसलिए अब भी समय है कि हम सतर्क हो जाएं और चीजों को सतर्कता से देखने का प्रयास करें।

हमें कहां-कहां सतर्क रहना है इस पर कुछ जानते हैं। जीवन के हर पहलू में सतर्क रहना बेहद जरूरी है। और यह केवल आम आदमी नहीं बल्कि हर तरह के लोगों के लिए जरूरी है। लेकिन हम बात करते हैं कि आम आदमी को किस तरह से सतर्क रहने की जरूरत है।

1. सरकारें कई तरह की योजना चलाती है। उसका सही तरीके से हम कैसे लाभ उठा सकते हैं इसको लेकर हमें सतर्क रहने की जरूरत है।
2. अगर आपको किसी चीज की जानकारी चाहिए तो बिचौलियों से उसकी जानकारी लेने से अच्छा है कि संबंधित विभाग या मंत्रालय के शिकायत निवारण तंत्र का उपयोग किया जाए। इससे आप दिग्भ्रमित होने से बच सकते हैं।
3. आज सरकारें ऑनलाइन लेनदेन पर बहुत जोर दे रही हैं लेकिन यहां भी हमें सतर्क रहने की जरूरत है। हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि सरकार द्वारा बताए गए विधि से ही ये लेन-देन करें।
4. यदि आप अपने लिए घर खरीदना चाहते हैं या किसी संपत्ति में निवेश करना चाहते हैं तो हमेशा इस बात को लेकर सतर्क रहें कि आवासीय परियोजना रेरा में पंजीकृत है या नहीं। अगर आपको थोड़ा भी संदेह हो तो तुरंत उस योजना के बारे में संबंधित विभाग से जानकारी प्राप्त करें।
5. किसी भी काम के लिए बिचौलियों के झांसे में न आएं। अगर आप शेयर बाजार में निवेश कर रहे हैं तो पहले बीएसई या एनएसई में वो कंपनी सूचीबद्ध है या नहीं इसका पता लगा लें।
6. यदि आप म्यूचुअल फंड में निवेश कर रहे हों तो हमेशा अधिकृत एजेंट से ही संपर्क करें और उससे भी पहले उस योजना के बारे में पूरी जानकारी हासिल करें।
7. आपके घर के आसपास यदि सड़क, नाले या बिजली आपूर्ति की व्यवस्था का काम चल रहा है तो इस बात पर ध्यान दें कि उच्च कोटि का कार्य हो रहा है या नहीं। और अगर आपको थोड़ी भी गडबड़ी लगे तो आपको तुरंत इसकी शिकायत करनी चाहिए।



आवास भारती

8. यहां तक कि जब हम कोई मेडिकल बीमा ले रहे हों, या फिर संपत्ति बीमा | हमें उन्हें लेने से पहले उसके बारे में पूरी जानकारी हासिल करनी चाहिए।

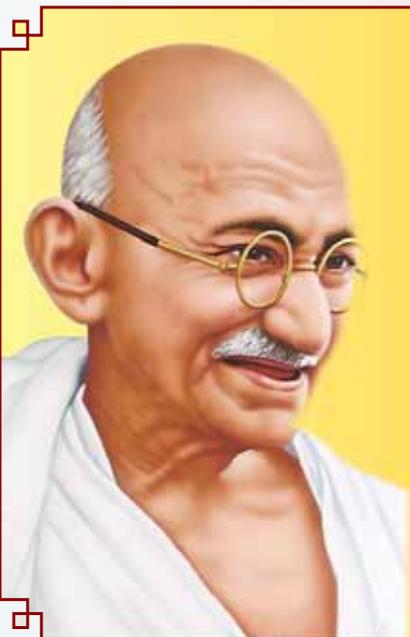


9. अगर आपके बच्चे पढ़ते हैं तो हमें यह जानकारी रखनी चाहिए कि सरकार की तरफ से उनको क्या सुविधाएं दी जा रही हैं और क्या स्कूल वो सुविधा आपके बच्चे को दे रहा है या नहीं।

10. यदि हम ऑनलाइन ट्राजेक्शन करते हैं या फिर किसी नई योजना, लाभ का फायदा उठाने के लिए ऑनलाइन आवेदन करते हैं तो पहले तो हमें यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि किसी थर्ड पार्टी पोर्टल से ये न करें जबतक कि वह उस कार्य के लिए सरकार द्वारा अधिकृत न हो। और इसका लाभ यह होगा कि जो भी फायदा है वो सीधे आप तक पहुंचेगा और वो भी कम से कम समय में।

11. यदि आप छात्र है तो किसी कोर्स में प्रवेश लेने से पहले उस संस्थान के बारे में पता कर लें और इसके लिए आप यूजीसी जैसे शैक्षणिक प्रशासकों की वेबसाइट पर जाकर इसका पता लगा सकते हैं। इससे जहां एक ओर आपको सही संस्थान का चुनाव करने का अवसर मिलेगा वहीं आप धोखाधड़ी का शिकार होने से भी बचेंगे।

जैसे ही हम सतर्क होंगे वैसे ही हम भ्रष्टाचार रूपी पेड़ को उगने से पहले उखाड़ फेंकेंगे। इसका फायदा यह होगा कि घोटाले, स्कैम, आदि के कारण होने वाली पैसे की बर्बादी समाप्त हो जाएगी और हम समय पर अपने कार्य पूरे कर पाएंगे और पैसे की बर्बादी पर भी लगाम लगेगी और इस तरह से हमारा भारत समृद्ध बना जाएगा। हमें अगर समृद्ध भारत का अपना सपना पूरा करना है तो हमें सतर्क रहना ही होगा। अगर आलसी बनकर आंख मूंदकर सोते रहेंगे तो कोई भी हमको हरा देगा। इसलिए जरूरत है कि सावधान रहें, सतर्क रहें ताकि इस बार कोई हमारे देश को लूट कर न जाने पाए।



“राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।”

— महात्मा गांधी



संतुलित आहार - स्वस्थ जीवन का आधार

— सुशांत कुमार पाटी, महाप्रबंधक



संतुलित भोजन और सुन्दरता : हर रोग का कारण खाद्य पदार्थ ही है और हम खाद्य पदार्थ खाए बिना रह भी नहीं सकते। खाद्य पदार्थ को हम किस प्रकार खाएं यह हम पर निर्भर करता है क्योंकि खाद्य पदार्थ ही हर रोग का इलाज भी है। जैसे दूध से बने मावे को अत्याधिक खाने से हम पेट के रोग से ग्रस्त हो जाते हैं लेकिन दूध से बने अन्य पदार्थ जैसे दही को खाने से पेट के रोग से मुक्त भी हो जाते हैं।

भोजन के मुख्य दो रूप हैं - पहला है पक्वाहार और दूसरा है अपक्वाहार। अपक्वाहार वह होता है जिसे बिना पकाए खाते हैं और पक्वाहार वह होता है जिसे पकाकर खाते हैं। अपक्वाहार में सभी चीजें आती हैं जैसे - अनाज, सलाद, अंकुरित भोजन आदि।

अपक्वाहार : अपक्वाहार शरीर को भरपूर एनर्जी देता है और नए सेल्स बनाता है। ऐसे भोजन का सेवन करने से शरीर में बहुत कम टॉक्सिन, वेस्टेज या गंदगी बनती है जिसे निकालने के लिए शरीर को कम एनर्जी लगानी पड़ती है। यह शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य भी देता है। अपक्वाहार पूर्ण संतुलित आहार है क्योंकि इससे जीवनपयोगी तत्व क्लोरोफिल एवं फाईबर प्राप्त होता है। इसमें विटामिन, खनिज, एंटी ऑक्सीडेंट्स, फाईटो न्यूट्रिएंट्स, एन्जाइम आदि पदार्थ, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही आवश्यक होते हैं और पाए जाते हैं। मानसिक काम करने वालों के लिए अपक्वाहार अपनाना बहुत जरूरी है क्योंकि यह आलस्य दूर करता है।

अपक्वाहार सख्त आर्गैस को लचीला बनाता है जिससे शरीर में उत्साह एवं मन में प्रसन्नता बनी रहती है। यह पाचन एवं निष्कासन क्रिया को सही रखता है, हार्मोनिक ग्रंथियों का विकास करता है, पसीने की बदबू तथा मुंह की गंदगी को दूर करता है और काम करने की क्षमता को बढ़ाता है। अपक्वाहार लेने से जिसका वजन कम होता है उसका वजन बढ़ जाता है और जिसका वजन अधिक होता है उसका वजन कम हो जाता है। गर्मियों में अधिक गर्मी एवं सर्दियों में अधिक सर्दी नहीं लगती।

पक्वाहार : जब हम खाने को पकाते हैं तो उसके प्राकृतिक गुण तो नष्ट हो ही जाते हैं और साथ ही उसे पचाने के लिए शरीर को बहुत एनर्जी लगानी पड़ती है। ऐसे भोजन से शरीर में वेस्टप्रोडक्ट बढ़ता है और उसे निकालने के लिए शरीर

को अधिक एनर्जी लगानी पड़ती है। उदाहरण - यदि आप हल्का भोजन खाते हैं तो उससे आलस्य और नशा आदि महसूस नहीं होता लेकिन जब आप गरिष्ठ भोजन करते हैं तो आपको नशा एवं आलस्य महसूस होता है। यह संकेत है कि



हमारे शरीर की एनर्जी डाईवर्ट होकर कम हो गयी है। इस तरह हम अपनी काफी एनर्जी वेस्ट करते हैं।

यदि हम केवल अपने आहार में सुधार कर लें तो सभी रोगों से मुक्ति पा सकते हैं। मान लिया किसी को हम दवा देते हैं लेकिन उसके आहार में सुधार नहीं करते तो चाहे कितनी भी दवा दे दें, उसे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। एकमात्र आहार में सुधार ही है जो हमें स्वस्थ रखने में पूरी तरह सक्षम है। आहार विज्ञान में लिखा है कि जिस आहार को बिना पकाए खाया ही नहीं जा सकता, वह आहार स्वास्थ्यप्रद नहीं रहता है।

सेहत के लिए भोजन : बहुत से लोग सोचते हैं कि जितना ज्यादा खाएंगे, शरीर में उतनी ही ज्यादा ताकत आएगी लेकिन यह सोच गलत है। इसके लिए अपने ऊपर एक प्रयोग करके देखें - आज रोजाना जितनी मात्रा में भोजन करते हैं, एक-दो दिन तक उसकी मात्रा में थोड़ी कमी कर दें। इसके बाद आप देखेंगे कि आपने पिछले दो दिन तक जितना भोजन किया है, तीसरे दिन उतने ही भोजन में आपका पेट भर गया और शरीर में भी उतनी ही फुर्ती एवं एनर्जी बनी रही। ऐसा इसलिए होता है, कि हम जितना अधिक खाते हैं उसे निकालने के लिए शरीर को उतनी ही एनर्जी लगानी पड़ती है और शरीर में एनर्जी कम होने से आलस्य आना तो स्वाभाविक है ही। इसलिए हम जितना कम खाएंगे शरीर को उसकी आदत लग जाएगी और उतनी ही एनर्जी शरीर में बनी रहेगी।

स्वाद - हम कहते हैं कि स्वाद किस चीज में है, कोई किसी में स्वाद बताता है,



आवास भारती

कोई किसी में स्वाद बताता है। क्या कोई बता सकता है कि सबसे ज्यादा स्वाद किस में है? सबसे ज्यादा स्वाद भूख में है। जिस समय भूख लगी हो और कुछ नहीं मिल रहा हो तो उस समय जो भी मिले, उसी में स्वाद होता है।

जब कभी भी आलस्य घेरें तो सलाद खाएं क्योंकि यह पोषणदायक होता है और पेट के लिए हल्का एवं स्वास्थ्यवर्धक रहता है। नियमित व्यायाम, सुगंधित स्नान और सही रूप में आराम करने से गर्मियों के मौसम में भी ठंडक पाई जा सकती है। अच्छा होगा कि वॉक या व्यायाम के लिए हरे-भरे मैदानों का ही चयन किया जाए। हरा रंग अपनी प्रकृति के अनुरूप आंखों को राहत देता है। यह भी बहुत जरूरी है कि व्यक्ति कम से कम एक घंटा प्रतिदिन स्वयं को दे अर्थात चिंता, तनाव, निर्णय से मस्तिष्क को दूर रखें।

गर्मी के मौसम में अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी है कि खुले स्थान पर पूरी नींद ली जाए। जिस तरह सोने से पहले हाथ-मुंह धोएं जाते हैं, ठीक वैसे ही सोने से पहले दिमाग को भी अच्छे से साफ कर लें अर्थात बिस्तर पर जाते वक्त कोई विचार या बात ऐसी न हो जो तनाव या चिंता उत्पन्न करें।

जो आहार खाए जाने के बाद पानी की मांग करते हैं, वह शरीर के लिए रोगकारक होते हैं। अधिक भोजन करना सब तरह से अहितकारी होता है। सभी प्रकार के खाद्य-पदार्थों को उतनी ही मात्रा में खाने चाहिए कि पेट में न उस समय बोझ मालूम हो, न बाद में भारीपन की शिकायत पैदा हो। जिस भोजन को करने के बाद थोड़ी भी सुस्ती आए या पेट भारी लगे तो समझना चाहिए कि आप भोजन को नहीं बल्कि भोजन आपको खा रहा है। जिस भोजन को करने के बाद ताजगी और फुर्ती का आभास हो तो समझना चाहिए कि आप भोजन को खा रहे हैं।

भोजन न तो बहुत गर्म और न बहुत ठंडा खाना चाहिए। इस तरह के खाद्य-पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं तथा पाचन क्रिया पर दुष्प्रभाव डालते हैं। जो भोजन हम खाते हैं वह सीधा हमारे शरीर, मन और व्यवहार को प्रभावित करता है। रोग के 'कारण' हमारे शरीर के अंदर बल्कि हमारे रहन-सहन के गलत तरीकों में होते हैं। रोग पैदा करने वाले कीटाणु उसी स्थान पर पैदा होते हैं जहां टॉक्सिन, गंदगी जमा होती है। इसलिए रोग तब तक शरीर को प्रभावित नहीं कर सकता जब तक उसके कीटाणुओं को फलने-फूलने का आधार नहीं मिल जाता।

आधुनिक विज्ञान रोगों का स्तर बताता है लेकिन अच्छे स्वास्थ्य का स्तर नहीं। उत्सव, पिकनिक और पार्टियों में प्रयोग किए जाने वाले बनावटी पेय, तले और पके आहार, मिठाईयां, चाय, कॉफी और शराब जैसी वस्तुएं अपने और अपने प्रियजनों में रोगों की नींव डालते हैं। अगर किसी भी उत्सव को फल, रस,

प्राकृतिक मिठाईयों और सादे पके आहारों द्वारा मनाया जाए तो शरीर स्वस्थ रहने के साथ ही इसका मजा दुगना हो जाता है।

शिशु के लिए मां का दूध सर्वोत्तम माना जाता है, क्योंकि मां के दूध में नैसर्गिक रूप में पीला तरल पदार्थ कोलोस्ट्रम पाया जाता है जिसमें उच्चस्तरीय प्रोटीन, जिंक तथा लेक्टोफेरीन होता है। इससे कई प्रकार के रोग उदाहरणार्थ गलसुआ खसरा, पोलियो, बदहजमी आदि से बच्चे को छुटकारा मिलता है। मां का दूध बिना किसी मिलावट के तथा अपेक्षित तापमान पर हमेशा उपलब्ध रहता है। भावनात्मक रूप में भी इस दुग्धपान से मां और शिशु को तृप्ति मिलती है। अगर किसी कारण वश मां का दूध शिशु को उचित मात्रा में नहीं मिल रहा है, तो उस परिस्थिति में शिशु को आहार के रूप में भैंस, गाय और बकरी का दूध दिया जा सकता है।

शिशु के लिए माता का दूध ही सर्वोत्तम है। लेकिन किन्ही कारणों से, यदि किसी पशु का दूध पिलाने की विवशता ही हो तो उस दूध को शिशु के आहार के योग्य बनाकर ही पिलाना चाहिए। उस के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना जरूरी है—

1. **पानी मिलाकर दूध पतला करना** – दूध की प्रोटीन और खनिज लवण की प्रतिशत मात्रा कम करने के लिये दूध में पानी मिलाकर उसे पतला कर लेना चाहिए। विशेषज्ञों की राय में दूध में समान मात्रा में पानी मिलाना (1-2 माह तक) उपयुक्त रहता है। बाद में पानी की मात्रा कम की जा सकती है।
2. **दूध को उबालना** – दूध को उबालने से कई भौतिक-रासायनिक क्रियाएं होती हैं, जिसमें उसमें खमीर उठाने की क्षमता 36 से 5 इकाई तक हो जाती है। यह दूध अब शिशु के लिये ज्यादा सुरक्षित है।
3. **वसा का संतुलन** – भैंस के दूध में वसा की मात्रा सबसे अधिक (8.8%) होती है। उसे 3.5% तक लाना चाहिए। इसके लिए दूध में से क्रीम निकालना उचित विधि है। आजकल डेयरियों पर 'टोन्ड' दूध के नाम से ऐसा दूध मिलता है।
4. **दूध में शक्कर मिलाना** – दूध में शक्कर मिलाने से शरीर को ज्यादा ऊर्जा मिलती है वहीं इससे दूध जल्दी पच भी जाता है। शक्कर की उचित मात्रा 5 प्रतिशत (100 ग्राम तैयार दूध में 5 ग्राम शक्कर) ठीक रहती है। इस तरह का आहार शिशु को एक साल तक दिया जाता है ताकि शिशु को उचित मात्रा में संतुलित आहार मिल सके।

प्रायः यह देखा गया है कि शिशु में विटामिन 'डी' की कमी रहती है, अतः इसकी पूर्ति के लिए शिशु को धूप में रोजाना तेल से मालिश करना चाहिए, क्योंकि धूप



आवास भारती

विटामिन 'डी' का प्रमुख स्रोत है। शिशुओं के लिए आजकल बाजार में सूखा दूध और पूरक आहार सहित विशिष्ट भोज्य सामग्री (पाउडर के रूप में) बहुत प्रकार की उपलब्ध है। उनका प्रयोग भी निःसंकोच किया जा सकता है। इनके व्यावहारिक लाभ अनेक हैं –

1. किसी भी प्रकार की मिलावट की संभावना कम से कम रहती है।
2. ये बहुत दिनों तक रखे जा सकते हैं।
3. इनकी पोषक तत्वों की सत्यता प्रमाणित रहती है और काफी स्वच्छ-साफ स्थितियों में तैयार किए जाते हैं।
4. ये बाजार में सुविधाजनक रूप से उपलब्ध रहते हैं।
5. लाने-ले जाने तथा यात्रा आदि के समय भी ये सरलता से लाये-ले जा सकते हैं।

इन पाउडर दूधों में प्रस्तावित अनुसार छः से आठ गुने उबलते पानी को मिलाने पर यह शिशु के पिलाने योग्य हो जाता है। हां, इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि एक बार में उतना ही दूध बनायें जितनी जरूरत है। बने हुए दूध का पुनः प्रयोग नहीं ही करें। दूध बनाने की सरलतम विधि में आवश्यक मात्रा में पाउडर मिल्क लेकर उसमें थोड़ा गर्म पानी डालें और चम्मच से फेंटकर पेस्ट बना लें। अब उसमें चम्मच से हिलाते हुए बाकी उबले पानी को डालें। यह दूध अब शिशु के पीने योग्य तैयार है।

खान-पान की नजर से कुछ व्यक्ति 1. मांसाहारी और अन्य 2. शाकाहारी होते हैं। इस प्रकार भोज्य पदार्थ इस वर्गीकरण से भी अलग-अलग होगा। इसी प्रकार 1. अधिक शारीरिक श्रम करने वाले पुरुष और स्त्रियां, 2. बौद्धिक कार्य वाले लोग, 3. गर्भवती महिलाएं, 4. दूध पिलाने वाली महिलाएं आदि भी अन्य वर्गीकरण में आयेंगी।

परिपक्व व्यक्ति के लिए भोजन व्यवस्था : व्यक्ति की यह अवस्था सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। व्यक्ति में अचानक बदलाव आ जाता है। इस अवस्था में जहां पुरुष जीविकोपार्जन के लिए कठिन परिश्रम करता है, वहीं स्त्रियां घर में अनेक ऐसे कार्य करने में जुट जाती हैं, जिनमें शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम दोनों का समावेश होता है। पुरुषों को भी ऊंचे पदों पर बौद्धिक परिश्रम करना होता है, इस प्रकार ऐसी स्थिति में इनकी पोषक तत्वों तथा आहार प्रबंध में भी बदलाव हो जाता है।

काम कितने परिश्रम का है, उसका भी खान-पान व पोषक तत्वों की मात्रा में प्रभाव पड़ता है। आम तौर से श्रम को तीन भागों में विभक्त किया गया है।

(1) **कम श्रम साध्य** – विशेषतः बैठकर

(क) **पुरुष वर्ग** – पुजारी, मोची, अध्यापक, सेवानिवृत्त लोग, नाई, दर्जी, जर्मीदार, उच्च अफसर, चपरासी, विभिन्न लिपिक इत्यादि।

(ख) **महिला वर्ग** – कसीदाकारी, घरेलू स्त्रियां, नर्स-दाई, शिक्षक, सीना-पिरोना, सब्जी विक्रेता इत्यादि।

(2) **मध्यम श्रम साध्य कार्य** –

(क) **पुरुष वर्ग** – बढ़ई, श्रमिक, रिकशा चालक, मिस्त्री, सुनार, कुम्हार, फीटर, कृषि कार्य, वेल्डर, टर्नर, जुलाहा, कुली, दुकानदार, झाड़वर, टाइपिस्ट, पोस्टमैन आदि।

(ख) **महिला वर्ग** – रोड़ी तोड़ने वाली, लोहा पीटने वाली, कपास ओटने वाली आदि।

55-60 साल तक के लोगों के लिए भोजन प्रबंध : इस उम्र तक के लोगों को वृद्ध माना जाता है। यह व्यक्ति के जीवन की अंतिम अवस्था मानी जाती है। इस अवस्था में अनेक प्रकार के शारीरिक तथा मानसिक बदलाव होने लगते हैं जिनमें शारीरिक रूप से चलने-फिरने में मुश्किल, कम दिखने की शिकायत, घुटनों में दर्द, हड्डियों का निरंतर हास, बालों का रूखापन, दांतों का गिरना और बालों का सफेद हो जाने के बाद कम होना, सुनने में दिक्कत आना आदि मुख्य हैं। मानसिक रूप से भी याददाश्त में कमी, सोचने में अस्थिरता, एक ही बात को बार-बार दोहराने जैसे बदलाव, बहुत सामान्य हैं। अतः वृद्ध लोगों के लिए भी पोषकीय आवश्यकता होती है।

कम काम या बिना काम के कारण भी वृद्ध लोगों की पोषकीय तत्वों और भोज्य पदार्थों की जरूरत में बहुत परिवर्तन आ जाता है। अपचन जैसी समस्या के कारण भी कम कैलोरीज की मात्रा आहार व्यवस्था में उचित एवं उपयुक्त कमी विशेषज्ञों द्वारा बताई जाती है।

इन तथ्यों के आधार पर इस वर्ग के लोगों (पुरुष व स्त्रियां) की पोषकीय एवं आहार आवश्यकता को नीचे की तालिकाओं में उद्धृत किया गया है।

स्वस्थ शरीर के लिए संतुलित आहार : जिस आहार में सभी पौष्टिक तत्व उचित मात्रा में हो संतुलित आहार कहते हैं तथा जिसमें पौष्टिक तत्व उचित मात्रा में न हो उसे असंतुलित आहार कहते हैं। संतुलित आहार के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि किस खाद्य पदार्थ में किस तरह के और कितनी मात्रा में पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं और शरीर को उनकी आवश्यकता क्यों पड़ती है?



स्वामी विवेकानन्द ने जब शिकागो में आयोजित धर्म संसद में 'सर्वधर्म समभाव' एवं 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को आगे रखते हुए अपना व्याख्यान दिया

तो सारा विश्व न केवल हस्प्रभ रह गया बल्कि इसे यह मानना पड़ा कि वास्तव में भारत के धर्म एवं संस्कृति में विश्व गुरु बनने की क्षमता है। उस दिन से पहले तक जो लोग भारत को अज्ञान के अंधकार में डूबा देश मानते थे, उनकी सोच में भी बदलाव आया।

स्वामी विवेकानन्द ने सत्य की खोज में जो बातें कहीं हैं, वे हर व्यक्ति के जीवन में अब भी महत्व रखती हैं। हालात से डरकर भागना स्वामीजी ने कभी नहीं सीखा। वे हमेशा ही हालात का मुकाबला करने की प्रेरणा देते थे। विषम से विषम और दुरुह से दुरुह परिस्थिति में भी व्यक्ति को अपना सम्मान नहीं खोना चाहिए। उनका मानना था कि हर व्यक्ति जो ब्रह्म का प्रतीक है, अद्भूत, अलौकिक शक्तियों का स्वामी है। अगर कोई व्यक्ति ठान ले तो कितने भी खराब हालात क्यों न हों, उन पर नियन्त्रण रख सकता है और हालात को अपने पक्ष में ढाल



सकता है। अलग-अलग मौके पर स्वामी विवेकानन्द ने अपने शिष्यों को भी ऐसे अनेक मंत्र दिये जो उन्हें पराजय के भय से दूर होकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते

गुरु मंत्र

— सौरभ सील, उप महाप्रबंधक

रहे। ऐसे ही कुछ गुण यहां पर प्रस्तुत हैं —

गुण - 1 "हे सखे। तुम क्यों रो रहे हो? विश्व की हर एक शक्ति तो तुम्हीं में



है। भगवन आप खुद अपने आप को विकसित तो करो। देखो, तीनों लोक तुम्हारे पैरों के नीचे हैं। तुम्हारे पास आत्मा की प्रबल शक्ति है, इसलिए डरो मत। तुम्हारा नाश नहीं हो सकता। तुम्हें कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, इसलिए बिलकुल भी डरो मत। इस संसार से, इस भवसागर से पार उतरने का एक ही उपाय है और वह उपाय यही है कि जिस पर तुम चल रहे हो, उसी पथ पर चलकर संसार के सभी लोग भवसागर को पार करते हैं। यही श्रेष्ठतम पथ है। यही श्रेष्ठ पथ मैं तुम्हें दिखाता हूँ।"

गुण - 2 "यदि तुम लोग कमर कसकर अपने लक्ष्य को पाने के लिए जुट जाओ तो छोटे-मोटे की तो बात ही क्या, बड़े से बड़े दिग्गज बह जाएंगे। तुम केवल एक हुंकार मात्र से इस दुनिया को पलटने का सामर्थ्य रखते हो। आप जो भी कर रहे हो, यह तो उसका केवल प्रारब्ध है। इसलिए किसी के साथ विवाद नहीं करो। हिल मिलकर रहना सर्वोत्तम है। यह दुनिया भयावह है और किसी पर भी विश्वास नहीं है, ऐसा सोचना उचित नहीं। डरने का भी कोई कारण नहीं है। आप जिस दिशा में जा रहे हो, इस दृढ़ संकल्प के साथ जाओ कि मां काली मेरे साथ है। इस संकल्प मात्र से ऐसे कार्य होंगे कि तुम खुद चकित हो जाओगे। फिर भय किस बात का? किसका भय? वज्र जैसा हृदय बनाओ और अपने कार्य में जुट जाओ।"

गुण - 3 अपने लक्ष्य की ओर हमेशा बढ़ते चलो। तुमने बहादुरी का काम किया है। शाबाश! आगे बढ़ते ही चलो। हिचकने वाले पीछे रह जाएंगे और अगर तुम



आवास भारती

बिना हिचके आगे बढ़े तो एक ही छलांग में सब के आगे पहुंच जाओगे। जो केवल अपने हित में लगे हुए हैं, वे न तो अपना हित कर पाएंगे और न ही दूसरे का। इसलिए ऐसा शोरगुल मचाओ कि आपकी आवाज दुनिया के कोने-कोने में फैल जाए। कुछ लोग ऐसे हैं, जिन्हें अपना काम करने के लिए तो समय का अभाव रहता है लेकिन दूसरों की त्रुटियां खोजने में इनके पास समय की कोई कमी नहीं होती। ऐसे लोगों की परवाह किए बिना अपने लक्ष्य को पाने में जुट जाओ। अपनी शक्ति के अनुसार आगे बढ़ो। 'नहीं है, नहीं है' कहने से तो सांप का विष भी नहीं रहता। नहीं, नहीं कहने से तो नहीं हो जाना पड़ेगा, इसलिए मैं कहता हूं कि आगे बढ़ो और तूफान मचा दो।

गुण - 4 यदि तुम अपनी अंतिम सांस भी ले रहे हो तो भी किसी से न डरना। जब तक ईश्वर की कृपा हम पर है, इस धरती पर हमारी उपेक्षा कौन कर सकता है? इसलिए किसी भी बात से तुम उत्साहहीन नहीं होना। इसलिए लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, जय-जयकार के नारे लगाए या हाहाकार के, तुम पर लक्ष्मी की कृपा बनी हो या नहीं बने, तुम्हारा देहान्त आज होने वाला हो या एक युग के बाद, कभी भी किसी भी अवस्था में अपने न्याय के पद से विचलित नहीं होना।

गुण - 5 क्या इस तरह का दिन कभी आएगा कि परोपकार के लिए जान चली जाएगी? यह दुनिया कोई बच्चों का खिलवाड़ नहीं। बड़े आदमी वे हैं जो अपने हृदय से दूसरों का रास्ता तैयार करते हैं। यही हमेशा से होता आया है। अपना पूरा जीवन समर्पित करके कोई व्यक्ति सेतु का निर्माण करता है और हजारों आदमी उस सेतु के ऊपर से नदी पार करते हैं।

गुण - 6 प्रेम की ही विजय होती है। अधीर होने से काम नहीं चलेगा। ठहरो, धीरज रखो, विजय अवश्यम्भावी है। हो सकता है कि आपको सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए अपना सब कुछ छोड़ना पड़े। बड़े से बड़े जहाज भी छोटी-छोटी त्रुटियां करने पर डूब जाते हैं, इसलिए सावधान रहना। कभी भी दूसरों के अत्यन्त छोटे अधिकारों में भी हस्तक्षेप नहीं करना। दूसरों के धर्म से कभी भी द्वेष नहीं करना। हम सब लोग सब धर्मों को सत्य समझते हैं और उन धर्मों का सत्य भी समझते हैं इसलिए पूरी शक्ति से और धीरज से अपने लक्ष्य की ओर बढ़े चलो।

गुण - 7 तुम्हारे लिए नीतिपरायणता और साहस को छोड़कर और कोई धर्म नहीं है। कोई भी धार्मिक मत-मतांतर तुम्हारे लिए नहीं है। पूर्ण नीतिपरायण और साहसी बनो। प्राणों के लिए भी कभी न डरो। कायर लोग ही पापाचरण करते हैं, वीर पुरुष कभी भी पापानुष्ठान नहीं करते। वीर पुरुष तो कभी अपने मन में भी पाप का विचार नहीं लाते, इसलिए प्राणिमात्र से प्रेम करने का प्रयास करो। तुममें कभी भी कायरता, पाप, असदाचरण और कमजोरी नहीं आनी चाहिए। कभी पीछे मुड़कर मत देखो। भाग्य बहादुर लोगों का ही साथ देता है। हमेशा अपार शक्ति,

अपरिमित उत्साह, अमित साहस और असीम धैर्य से आगे बढ़ो। तुम सभी महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कर सकते हो।

गुण - 8 बिना पाखण्डी और कायर बने सबको प्रसन्न रखो। पवित्रता और शक्ति



के साथ अपने आदर्श पर दृढ़ रहो। चाहे तुम्हारे सामने कौसी भी बाधाएं क्यों न हों, कुछ समय बाद संसार तुमको मानेगा ही।

गुण - 9 धीरज रखो और मृत्युपर्यंत विश्वासपात्र रहो। आपस में न लड़ो। रुपए-पैसे का व्यवहार शुद्ध भाव से करो। बिना ईमानदारी, भक्ति और विश्वास के महान कार्य नहीं किए जा सकते, इसलिए प्रत्येक कार्य में सफलता के लिए ईमानदारी, शक्ति और विश्वास का पथ चुनो।

गुण - 10 किसी काम को न टालो। कोई भी चुनौती आने पर टालने की कोशिश न करो क्योंकि अगर आपने उस काम को टाला तो उससे आप किसी बड़ी उपलब्धि से वंचित रह सकते हैं, इसलिए टालने की प्रवृत्ति छोड़ो और प्रत्येक कार्य में ईश्वर को खोजने की कोशिश करो। वह आपके इर्द-गिर्द ही कहीं नजर आएगा।

गुण - 11 पारवलंबी न रहो, दूसरों पर निर्भर रहना भी बुद्धिमानी नहीं होती। बुद्धिमान व्यक्ति को अपने ही ऊपर दृढ़ता से खड़े रहकर कार्य करना चाहिए। यही लक्ष्य प्राप्ति का एक प्रमुख मंत्र है।

गुण - 12 सभी के लिए सहयोगी बनो। किसी को उसकी योजनाओं में हतोत्साहित नहीं करो। आलोचना की प्रवृत्ति को पूरी तरह छोड़ दो। यदि कोई सही मार्ग पर अग्रसर हो रहा है तो उसकी आलोचना नहीं करो बल्कि सहायता करो और यदि उस मार्ग में या उस कार्य में कोई गलती नजर आए तो नम्रतापूर्वक उस गलती के प्रति उसे सजग करो। दूसरों की आलोचना ही सब दोषों की जड़ है।



भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी

— शोभित त्रिपाठी, राजभाषा अधिकारी

आजादी के 73 साल बाद भी समाज विज्ञान, विज्ञान और तकनीक जैसे विषयों पर कोई ढंग का हिंदी में मौलिक लेखन काफी दूढ़ने पर मिलता है। हिंदी में कायदे की कोई शोध पत्रिका नहीं मिलती जिसमें शोध लेख छपवाया जा सके। देश के प्रतिष्ठित उच्च अध्ययन संस्थानों में सारा शोध अंग्रेजी भाषा में हो रहा है। देश की बहुसंख्य जनता की जिसमें कोई हिस्सेदारी नहीं है। सारा शोध जिन गरीबों, पिछड़ों, दलित-आदिवासियों, स्त्रियों को केंद्र में रख कर किया जाता उसकी पहुँच उन तक कभी भी नहीं हो पाती। पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र की 'आज भी खरे हैं तालाब' जैसी किताबें, जिसकी सफलता और पहुँच असंदिग्ध है, उन लोगों पर करारा व्यंग्य है जो इस बात का रोना रोते हैं कि हिंदी में लोक-मन को छूने वाली भाषा में साहित्य से इतर कोई रचना संभव ही नहीं है। राजनीतिशास्त्री रजनी कोठारी 'भारत में राजनीति' जैसी किताब की हिंदी में पुनर्रचना कर एक नई पहल की शुरुआत करते हैं। कभी समाजशास्त्री केएल शर्मा ने एनसीईआरटी की समाजशास्त्र की किताब मूल हिंदी में लिख कर साबित किया था कि स्कूल-कालेज की समाजविज्ञान की किताबें हिंदी में लिखना संभव है। दिक्कत यह है कि हिंदी क्षेत्र के कई विद्वान अंग्रेजी और हिंदी दोनों में दक्ष होने के बावजूद हिंदी में लिखने की जहमत नहीं उठाते। इसकी वजह सिर्फ आर्थिक नहीं, कहीं गहरे अवचेतन में हिंदी के प्रति हीनता बोध भी है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में अंग्रेजी का ऐसा हौवा खड़ा किया जा रहा है कि हिंदी के पक्ष में की गई किसी भी बात को दकियानूसी विचार करार दिया जाता



है। निहित स्वार्थ के कारण हिंदी के एजंडे को हिंदी और अंग्रेजी के प्रभुवर्गों ने आपसी गठजोड़ कर हथिया लिया है।

निस्संदेह अंग्रेजी अंतरराष्ट्रीय संपर्क की भाषा है। इस भाषा के माध्यम से हम एक बड़े समूह तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं। इस भाषा की जानकारी भूमंडलीकरण



के इस दौर में हमारी जरूरत है। इस बात से शायद ही किसी को कोई गुरेज हो कि अंग्रेजी के बूते अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीयों की एक पहचान बनी हैं। पर अंग्रेजी अखिल भारतीय स्वरूप का प्रतिनिधित्व कभी नहीं कर सकती। देश-विदेश में रह रहे भारतीयों की अस्मिता, उसकी असली पहचान निज भाषा में ही संभव है। कवि विद्यापति ने सदियों पहले इसी को लक्ष्य कर 'देसिल बयना सब जन मिट्टा' कहा होगा। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारत एक बड़ा बाजार है। इस बाजार में हिंदी में आज अंग्रेजी के शब्दों को टूँस कर हिंदी को विश्व भाषा बनाने की मुहिम चल रही है। कई अखबारों में हिंदी को रोमन लिपि में लिखने का प्रयोग जोर पकड़ रहा है। क्या यह विचित्र नहीं कि जो भाषा ठीक से 'राष्ट्रीय' ही नहीं बन पाई हो उसे 'अंतरराष्ट्रीय' बनाने की कोशिश की जा रही है ?

20वीं सदी के आरंभिक दशकों में उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद से लड़ कर हिंदी ने सार्वजनिक दुनिया (पब्लिक स्फियर) में अपनी एक भूमिका अर्जित की थी। इस दुनिया में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक मुद्दों पर बहस-मुबाहिसा संभव था। आजादी के बाद प्रतिक्रियावादी, सर्वाण प्रभुवर्ग जिनकी साठगांठ अंग्रेजी के अभिजनों के साथ थी, हिंदी की सार्वजनिक दुनिया पर काबिज होते गये। इससे हिंदी की सार्वजनिक दुनिया सिकुड़ती और आमजन से कटती चली गई। एक बार फिर हिंदी को महज बोल-चाल के माध्यम तक ही सीमित रखने का कुचक्र चल रहा है।

भूमंडलीकरण का सबसे प्रभावी औजार है सूचना। यह सूचना इंटरनेट के माध्यम



आवास भारती

से पूरे भूमंडल के फासले को चंद लम्हों में नापने का माद्दा रखती है। लेकिन चूँकि सत्ता की भाषा अंग्रेजी है, इंटरनेट की भाषा भी अंग्रेजी ही है। बहरहाल, हिंदी देर ही सही अंग्रेजी के गढ़ में संघ लगाने में कामयाब हो रही है। इसका सबूत है विभिन्न वेब साइटों पर मौजूद हिंदी के अखबार और पत्र-पत्रिकाएँ। इससे हिंदी का प्रसार और पहुँच देश-विदेश में तेजी से हो रहा है। साथ ही हाल के वर्षों में जिस तेजी से हिंदी के ब्लॉग इंटरनेट पर फैलें हैं, एक उम्मीद बंधती है कि 'ठेठ हिंदी का ठाठ' फिर से जीवित होगा। क्योंकि यहाँ हर लेखक को अपनी भाषा में कहने-लिखने की छूट है। इसका अंदाजा विभिन्न ब्लॉगों की भाषा पर एक नजर डालने पर लग जाता है। पर किसी भी तकनीक की उपयोगिता उसके इस्तेमाल करने वालों पर निर्भर करती है। सवाल है कि जिस समाज में सूचना तकनीक का इस्तेमाल एक छोटे तबके तक सीमित हो, जिस भाषा में की-बोर्ड तक उपलब्ध नहीं वह भाषा-समाज किस तरह इंटरनेट का इस्तेमाल कर आगे बढ़ेगा ?

मंजिलें और भी हैं

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप दुनिया की तमाम भाषाओं की भांति हिंदी के स्वरूप, क्षेत्र एवं प्रकृति में बदलाव आया है, प्रसार में वृद्धि हुई है। हिंदी न सिर्फ भारतीय मंडल अपितु समूचे भूमंडल की एक प्रमुख भाषा के रूप में उभरी है। यह हकीकत है कि नब्बे के दशक में विश्व बाजार व्यवस्था के तहत बहुप्रचारित उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण की प्रकृति से भारत अछूता नहीं रह सकता था। देर-सबेर उसे भी वैश्विक मंडी में खड़ा होना ही था। जाहिर है इस वैश्वीकरण ने जहाँ एक तरफ मुक्त बाजार की दलीलें पेश की, वहीं दूसरी तरफ दुनिया में एक नई उपभोक्ता संस्कृति को जन्म दिया, जिससे जनजीवन से जुड़ी वस्तुएं ही



नहीं, भाषा, विचार, संस्कृति, कला सब-कुछ को एक 'कमोडिटी' के तौर पर देखने की प्रवृत्ति विकसित हुई। भाषा के रूप में निश्चय ही इस नव उपनिवेशवादी व्यवस्था ने राष्ट्रों की प्रतिनिधि भाषाओं को चुना। बहुभाषिक समाज व्यवस्था वाले

भारत में हिंदी चूँकि संपर्क और व्यवहार की प्रधान भाषा थी इसलिए हिंदी को वैश्विक बाजार ने अपनाया। यहाँ वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप हिंदी के विकास-विस्तार पर जाने से पूर्व वैश्वीकरण की प्रक्रिया के बारे में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, प्रसिद्ध समाज विज्ञानी प्रो. आनंद कुमार की



राय का उल्लेख आवश्यक है। उनके अनुसार वैश्वीकरण की प्रक्रिया में सात तत्व शामिल हैं, ये हैं, एक तो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया, दूसरा-माध्यम वर्ग, तीसरा-बाजार, चौथा-संचार माध्यम, पाँचवाँ-बहुउद्देशीय कंपनियाँ, छठा-आप्रवासन और सातवाँ-सम्पन्नता। ये सात चीजें मिलकर वैश्वीकरण को आधार देती हैं और इनमें से दो चीजें हैं जो कि देशी भाषाओं के अनुकूल हैं। एक है बाजार और दूसरा संचार माध्यम। निश्चय ही वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के विकास-विस्तार को इन्हीं दोनों आयामों-बाजार और संचार माध्यम से देखना होगा। कहने की गरज नहीं, वैश्वीकरण की मूल अवधारणा अर्थकेन्द्रित है। अर्थोन्मुखी होने के कारण ही वैश्वीकरण का समूचा प्रासाद, चाहे भाषा को लेकर हो या विचार को, संस्कृति को लेकर हो या तकनीक को, उपभोक्तावादी है।

हिंदी को लेकर यद्यपि इस तरह की आशंकाएँ व्यक्त की जाती रही हैं कि विश्व बाजार और भूमंडलीकरण के कारण हिंदी का मूल संसार शायद और सिमटेगा, परन्तु आँकड़ों और अब तक हुए बदलावों को देखकर ऐसा नहीं लगता कि हिंदी बाजार से बेदखल होगी। निश्चित ही इस दौर में बाजार पूरी तरह हिंदी की गिरफ्त में है। और उल्लेखनीय पहलू यह है कि हिंदी का दबदबा बाजार में वर्चस्व के नाते नहीं बल्कि लोकोपयोगिता के कारण है। वैश्वीकरण में आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टि से हिंदी की भूमिका बढ़ी है। जैसे-जैसे सीमाएं टूट रही हैं, प्रतिबंध समाप्त हो रहे हैं, दुनिया सिमट रही है, कारोबारी निकटता आ रही है, वैसे-वैसे एक नई संस्कृति विकसित हो रही है। यह नई बाजार संस्कृति अब तक स्वायत्त रहे समाजों और संस्कृतियों के रहन-सहन, आचार-विचार, भाषा-भूषा और मूल्यबोध सभी का अपने तरीके से अनुकूलन कर रही है। संचार माध्यम इस संस्कृति के वाहन बने हैं और हिंदी माध्यम। आंकड़े बताते हैं कि 100 करोड़ से



आवास भारती

अधिक की आबादी वाले इस राष्ट्र में 20 करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिंदी है। 30 करोड़ से अधिक लोग इस भाषा का प्रयोग दूसरी भाषा के रूप में करते हैं, और लगभग 25 करोड़ लोग ऐसे हैं जिनका किसी न किसी रूप में हिंदी



भाषा के साथ सरोकार जुड़ा हुआ है। कहने का आशय यह है कि देश की आबादी के लगभग तीन चौथाई से अधिक लोगों में हिंदी संपर्क का माध्यम है। यही वजह है कि वैश्विक बाजार संस्कृति के लिए हिंदी सबसे अनुकूल भाषा के रूप में अपनाई जा रही है। इससे हिंदी का विकास-विस्तार तो हो ही रहा है, संपूर्ण राष्ट्र में भाषिक संपन्नता की परिचय भी मिल रहा है। और हिंदी की स्वीकृति का भी। आज तकरीबन सत्तर प्रतिशत से अधिक वस्तुएं हिंदी के माध्यम से जनमानस तक पहुँच रही हैं। विक्रेता और क्रेता के बीच हिंदी सेतु का कार्य कर रही है, चाहे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उत्पाद हों, चाहे देशी कम्पनियों के।

बेशक, हिंदी की शक्ति के नाते ही अमेरिकी सरकार हो या 'कम्प्यूटर किंग' बिल गेट्स, हिंदी के उपयोग में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। दुनिया को यह भलीभांति पता है कि लगभग 40 करोड़ की आबादी वाले भारतीय मध्यवर्गीय बाजार तक पहुँच बनानी है तो हिंदी को अपनाना होगा। यह वैश्वीकरण का ही दबाव है कि यू.एन. ओ. में हिंदी की चर्चा हो रही है, विश्व की प्रमुख भाषाओं में शुमार करने की तोस दलीलें दी जा रही हैं। कहना ही होगा, मारीशस में विश्व हिंदी सम्मेलन होना राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कोई विशेष उपलब्धी नहीं है परन्तु न्यूयॉर्क में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन निश्चय ही एक ऐतिहासिक परिवर्तन की आहट है, हिंदी की स्वीकृति का सकारात्मक पहलू है। विश्व समुदाय को पता लग चुका है कि भारत की प्रगतिशील अर्थव्यवस्था का आधार क्या है और इस विकास की प्रक्रिया में शामिल होने का द्वार क्या है। इसका सबसे ज्वलंत

उदाहरण है, गत दिनों मीडिया में हुए दो प्रयोग। छोटे पर्दे और बड़े पर्दे दोनों पर हुए निम्न दो प्रयोगों से हिंदी की स्थिति का जायजा लगाया जा सकता है। रूपर्ट मर्डाक जब छोटे पर्दे पर स्टार टी.वी. को लेकर आये तो जल्दी ही उन्हें एहसास हो गया कि अंग्रेजी के माध्यम से कितना भी बढ़िया 'प्रोग्राम' और प्रसारण हो, मात्र शहरी वर्ग तक ही पहुँचा जा सकता है, वह भी 'इलीट क्लास' तक। जबकि हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित किया जाये तो एक विशाल दर्शक वर्ग तक पहुँचा जा सकता है। परिणामस्वरूप स्टार टी.वी. ने हिंदी में कार्यक्रम बनाने-दिखाने शुरू किए और नतीजा समाने है।

इसी प्रकार एक दिलचस्प उदाहरण बड़े पर्दे का है। यूँ तो बड़े पर्दे पर अनेकानेक फिल्मों 'डब' होती रहती हैं, परन्तु जब से 'हॉलीवुड' की फिल्मों को 'बालीवुड' की भाषा में लाने की कोशिश शुरू हुई, तब से एक नई चीज फिल्म इंडस्ट्री में देखने को मिल रही है। हमें याद है जब 'जुरासिक पार्क' को हिंदी में 'डब' किया गया तो देश के दूरदराज के गाँव-कस्बों तक उसे खूब पसन्द किया गया। उल्लेखनीय यह है कि इसके पहले किसी भी विदेशी फिल्म ने इतना मुनाफा नहीं कमाया था। ये तथ्य इस बात के संकेत है कि हिंदी में कितनी जबरदस्त क्षमता है।

इतना ही नहीं, यह हिंदी का ही कमाल है कि राष्ट्रीय ही नहीं, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों को भी आज हम गाँवों में पा सकते हैं। बेशक संचार क्रान्ति और विज्ञापन संस्कृति का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। वैश्वीकरण के कारण जो बाजार आज बन रहा है उसके विकास-विस्तार में संचार क्रान्ति और विज्ञापन उद्योग की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। पिछले दो दशकों में साबुन और टूथपेस्ट जैसी दैनंदिन उपयोग की वस्तुओं से आगे चलकर अब मोटरसाईकिल, कार, फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन, ब्रांडेड कंपनियों के कपड़े आदि के विज्ञापन हिंदी में प्रसारित किये जा रहे हैं। छोटे-छोटे कस्बों तक सौन्दर्य प्रसाधन के 'ब्यूटी पार्लर' खुल चुके हैं। सैलून जैसे अब गुजरे जमाने का शब्द लगने लगा है। बड़े-बड़े होर्डिंग्स पर लिखे लोक-लुभावन विज्ञापन आज शहरों की चौहदियों से बाहर छोटे-छोटे कस्बों और गाँवों तक देखे जा सकते हैं। यही कारण है कि एयरटेल, वोडाफोन जैसी टेली सर्विस कंपनियां अपने उत्पाद अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में ला रहे हैं। अब तो हॉलीवुड की फिल्मों हिंदी के साथ-साथ तमिल तेलगू और अब पंजाबी में भी डब होकर आने लगी हैं। अब तो कई नॉलेज चैनल जैसे कि डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफी, फॉक्स ट्रैवलर जैसे चैनल अपने ज्यादा से ज्यादा कार्यक्रम हिंदी में डब करके पेश कर रहे हैं। एक और क्रांति डीटीएच में भी आयी है, टाटा स्काई जैसे चैनल भाषा चुनने का भी ऑप्शन पेश कर रहे हैं। टी.वी. और मोबाइल से शायद ही अब देश का कोई कोना अछूता हो। उल्लेखनीय है कि इन संचार माध्यमों की भाषा हिंदी है, क्षेत्रीय भाषाएँ हैं।



भारत में ओपन सोर्स सॉफ्टवेयरस पारितंत्र

— मनोज कुमार, उप प्रबंधक



संदर्भ

पिछले 20 वर्षों में सबसे विस्मयकारी प्रौद्योगिकीय विकासों में से एक दुनिया भर में 'फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर' (FOSS) का तीव्रता से विकास हो रहा है।

अधिकांश डिजिटल अनुभव आज 'फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर' द्वारा संचालित हैं और भारत का 85% से अधिक इंटरनेट FOSS पर ही सक्रिय है।

FOSS प्रौद्योगिकी का लोकतंत्रीकरण करता है और संगठनों को सुरक्षित, विश्वसनीय एवं स्केलेबल सॉफ्टवेयर विकसित करने हेतु आवश्यक उपकरणों तक पहुँच प्रदान कर तीव्र नवाचार को सक्षम बनाता है।

फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर को बढ़ावा देना भारत के राष्ट्रीय हित में है, क्योंकि यह भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायता करेगा।

फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयरस (FOSS)

- **परिचय:** FOSS का अर्थ यह नहीं है कि सॉफ्टवेयर निःशुल्क उपलब्ध है। 'फ्री' शब्द इंगित करता है कि सॉफ्टवेयर में कॉपीराइट के संबंध में कोई बाधा नहीं है।
 - इसका अर्थ है कि सॉफ्टवेयर का सोर्स कोड सभी के लिये खुला/ओपन है और कोई भी कोड का उपयोग, अध्ययन और संशोधन करने के लिये स्वतंत्र है।
 - यह अन्य लोगों को भी एक समुदाय की तरह सॉफ्टवेयर के विकास और सुधार में योगदान करने की अनुमति देता है।
 - FOSS के उदाहरणों में MySQL, Firefox, Linux आदि शामिल हैं।
- **FOSS का महत्व:** FOSS वर्तमान में व्यापक पैमाने पर प्रौद्योगिकियों के निर्माण हेतु एक वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत करता है।
 - प्रोप्राइटरी सॉफ्टवेयर के विपरीत सभी को ओपन-सोर्स कोड को संपादित करने, संशोधित करने और पुनः उपयोग करने की स्वतंत्रता होती है।
 - इसके परिणामस्वरूप कई लाभ प्राप्त होते हैं, जैसे लागत में कमी, कोई वेंडर लॉक-इन नहीं, स्थानीय संदर्भ के लिये अनुकूलित करने की क्षमता और व्यापक सहयोग के माध्यम से वृहत नवाचार।
 - विभिन्न FOSS समुदाय, डेटा गोपनीयता सिद्धांतों के पालन के लिये ओपन-सोर्स कोड की जाँच कर सकते हैं, बग्स (Bugs)

खोजने में मदद कर सकते हैं और पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित कर सकते हैं।

भारत और FOSS

- **आरंभिक प्रयास:** सरकारों द्वारा ओपन सोर्स को बढ़ावा देने के आरंभिक प्रयासों में अधिकांशतः लिनक्स-आधारित ऑपरेटिंग सिस्टम और ओपन डॉक्यूमेंट फॉर्मेट को अपनाया शामिल था।
- **FOSS डेवलपर्स का वर्तमान परिदृश्य:** भारतीय डेवलपर्स इस पारितंत्र में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। 'GitHub' के अनुसार, वर्ष 2021 में इसके 73 मिलियन उपयोगकर्ताओं में से 7.2 मिलियन से अधिक भारत से थे, जो भारत को चीन (7.6 मिलियन) और अमेरिका (13.5 मिलियन) के बाद तीसरे स्थान पर रखता है।
 - लेकिन भारतीय डेवलपर बेस का तेजी से विस्तार हो रहा है, जहाँ वर्ष 2020-21 में चीन में 16% और अमेरिका में 22% की तुलना में यह लगभग 40% रहा।
 - 'GitHub' का अनुमान है कि वर्ष 2023 इस प्लेटफॉर्म पर 10 मिलियन भारतीय डेवलपर्स हो जाएंगे।
 - लाखों भारतीय डेवलपर्स वैश्विक ओपन-सोर्स इकोसिस्टम से जुड़े हुए हैं जो एक अच्छा संकेत है और यह उच्च-प्रौद्योगिकी भू-राजनीति में भारत के लिये प्रतिस्पर्धात्मक लाभ का स्रोत बन सकता है।
- **संबंधित पहल:** अप्रैल 2021 में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्रालय (MeitY) ने सरकार में फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर (FOSS) को अपनाने में तेजी लाने के लिये '#FOSS4GOV इनोवेशन चैलेंज' की घोषणा की थी।
 - यह सरकारी प्रौद्योगिकियों (GovTech) में प्रमुख समस्याओं को हल करने के लिये FOSS समुदाय और स्टार्ट-अप की नवाचार क्षमता का उपयोग करेगा।
 - यह 'GovTech 3.0' का एक प्रमुख घटक है, जो सुरक्षित एवं समावेशी ओपन डिजिटल इकोसिस्टम (ODEs) के निर्माण से संबंधित है।

संबद्ध चुनौतियाँ

- **भारत में घरेलू FOSS नवाचारों की कमी:** मजबूत खपत के बावजूद, भारत संवहनीय घरेलू FOSS नवाचारों के निर्माण में वैश्विक स्तर पर बहुत पीछे है।



आवास भारती

- भारत से पर्याप्त FOSS योगदान की कमी के परिणामस्वरूप ही देश के सॉफ्टवेयर पारितंत्र में भारत की विविध भाषाओं, सांस्कृतिक संदर्भों और जीवित अनुभवों के प्रतिनिधित्व का अभाव है।
- **FOSS के विषय में भ्रांतियाँ:** FOSS में प्रायः 'फ्री' को 'मुफ्त' मान लिया जाता जाता है और इसलिये कई लोग सोचते हैं कि FOSS पर आधारित समाधान पर्याप्त नहीं हैं।
 - उदाहरण के लिये, FOSS को प्रायः कम भरोसेमंद और अधिक असुरक्षित माना जाता है, जबकि वास्तव में यह सरकार और नागरिकों के बीच अधिक भरोसे का निर्माण कर सकता है।
- FOSS में जवाबदेही का अभाव: एक और महत्वपूर्ण समस्या यह है कि किसी प्रोपराइटी सॉफ्टवेयर विक्रेता से निपटना प्रायः आसान नज़र आता है और उसे किसी भी विफलता के लिये उत्तरदायी ठहराया जा सकता है।
 - FOSS के मामले में एक स्पष्ट 'ओनर' (Owner) की अनुपस्थिति होती है, जिससे यह चिह्नित करना कठिन हो जाता है कि उत्तरदायी कौन है।
- **संचालन संबंधी कमियाँ:** ओपन-सोर्स घटकों का उपयोग बहुत सारे अतिरिक्त कार्य का सृजन कर सकता है।
 - इस बात का ध्यान रखना होता है कि कौन से घटक उपयोग किये जा रहे हैं, सॉफ्टवेयर का कौन-सा संस्करण प्रयुक्त है और वे उपयोग में आने वाले अन्य घटकों के साथ किस प्रकार अंतःक्रिया कर सकते हैं।
- **बौद्धिक संपदा संबंधी समस्याएँ:** वर्तमान में 200 से अधिक प्रकार के लाइसेंस मौजूद हैं, जिन्हें ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर पर लागू किया जा सकता है।
 - इनमें से कई लाइसेंस एक-दूसरे के साथ असंगत हैं, जिसका अर्थ यह है कि कुछ घटकों का एक साथ उपयोग नहीं किया जा सकता है। क्योंकि ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करते समय सभी शर्तों का पालन करना होता है।
 - जितने अधिक घटकों का उपयोग किया जाता है, सभी लाइसेंस शर्तों को ट्रैक करना और उनकी तुलना करना उतना ही कठिन होता जाता है।
- यह अंतर्राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी कंपनियों (और उनके पीछे की सरकारों) पर निर्भरता को कम करने का एक भरोसेमंद उपाय होगा।
- **ओपन-सोर्स अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना:** भारत को अब ओपन-सोर्स अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना चाहिये, जहाँ ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर के निर्माण में अधिक निवेश हेतु डेवलपर्स एवं फर्मों के पक्ष में प्रोत्साहन सृजन के लिये विभिन्न नीतिगत उपाय आगे बढ़ाने होंगे।
 - इसे विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्द्धी डेवलपर्स और फर्म के सृजन पर लक्षित होना चाहिये जो प्रौद्योगिकी पारितंत्र में महत्वपूर्ण नोड का रूप ग्रहण करेंगे।
- **प्रौद्योगिकी संस्थानों की भूमिका:** इंजीनियरिंग कॉलेजों को अपने छात्रों को ओपन सोर्स परियोजनाओं में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।
 - एक स्वस्थ ओपन-सोर्स इकोसिस्टम सुनिश्चित करना वास्तव में एक बड़े आईटी उद्योग वाले देश के लिये सामाजिक उत्तरदायित्व का विषय है।
 - यदि ओपन-सोर्स परियोजनाओं के लिये समर्थन को कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) प्रतिबद्धताओं की संतुष्टि के रूप में मान्यता दी जाती है तो और अधिक डेवलपर्स इनकी ओर आकर्षित होंगे।
 - यह विश्व के सूचना अवसंरचना के एक महत्वपूर्ण हिस्से को बनाए रखने के लिये कुछ ही व्यक्तियों पर निर्भरता की संभावना को कम करेगा।
- FOSS उत्कृष्टता केंद्र: भारत में FOSS के नेतृत्व वाले नवाचार के लिये एक विश्वसनीय संस्थागत सहारे की भी ज़रूरत है जो पूरे भारत में फैले FOSS नेतृत्वकर्ताओं और समुदायों को एक साथ ला सके।
 - केरल का 'इंटरनेशनल सेंटर फॉर फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर' (ICFOSS) एक ऐसा ही संस्थान है जिसके कारण केरल FOSS को अपनाने के मामले में अग्रणी राज्य बन गया है।
 - एक राष्ट्रीय 'FOSS उत्कृष्टता केंद्र' पूंजी, संसाधन और क्षमता-निर्माण समर्थन जुटाने में मदद कर सकता है, जिससे विश्वस्तरीय 'मेड-इन-इंडिया' FOSS उत्पादों के निर्माण के लिये अत्यंत आवश्यक गति पैदा हो सकती है।

आगे की राह

- **'राष्ट्रीय हित में ओपन सोर्स प्रौद्योगिकी:** भारत को अपनी स्वतंत्र प्रौद्योगिकीय शक्ति को अधिकतम करना चाहिये। वास्तव में प्रौद्योगिकी क्षेत्र के अर्थशास्त्र और उसकी राजनीति को देखते हुए ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर भारत के राष्ट्रीय हित में है।
 - हर चीज़ की पुनर्चना और स्थानीयकरण पर बल देने के माध्यम से प्रौद्योगिकीय संप्रभुता पाने के प्रयास की तुलना में ओपन-सोर्स परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करना कहीं अधिक उत्पादक होगा।

निष्कर्ष

भारत में FOSS के अधिकाधिक अंगीकरण की दिशा में अपनी यात्रा के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है। चार मिलियन से अधिक कर्मियों के आईटी कार्यबल और दुनिया के लिये बेहद आकर्षक एक सॉफ्टवेयर उद्योग के साथ भारत के पास पहले से ही आवश्यक प्रतिभा मौजूद है और आवश्यकता यह है कि FOSS के सबसे बड़े वादे, यानी सहयोगात्मक प्रौद्योगिकीय नवाचार की संभावना, का लाभ उठाने के लिये ठोस प्रयास किया जाए।



स्वतंत्र भारत @75 : ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भरता

— पंकज चड्ढा, सहायक महाप्रबंधक



'आत्मनिर्भर' शब्द भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई, 2020 को राष्ट्र के नाम अपने संबोधन के दौरान गढ़ा था। COVID-19 के प्रसार को रोकने के लिए प्रतिबंधों के बावजूद, 'नए भारत' ने आकार लेना शुरू कर दिया है, क्योंकि राष्ट्र हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक मजबूत प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रहा है।

यह उल्लेख करना उचित है कि आत्मनिर्भर भारत का मतलब दुनिया के बाकी हिस्सों से कट जाना और दूर होना नहीं है। बल्कि आत्मनिर्भरता का अर्थ है अपने सर्वोत्तम कार्यों को समृद्ध करना, अपने क्षितिज का विस्तार करना और फिर दुनिया को हासिल किए गए कार्य को दिखाना। आजादी के 75 साल बाद भी हम ब्रिटिश विभाजन की प्रथा का पालन कर रहे हैं और इसने लंबे समय में हमारे समाज को नुकसान पहुंचाया है। लेकिन सुधार लगातार किए जा रहे हैं और लोग जो सही है उसके लिए खड़े हो रहे हैं क्योंकि शिक्षित लोगों की संख्या बढ़ रही है।

यद्यपि भारत एक विश्व, एक सूर्य और एक ग्रिड के अपने दृष्टिकोण से पूरी दुनिया को प्रेरित कर रहा है, फिर भी कुछ चुनौतियां हैं और साथ ही आत्मनिर्भर बनने के अवसर भी उपलब्ध हैं जैसा कि नीचे चर्चा की गई है:

आत्मनिर्भर बनने में अंतर्निहित मुद्दे:

- ❖ **बाजार विकृति:** भारत ने 1991 में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण सुधारों के माध्यम से वैश्विक बाजार के लिए खुद को खोल दिया, लेकिन



बाजार मॉडल को पूर्ण स्वतंत्रता देने में संकोच बना रहा।

- ❖ **कमजोर विनिर्माण:** भारत सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र के योगदान

को प्राप्त करने के अपने लक्ष्य से बहुत पीछे है।



- ❖ **अन्य देशों पर निर्भरता:** भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, सौर उपकरण, सक्रिय दवा सामग्री और पूंजीगत वस्तुओं से संबंधित आयात के लिए अन्य देशों पर विशेष रूप से चीन पर निर्भर है। इन क्षेत्रों में विनिर्माण के लिए घरेलू क्षमता विकसित किए बिना अन्य देशों पर निर्भरता से अलग होना आसान नहीं होगा।

उपलब्ध अवसर:

- ❖ **वैश्विक विनिर्माण चीन से दूर जा रहा है:** अधिकांश बहुराष्ट्रीय कंपनियां पहले से कहीं अधिक चीन में व्यवसायों के एकाग्रता जोखिम के बारे में चिंतित हैं। इसलिए, सोर्सिंग को चीन से दूर ले जाने की प्रवृत्ति जारी रहेगी। भारत इन निवेशों को आकर्षित कर सकता है और अगला वैश्विक विनिर्माण केंद्र बन सकता है।
- ❖ **वैश्विक जनसंख्या का बुढ़ापा:** जनसांख्यिकी को ध्यान में रखते हुए, अधिकांश विकसित देशों के पास अपने देशों में अपनी जरूरत की सभी चीजें पैदा करने के लिए कार्यबल की कमी है। भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश विश्व के लिए एक युवा मानव संसाधन की आवश्यकता को पर्याप्त रूप से पूरा कर सकता है।
- ❖ **विशाल घरेलू मांग:** भारत में प्राकृतिक संसाधनों की एक विशाल श्रृंखला, एक विशाल जनसांख्यिकीय लाभ, एक बड़ा कृषि समुदाय, गतिशील औद्योगिक सेटअप (ऑटोमोबाइल और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र) और उद्यमशीलता पथ-तोड़ने वालों का एक समूह है। इस संदर्भ में, भारत में



आवास भारती

लगभग सभी इनपुट के साथ-साथ आउटपुट (मांग और आपूर्ति) कारक हैं, जो आत्मनिर्भर और उत्तेजक मांग बनने के लिए आवश्यक हैं।

आगे का रास्ता:

- ❖ **स्थानीय को बढ़ावा देना:** 'स्थानीय' के लिए मुखर होना आत्म-निर्भर भारत अभियान का एक प्रमुख पूरक है। इस संदर्भ में, लोगों को स्थानीय उत्पादों और कलाकृतियों को महत्व देने और उन्हें बढ़ावा देने की अवधारणा को आत्मसात करना चाहिए। इसके बाद ही 'स्थानीय' भारत को 'वैश्विक' भारत में बदलने का सपना साकार होगा।
- ❖ **अनुकूल नीति:** सामान्य तौर पर, प्रतिस्पर्धा नवाचार और दक्षता को बढ़ाती है। हालांकि, क्रोनी कैपिटलिज्म स्थानीय प्रतिस्पर्धा को कमजोर करता है और अक्सर संसाधनों को अधिक कुशल और तकनीकी रूप से नवीन कंपनियों से दूर कर देता है। इस प्रकार, नीतियों को घरेलू प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना चाहिए और क्रोनी कैपिटलिज्म से बचना चाहिए।
- ❖ **महत्वपूर्ण मूल्य श्रृंखलाओं का समर्थन नियंत्रण:** भारत तब तक आत्मनिर्भर नहीं बन सकता जब तक कि उसका घरेलू और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर नियंत्रण न हो। इस प्रकार, विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा, कृषि और रक्षा में रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए वैश्विक मूल्य श्रृंखला के कुछ हिस्सों पर अधिक नियंत्रण सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।
- ❖ **सार्वजनिक खरीद को मजबूत बनाना:** अनिवार्य ई-निविदा और सरकारी इलेक्ट्रॉनिक मार्केटप्लेस के निर्माण जैसे कुछ कदमों ने आपूर्तिकर्ताओं के लिए पहले से ही एक अधिक स्तर का खेल मैदान तैयार किया है। सार्वजनिक खरीद के 'कोट टू केश' चक्र को पूरा करने के लिए चक्र समय को तेज करके इन प्रक्रियाओं को और मजबूत किया जाना चाहिए।
- ❖ **तुलनात्मक लाभ पर ध्यान केंद्रित करना:** भारत एक ऐसे क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित कर सकता है जहां वह अंतर कर सकता है और वैश्विक और घरेलू निवेशकों को आकर्षित कर सकता है और एक नेता बन सकता है। भारत के लिए अगली बड़ी चीज 3डी मैन्युफैक्चरिंग, रोबोटिक्स और ऑटोमेशन हो सकती है। चूंकि ये प्रौद्योगिकियां विनिर्माण और आईटी का संगम हैं, आईटी पर भारत की अग्रणी बढ़त, विश्व स्तर पर इस स्थान में अग्रणी बनने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सत्यनिष्ठा पर अधिक बल देने की आवश्यकता है। हमारे देश में भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, धोखाधड़ी मौजूद है, जो भारत के आत्मनिर्भर बनने में बाधक है। आज की अत्यधिक प्रतिस्पर्धी दुनिया में,

नैतिक रूप से और सत्यनिष्ठा के साथ जीना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पहले था। जब ऐसा लगता है कि सारी दुनिया झूठ और छल में लिप्त है, तो ईमानदारी को थामे रखना मुश्किल हो सकता है। हालांकि किसी भी लाभ और हानि विवरण पर सत्यनिष्ठा प्रकट नहीं होती है, लेखाकार किसी भी बैलेंस शीट पर अखंडता की गणना नहीं करता है, लेकिन इस आंतरिक गुण को अनदेखा करना महंगा है। **इस संबंध में ड्वाइट डी आइजनहावर (Dwight D Eisenhower) ने कहा कि 'नेतृत्व के लिए सर्वोच्च गुण निर्विवाद सत्यनिष्ठा है। इसके बिना कोई वास्तविक सफलता संभव नहीं है।' आर. बकमिन्स्टर फुलर (R Buckminster Fuller) ने भी इस बात पर प्रकाश डाला कि 'ईमानदारी हर चीज का सार है।'**

यह सब सुनने और पढ़ने में काफी आसान लग सकता है। हालांकि, ईमानदारी के साथ जीना हमेशा आसान नहीं होता है। कभी-कभी, हर कोई आसान रास्ता निकालने, अपने विश्वासों से समझौता करने, अपने मूल्यों को झूठ बोलने के लिए लुभाता है। यदि हम अपने जीवन के हिस्से के रूप में ईमानदारी चाहते हैं, तो हम **डब्ल्यू क्लेमेंट स्टोन (W. Clement Stone) के शब्दों से प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं जिन्होंने कहा था कि 'नहीं कहने का साहस रखें। सच का सामना करने की हिम्मत रखो। सही काम करो क्योंकि यह सही है। ये आपके जीवन को सत्यनिष्ठा के साथ जीने की जादुई कुंजियां हैं।'**

अगर हम वास्तव में पूरे भारत को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं, तो हमें खुद से शुरुआत करनी होगी। आज के समय में प्रत्येक व्यक्ति को संकल्प लेना चाहिए कि वह न तो भ्रष्टाचार करेगा और न ही भ्रष्टाचार का समर्थन करेगा।

सितंबर 1893 में, स्वामी विवेकानंद ने शिकागो, यूएसए में अपने प्रतिष्ठित संबोधन में कहा था कि 'मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूँ जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता पर ही विश्वास नहीं करते बल्कि, हम सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करते हैं।' ये वो भाषण है जिसने पूरी दुनिया के सामने भारत को एक मजबूत छवि के साथ पेश किया।

स्वामी विवेकानंद के विचार और आदर्श करोड़ों भारतीयों, खासकर हमारे युवाओं को प्रेरित कर सकते हैं। उन्हीं से हमें एक ऐसे भारत के निर्माण की प्रेरणा मिलती है जो आत्मनिर्भर, मजबूत, जीवंत, समावेशी और एक ऐसा भारत है जो कई क्षेत्रों में वैश्विक नेतृत्व लेता है।

हमें हमेशा याद रखना चाहिए:

'एक राष्ट्र की ताकत घर की अखंडता से प्राप्त होती है।'



क्रोध: जीवन का सबसे बड़ा शत्रु

— राम नारायण चौधरी, प्रबंधक



अहंकार एवं क्रोध एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। अहंकारी व्यक्ति अपने सामने किसी अन्य को तुच्छ मानने की भूल करता है। जब यह अहंकार किसी एक के प्रति केन्द्रित हो जाता है तो क्रोध का रूप ले लेता है। यह क्रोध हृदय का वह पागलपन (रूप) है जिसकी अग्नि हमारे विवेक, बुद्धि और वर्षों से अर्जित ज्ञान को क्षण भर में स्वाहा कर देती है। उसका परिणाम प्रचण्ड ज्वालामुखी के रूप में उद्भासित हो सकता है, और ज्वालामुखी विस्फोट के परिणाम से हम सब अनभिज्ञ नहीं हैं। हम इतिहास के दर्पण में गोता लगाने का प्रयास करें तो क्रोध के वीभत्स परिणाम हमारी आंखों के सामने चलचित्रों के दृश्य के रूप में एक के बाद एक स्वतः प्रकट होने लगेंगे। रामायण में रावण का क्रोध, दुर्योधन का क्रोध, गौतम मुनि के क्रोध की वजह से अहिल्या का पत्थर में रूपान्तरित होना, चाणक्य का बदले की भावना का क्रोध और हाल ही में भारतीय जनता का भ्रष्ट राजनेताओं व उनकी नीतियों के प्रति क्रोध से उनके अहम को चकनाचूर कर देना।

उनमें से कुछ घटनाओं पर गौर करें तो आपको अहसास होगा कि महाभारत में दुर्योधन के क्रोध ने कौरवों तथा उनकी सेनाओं, जिनमें बड़े-बड़े शूरवीर, ज्ञानी और नीतिकार थे, का सर्वनाश करवा दिया। रामायण में रावण का क्रोध, जो प्रकांड विद्वान और ज्ञानी था, उसके वंश का नाश का कारण बना। गौतम मुनि के क्रोध ने उनकी पत्नी अहिल्या को पत्थर में रूपान्तरित कर दिया। चाणक्य की बदले की भावना का क्रोध नन्दवंश के पतन का कारण बना। अब हम जरा हाल की घटनाओं की तरफ अपना ध्यान को केन्द्रित करें तो पता चलेगा कि असंतुष्टि से उपजै जनता के क्रोध की आग ने अरब देशों के कई पुराने चिरकालीन तानाशाहों का शासन जड़ से उखाड़ फेंका।

भ्रष्ट राजनेताओं की तानाशाही नीतियों, उनके भ्रष्टाचार के समुद्र ने जनता के शांत-चित्त मन में अग्नि सुलगाने का काम किया जो शनै-शनै अन्ना आंदोलन तथा मीडिया के प्रभाव से ज्वालामुखी के मुंहाने के रूप में विस्फोटित हुए। परिणाम हम सबके सामने हैं। दिल्ली तथा केन्द्र में कांग्रेस के संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) की पुरानी सरकार उसमें झुलस कर लगभग राख हो गई। लोकसभा में बड़ी-बड़ी क्षेत्रीय पार्टियां भी धराशायी हो गईं जिनको पुनः पैठ बनाने में वर्षों लग सकते हैं। ऊपर की चंद घटनाओं के वर्णन से यह तो स्पष्ट है कि यूं तो क्रोध का परिणाम ज्यादातर वीभत्स होता है लेकिन सामूहिक तौर पर किये गये क्रोध का कभी-कभी परिणाम सकारात्मक भी होता है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या आपको, हमें गुस्सा और क्रोध आता है? हम मानव हैं। ईश्वर, संत, ऋषि-मुनि भी गुस्से पर नियंत्रण न कर पाये तो क्या हम मानव कर

पायेंगे। अतः गुस्सा आना मानव स्वभाव का अंग है। हमें कभी न कभी क्रोध करना ही पड़ता है, खासकर आज की भौतिकवादी तथा तनावपूर्ण भरी जिन्दगी में, जहां संसाधन की कमी है, अपेक्षाएं तथा इच्छाएं असीमित हैं। क्या हमने इस पर कभी विचार मंथन किया है, कि क्या हमारा क्रोध करना जायज था, क्या हम इसे टाल सकते थे, क्या इसके आने वाले परिणाम (सकारात्मक व नकारात्मक) से हम भिन्न थे, क्या क्रोध आने से पहले, क्रोध को जन्म देने वाले कारकों को समझने की कोशिश की। क्रोध को हम कैसे टाल सकते थे आदि-आदि। गुजरा वक्त (भूत) कभी वापस नहीं आता। छोड़िये जो हो गया, अब पछताये होत का जब चिड़ियां चुग गईं खेत कोई फायदा नहीं। अभी हमारी जिन्दगी काफी पड़ी है। जब भी हमें क्रोध आने की सम्भावना हो तो इन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। काफी अभ्यास के बाद आपके जीवन में, व्यक्तित्व में एक अनोखा निखार आएगा। आपके चिड़-चिड़ेपन तथा क्रोधी स्वभाव की वजह से घर-परिवार, कार्यालय, समाज में जो आप को नफरत की भावना से देखते थे, उनके ही दिलो-दिमाग में आप प्रिय हो जाएंगे।

लोग अक्सर कह देते हैं—“वह बड़ा क्रोधी या गुस्सैल” व्यक्ति है। लेकिन सच तो यह है कि मनुष्य स्वाभावतः क्रोधी नहीं होता। उसके अंदर यह मनोभाव होता जरूर है, किंतु उसे बढ़ावा देती है वे स्थितियां जो उनकी पसंद या चाह या इच्छा के विपरीत होती हैं। किंतु जब कोई मनोविकार बार-बार जागृत होता है और उसकी गहनता भी बढ़ती जाती है तो वह मनोविकार उस व्यक्ति के स्वभाव का अंग बन जाता है, उसकी आदत बन जाता है और यह हमारे मन-मस्तिष्क, व्यवहार और भाषा को प्रभावित करना शुरू करता है। जब क्रोध आता है तो हमारा मस्तिष्क इतना तनाव-ग्रस्त हो जाता है कि सोच नहीं पाता कि क्या अच्छा या क्या बुरा है। हमारा व्यवहार हमारे नियंत्रण से निकल जाता है और हम बड़े से बड़ा अहित कर बैठते हैं जैसे कि ऊपर कुछ उदाहरणों में बताया गया है। क्रोध में हमारा अपनी भाषा पर नियंत्रण समाप्त हो जाता है। इस तरह क्रोध बढ़ते-बढ़ते हमारे लिए विष बनने लगता है। जो लोग लगातार क्रोध करते रहते हैं, उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात-बात में झल्लाना, छोटी-छोटी बातों में उलझना और मारपीट तक कर बैठना क्रोध के ही लक्षण हैं।

वामन पुराण में कहा गया है—

क्रोध प्राणहरः शत्रु क्रोधो मित मुखो रिपुः।

क्रोधोअसिः सुमहातीक्ष्णः सर्व क्रोधो अपकर्षति।।

तपते यतते चैव यच्च दानं प्रयच्छति।

क्रोधेन सर्वहरित तस्मात् क्रोध विवर्जयेत।।



आवास भारती

अर्थात् “क्रोध प्राणनाशक शत्रु है, क्रोध अपरिमित मुखवाला बैरी है, क्रोध बड़ी तेज धार की तलवार है और क्रोध सब कुछ हर लेता है। मनुष्य जो तप, संयम और दान आदि करता है, उन सबको क्रोध नष्ट कर डालता है। अतएव क्रोध का त्याग करना चाहिए।”



एक विचारक ने कहा है “क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है।” इसका कारण है कि क्रोध आने पर यदि हम अपने को नियंत्रण में नहीं रखते हैं, वह हमारी बुद्धि और विवेक को नष्ट कर डालता है। हम उचित-अनुचित का ज्ञान खो बैठते हैं। हमारी मानसिक शांति नष्ट हो जाती है और हम ऐसे काम कर बैठते हैं जो हमें किसी भी दशा में नहीं करने चाहिए। इस प्रकार क्रोध हमारे ऊपर कई बड़े शस्त्रों से आक्रमण करता है।

आपने कथा सुनी ही होगी जिसमें एक महिला अपने प्रिय पालतू नेवले की देख-रेख में नवजात शिशु को घर में अकेले छोड़कर पानी भरने जाती है तथा वापस आने पर घर के दरवाजे पर लहू-लूहान नेवले जिसके मुख में खून लगा होता है को देखकर गुस्से से भड़क उठती है। उसे लगता है कि नेवले ने मेरे शिशु का वध कर दिया तथा गुस्से में वह पानी का घड़ा नेवले के शरीर पर फेंककर नेवले को वहीं मार डालती है। घर के अंदर जाने पर अपने शिशु को सुरक्षित पाकर तथा बगल में मरे विषधारी सर्प को, जिसे नेवले ने ही मारकर शिशु के जीवन की रक्षा की थी, उसे आत्म ग्लानि तथा अफसोस होता है कि इतनी बड़ी भयंकर भूल कैसे हो गई।

शायद उस महिला ने क्रोध करने से पहले अंदर जाकर अपने शिशु को देखने के पश्चात प्रतिक्रिया की होती तो वफादार नेवले को कभी भी नहीं खोती। यह सिर्फ बिना-विचारे तथा क्षण मात्र में क्रोध की चिन्गारी की वजह से लिए गए निर्णय का घातक परिणाम था। क्या हमने कभी सोचा है कि हम रोजमर्रा के जीवन में इसी से मिलती-जुलती घटनाओं का सामना करते हैं और बिना-विचारे क्रोध के आभूषण में जकड़े कई अनहोनियां कर बैठते हैं। किसी के बहकावे में आकर परिवार में, भाईयों,

समाज, अच्छे दोस्तों, कार्यालय में अच्छे कार्यशील कर्मचारियों/अधिकारियों को नफरत से देखते हैं और क्रोध के कारण अपने से दूर कर देता है। वर्षों का गहन प्रेम और श्रद्धा नफरत तथा घृणा में बदल जाती है। इसलिए सबसे बढ़िया सलाह यही है कि जब तक घटनाओं को स्वतः अपनी आंखों से न देखें तथा कानों से न सुन लें तब तक अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें। यह हमारे अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु जीवन के लिए हितकर है क्योंकि क्रोध से हमारे शरीर के रसायन और हार्मोन के स्राव पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

क्रोध से हमें कुछ भी हासिल नहीं होता, बल्कि हम अपना नुकसान कर लेते हैं। क्रोध से हुई हानि कभी सुधर नहीं सकती है। क्रोध, हाथ से फेंके गए पत्थर की तरह है जो न तो परिस्थिति को संवार पाता है और न ही अच्छे फल देता है। बस क्रोध शांत होने पर केवल पछतावा ही शेष रहता है।

पाइथागोरस ने ठीक ही कहा है— “क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चताप पर समाप्त होता है” इसलिए हमें अपने क्रोध पर नियंत्रण पाने का अभ्यास करना चाहिए। जेफरसन का कहना है—“जब क्रोध आये तो दस बार सोचकर बोलो और जब अत्यधिक क्रोध में हो तो हजार बार सोचकर बोलो। एक आदमी का कहना था कि जब मुझ पर कोई क्रोध करता है तो मैं उसकी तरफ ध्यान नहीं देता। उसकी बातों को अनसुना करते हुए मौन धारण कर लेता हूँ। वह आदमी कुछ देर तक क्रोध में बड़बड़ाता रहता है और जब उसकी बक-बक और गुस्से का दूसरे पर कोई असर नहीं होता तो वह चुपचाप चला जाता है। क्रोधी व्यक्ति से बचने का यही सीधा उपाय है।

एक बार एक साधू भिक्षा मांगने किसी के घर गया। घर से निकली महिला भिक्षा देने के साथ-साथ काफ़ी खरी-खोटी, अपशब्द सुनाती रही। वह चुपचाप तब तक सुनता रहा जब तक महिला का गुस्सा शांत नहीं हुआ। शांत होने पर साधू ने महिला से पूछा कि यदि हम भिक्षा नहीं लें तो क्या होगा। महिला का उत्तर—“मेरे पास ही रहेगा, साधू ने कहा ठीक है, आप अपनी भिक्षा मुझे दे दें, अपनी गाली, अपशब्द कृपया करके अपने पास ही रखें। महिला लज्जित होकर साधू के चरणों में गिर पड़ी। हम चाहे तो अपने संतुलित व्यवहार से क्रोध के प्रतिकार की बजाय किसी को भी अपने आप से लज्जित करा सकते हैं क्योंकि हर मानव का विवेक शून्य मात्र नहीं हो सकता। जिसका विवेक शून्य मात्र होगा, उनका नाश सुनिश्चित है।

क्रोध पर विजय पाने के लिए सर्वोत्तम उपाय यह है कि जब ऐसी स्थिति उत्पन्न हो कि क्रोध अपना स्थान बना लेगा या बहस इस मोड़ पर जा रही है कि लोग क्रोध में आकर बातें करने लगेंगे तो उस समय शांति और धैर्य से काम लेना चाहिए। फालतू की बहस से बचना चाहिए। इसलिए अपनी वाणी और भाषा पर नियंत्रण आवश्यक होता है। रहीम ने कहा है —

रहिमन जिह्वा बावरी, कह गई सरग पतार।

आपन तो भीतर गई, जूती खात कपार।



आवास भारती

(अर्थात् रहीम जी कहते हैं जीभ तो पागल है, उल्टा-सीधा, ऊपर-नीचे बोलकर खुद तो मुंह के अंदर चली गई और जूतियां सिर पर पड़ रही हैं।)



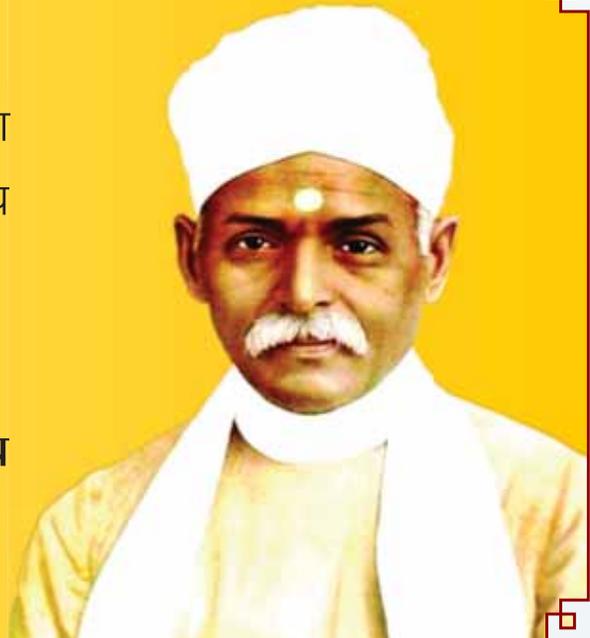
एक चीनी कहावत है कि जिस अग्नि को तुम शत्रु के लिए प्रज्वलित करते हो, वह बहुधा तुम को ही जलाती है। यानि क्रोध से अपना ही व्यक्तित्व, चरित्र, आचरण गर्त में डूबा देते हैं। यह क्रोध सर्वथा तब जायज और उचित हो सकता है, जब क्रोध हम अपनी बुराईयों, घर-परिवार, समाज एवं देश-विश्व की बुराईयों का खात्मा करने के लिए अहिंसक रूप से करें। याद कीजिए, जब अंग्रेजों ने गांधी जी को प्रथम श्रेणी

डिब्बे से धक्का मार कर निकाला तो उन्होंने उन अंग्रेजों पर क्रोध न करके उस व्यवस्था पर क्रोध किया, जो गोरे-काले का भेद करती थी, जो इंसान से इंसान को गुलाम बनाने एवं दूसरों के अधिकार छीनकर जबरदस्ती शासन करने को बढ़ावा देती थी। गांधी जी के इस क्रोध ने जब अहिंसक रूप लेकर पूरे विश्व को हिलाया और इस व्यवस्था के प्रति जो बिगुल फूँका उसके परिणाम को कौन नहीं जानता। आज पूरा विश्व महात्मा गांधी के समक्ष नतमस्तक होता है। जीवन में हर व्यक्ति के व्यक्तित्व में कुछ न कुछ खामियां होती हैं। आप उन की सूची बनाएं तथा देखें की क्या आपको अपनी बुराईयों पर क्रोध आता है क्या आपका क्रोध आपकी बुराईयों को नष्ट कर सकता है ताकि संपूर्ण और स्वच्छ व्यक्तित्व के रूप में आप जाने जाएं। हमारा मानव जीवन क्षणभुंगर है। इसकी हृदय गति कब तथा किस मोड़ पर रूक जाए कोई नहीं जानता। थोड़ा पहले या बाद में। मृत्यु ध्रुव सत्य है। हम अपने क्रोध से लोगों की घृणा के पात्र क्यों बने। प्रत्यक्षतः या परोक्षतः मरने के बाद भी हमें कोई क्यों गाली दे।

अस्तु क्रोध न करें। आत्मनियंत्रण करने का अभ्यास करें। आत्मनियंत्रण से जीवन में कई उपलब्धियां प्राप्त होती हैं। उन्नति की सीढ़ियां चढ़ने से बहुत शक्ति मिलती है। यह निर्णय हमारा ही हो सकता है कि क्या हम आज से ही क्रोध, खासकर बेवजह क्रोध को छोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं तथा घर-परिवार, समाज-देश, कार्यालय में अपने को एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं।

“हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।”

— पंडित मदनमोहन मालवीय





मैं उदास क्यों हूँ।

— अनुपम सैनी, उप प्रबंधक

आजकल मैं जिस किसी भी शख्स से मिलता हूँ और बात करता हूँ तो यह पाता हूँ कि हर शख्स किसी ना किसी वजह से, किसी ना किसी बात को लेकर परेशानी से घिरा हुआ है और मायूस है। मैं देखता हूँ कि जिन्दगी की छोटी-छोटी परेशानियों को हर इंसान दिमाग में लेकर बैठा हुआ है और उदास है।

जिंदगी कितनी व्यर्थ लगने लगी है और लगने लगा है कि बिना किसी मकसद के, बिना किसी अर्थ के बस जिए जा रहे हैं और कई बार तो सिर्फ़ इसीलिए जी रहे हैं क्योंकि मर नहीं सकते।

सबसे पहले तो मैं ये कहना चाहूँगा कि यदि आप उदास हैं तो उसका कारण सिर्फ़ आप हैं। आप सिर्फ़ अपनी वजह से उदास हैं, यदि आप चाहे तो दुनिया में कोई आपको उदास नहीं कर सकता। मैंने इस विषय में गहन चिंतन किया और पाया कि उदासी का सबसे बड़ा कारण वो नकारात्मक विचार हैं जिनको आप अपने मन में पाले बैठे हैं, जो कचरा आपने जमा किया हुआ है और आपके दिमाग में वो है जो आपको उदास कर रहा है परेशान कर रहा है और धीरे धीरे बीमार भी।

कोई इसलिए परेशान है कि उसको वो मुक़ाम नहीं मिल पाया जो वो चाहता था, कोई इसलिए परेशान है कि वो शख्स उसको नहीं मिल पाया जिसको वो चाहता था, कोई अपना दूर चला गया तो उसकी याद में परेशान है, किसी ने धोखा दे दिया तो इसलिए उदास है मायूस हुए बैठा है और जिंदगी को बेरंग किए बैठा है। संभवतया ये ही कारण आपको मिलेंगे घूम फिरके।



आप पूरा दिन सिर्फ़ इसी बारे में सोचते रहते हैं और एक गहन उदासी और निराशा में रहते हैं, जब आप इसमें से कोई भी कारण से अपने आप को उदास

या अवसाद में पाएँगे और चिंतन करेंगे तो सिर्फ़ ये ही निष्कर्ष निकलेगा कि आप निरंतर ये ही नकारात्मक विचार अपने दिमाग में लिए बैठे रहते हैं और इस प्रकार



की सोच ही आपको परेशान करके रखे हुए हैं, मैं इसको नकारात्मक विचार इसलिए बोल रहा हूँ क्योंकि कोई भी विषय या वस्तु जो आपको परेशानी में डालती हो आपका मन विचलित करती हो या आपको शारीरिक या मानसिक आघात पहुँचाती हो वो नकारात्मक ही कहलाएगी।

एक बार अपने आप से पूछ करके देखो, जिसने आपको धोखा दिया, या जो आपको छोड़ के चला गया या जो आपको मिल नहीं पाया क्या वो आपको बोल रहा है कि आप उदास रहो, क्या वो आपको कह कर गया है कि निराश रहो,,, नहीं।। ये आप ही हैं जो अपने आपको निराशा के अंधेरे में धकेल के बैठे हो उनके बारे में सोच सोच कर, क्यों अपने मन में कचरा भर के बैठे हो और इससे हासिल क्या होने वाला है सिवाए दुःख और तकलीफ़ के। ज़रा बाहर निकल करके देखो जीवन कितना सुंदर है, हमारे पास खुश रहने के कितने सारे कारण हैं, तो क्यों हम सिर्फ़ एक दुःख को ही अपने ज़हन में पाले बैठें हैं। ज़रा सोचें कि हमने एक ही चीज़ पर ही अपनी खुशी का केंद्र क्यों बनाया हुआ है जबकि हमारे पास पहले से बहुत सारे चीज़ें हैं जिनसे हमें खुशी मिलती है या मिल सकती है जिनको मैं सकारात्मकता का स्रोत कहूँगा।

कोई भी इंसान इतना ग़रीब कभी नहीं होता कि उसके पास खुश होने का या खुशी पाने का कोई भी ज़रिया ना हो। प्रेम एक ऐसा वरदान है जो कि बहुमूल्य



आवास भारती

है, सबसे पहले प्रेम करना सीखें, सबसे प्यार करें और यकीनन आपको बदले में भी प्यार ही मिलेगा, जिंदगी बहुत सारे अच्छे लोगों से भरी है, अगर एक ने आपको धोखा दे दिया या नहीं मिल पाया तो निराश ना हो, कोई और आपको बेहतर मिलेगा या मिल चुका होगा, बस ज़रूरत है उसको समझने की और जान लेने की या पहचान लेने की, और अच्छे की तरफ अपना ध्यान केंद्रित करने की।

हमारे पास दो विकल्प हमेशा होते हैं...

1. सकारात्मकता का स्रोत
2. नकारात्मकता का स्रोत

ये निर्णय आपको लेना है, ये फ़ैसला आपको करना है, ये आपका चयन है कि आप किस तरफ़ अपने मन को ले जाएँगे, किसको अपने मन में रखेंगे, किस ओर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। यहाँ पर बड़े बुजुर्गों की एक कहावत मेरे ध्यान में आती है जिसको हम बचपन से सुनते आ रहे हैं और जो कि बहुत अर्थ पूर्ण है कि

‘मन एक मन्दिर है’

यकीनन मन एक मन्दिर है, जिसमें परमात्मा रहते हैं, तो अब आप बतायें कि क्या आप उस मंदिर को फूलों से भरेंगे या कचरे से, यहाँ पर एक बात और समझ लेने की है कि मन के ऊपर पहरा देना बहुत आवश्यक है, हमें अपने मन पर पहरेदार बैठना बहुत ज़रूरी है, हमें अपने मन को बुरे और नकारात्मक विचार से बचा के रखना है केवल और केवल सकारात्मक विचार का ही मन रूपी घर अथवा



मंदिर में आवागमन होना चाहिए। हमें हमेशा नकारात्मक विचार और वो लोग जो नकारात्मकता से भरे होते हैं उनसे बचना चाहिए क्योंकि ऐसे लोग आपकी सोच को भी दूषित कर सकते हैं।

जैसे हम अपने घर की सुरक्षा के लिए कुण्डी लगा के रखते हैं वैसे ही हमें मन

के लिए भी एक कुण्डी लगा के रखने की आवश्यकता है। अपनी सोच और सोचने का ढंग आप सही रखें तो बड़े से बड़ा दुःख भी आपको दुखी नहीं कर सकता।

एक बार संत कबीर एक ब्राह्मण परिवार में जहाँ वे अक्सर जाया करते थे, गए, परिवार की जो मुख्य महिला थी उसको उन्होंने बहुत दुखी पाया, उन्होंने पूछा बेटी तुम निराश क्यों हो रही हो, उसने कहा गुरुदेव आप आज आए हो और 2-3 दिन में चले जाओगे और फिर पता नहीं कब आओगे, मैं इस ख्याल में दुखी हो रही हूँ।

ठीक ऐसे ही दूसरे परिवार में जब उनका जाना हुआ तो वहाँ पर उन्होंने पाया कि परिवार की जो मुख्य महिला थी बहुत खुश नज़र आ रही थी और जब वो 2-3 दिन बाद विदा होने लगे तब भी खुश थीं, संत ने पूछा बेटी तुम इतनी खुश कैसे मालूम होती हो तो उस महिला ने कहा गुरुदेव जब आप आए थे तो मैं आपके आने की खुशी में खुश थीं, और अब आप जा रहे हो तो जाने के बाद एक इंतज़ार के बाद फिर से वापस आओगे आपकी प्रतीक्षा में आपके दोबारा आगमन की खुशी रहेगी, इसलिए खुश हूँ। यहाँ पर दो अलग-अलग महिलायें हैं, एक ही कारण से एक महिला दुःखी प्रतीत होती है और दूसरी प्रसन्न।

वो लोग जो व्यापारिक नुकसान से या किसी की नौकरी चली गयी है उस वजह से निराश हैं, उन्हें लगता है कि वो बर्बाद हो गये हैं और अब कुछ नहीं हो सकता उनके लिए मैं ये बात कहना चाहूँगा कि कोई भी इंसान कभी इतना भी बर्बाद नहीं हो सकता कि वो फिर से आबाद ना हो सके, स्मरण रहे कि पतझड़ के बाद ही बसंत आता है, रात के बाद ही दिन होता है, हर दिन एक नया दिन है, चिंतन करें और अपने लिए नयी दिशा खोजें, अपनी काबिलियत पर यकीन करें और विश्वास रखें जब तक आपकी साँस में साँस है तब तक आप बड़े से बड़ा काम कर सकते हैं, सब कुछ संभव है।

जिसके पास कुछ नहीं होता उसे कुछ खोने का डर भी नहीं रह जाता, sky is the limit for you... इस जगत में केवल मुर्दा अपनी किस्मत नहीं बदल सकता, जब तक आप जिंदा हो तब तक यकीन कीजिए आप अपनी किस्मत खुद लिख सकते हो... किसी भी हालात में कभी भी निराश ना होए और ना ही किसी को होने दें। उदासी इंसान को अंदर तक खा जाती है, इससे बचे और सम्भवत दूसरों को भी बचायें।

अतः इस बात से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रसन्न होना आपके विचारों पर निर्भर करता है अतः प्रसन्न रहने के लिए सकारात्मक विचार अत्यंत आवश्यक है। अंत में, मैं आप सभी हमेशा प्रसन्न रहें ऐसी कामना करता हूँ।



भारत में हरित आवास

— नीलोफर, कार्यपालक सहायक (अनुबंधित)

हरित आवास पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ संरचना है, जो प्रकृति के साथ तालमेल बिठाती है, जो अनुरक्षित शुल्क के मामले में कम लागत पर भूमि, सामग्री, ऊर्जा एवं पानी का कुशल उपयोग करती है। हरित आवास ऊर्जा दक्षता को बढ़ाता है, पानी की खपत को सीमित करता है और पुनर्नवीनीकरण, पुनर्चक्रण योग्य और गैर विषैले पदार्थों का अधिकतम उपयोग करता है। यह निर्माण प्रक्रिया के दौरान जितना संभव हो उतना कम कचरा उत्पन्न करता है। हरित आवास में पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करने के एकमात्र उद्देश्य के साथ निर्माण के दौरान एकजुट होने वाले उपाय, संसाधन एवं कौशल शामिल हैं। हरित आवास न केवल इसके निर्माण में बल्कि इसके कामकाज एवं रखरखाव में भी स्थिरता का अनुकूलन करते हैं। हरित निर्माण दीवारों, छतों, अपशिष्ट प्रबंधन, के निर्माण में ज्ञान एवम विशेषज्ञता को एकीकृत करते हैं।

हरित आवास में ऊर्जा एवं जल-कुशलता

ऊर्जा दक्षता एक स्थायी ईमारत की सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों एवं वर्षा जल संचयन के माध्यम से हरित आवास को बिजली तथा पानी के मामले में आत्मनिर्भर होना चाहिए। सौर पैनलों और ऊर्जा-कुशल रोशनी के अलावा, आवास के डिजाइन को दिन के उजाले का इष्टतम उपयोग करना चाहिए और आंतरिक तापमान को नियंत्रित करने के लिए कुशल वेंटिलेशन और पर्याप्त थर्मल द्रव्यमान होना चाहिए। यह सब कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था और एयर कंडीशनिंग की आवश्यकता को कम करता है, जिससे आवास की ऊर्जा खपत कम हो जाती है।



प्रकृति से जोड़ता हरित आवास

अधिकांश हरी ईमारतों में पेड़-पौधों (हरियाली) के लिए जगह होती है, जो लोगों

को प्रकृति से जुड़ने में मदद करती है। इसके अलावा पेड़ वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड को दूर करके, प्रदूषण को अवशोषित करके और ऑक्सीजन का



उत्पादन करके हवा की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। आसपास के पेड़ भी तापमान कम करते हैं।

हरित आवास एवं स्थिरता

हरित आवास कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए मिट्टी, रेत, पत्थर, बांस आदि जैसे स्थानीय और नवीकरणीय सामग्रियों का उपयोग करती हैं। विकास के दौरान उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थों को नई सामग्री में पुनर्नवीनीकरण किया जाता है या पुनः उपयोग हेतु खाद बनायी जाती है। निर्माण के दौरान और बाद में कुशल ठोस अपशिष्ट प्रबंधन बहुत आवश्यक है। हरित आवास के डिजाइन ऊर्जा एवं जल संरक्षण को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। इससे मालिकों को अपने पानी और ऊर्जा बिलों को बचाने में मदद मिलती है। पर्यावरण के अनुकूल घर लंबे समय में और ईमारत के पूरे जीवन चक्र में प्रबंधन हेतु बहुत सस्ते होते हैं, क्योंकि वे प्रकाश और एयर कंडीशनिंग से पानी की आवश्यकताओं और ऊर्जा की खपत को काफी कम करते हैं।

बेहतर स्वास्थ्य

हरित भवनों में रहने वाले लोग कई स्वास्थ्य लाभों का आनंद उठाते हैं, क्योंकि इसके निर्माण में हानिकारक सामग्री का उपयोग नहीं किया जाता है। उदाहरणार्थ, पर्यावरण के अनुकूल निर्माण कंपनियों जैसे उत्पादों से बचती हैं जो जहरीले पदार्थ छोड़ते हैं। इसलिए, पारंपरिक ईमारतों की तुलना में इनडोर वायु गुणवत्ता अक्सर बहुत बेहतर होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, खराब इनडोर वातावरण की गुणवत्ता से जुड़ी श्वसन एवं फेफड़ों की बीमारियां व्यक्ति



आवास भारती

की मृत्यु के शीर्ष पांच कारणों में से तीन हैं। हरी ईमारतों की विशेषताओं का स्वास्थ्य एवं कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शोध से यह भी पता चला है कि जो लोग हरित आवास में कार्य करते हैं वे पारंपरिक ईमारतों में कार्य करने वाले लोगों की तुलना में अधिक खुश, स्वस्थ और अधिक उत्पादक होते हैं। प्राकृतिक वातावरण को आवासों में शामिल करने से निवासियों के मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और सामाजिक कल्याण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

हरित आवास की ओर राष्ट्रीय आवास बैंक की पहल सनरेफ (SUNREF) आवास इंडिया कार्यक्रम

हरित आवास एक विचार है जिसका समय आ गया है। दरअसल, यह पर्यावरण के अनुकूल जीवन जीने की नई शैली है। यह पहली बार नहीं है कि राष्ट्रीय आवास बैंक देश में हरित आवास को बढ़ावा देने के लिये विदेशी फंडों का लाभ उठा रहा है। पाँच साल पहले, राष्ट्रीय आवास बैंक ने जर्मनी के केएफडब्ल्यू के साथ €50 मिलियन की धनराशि के लिये करार किया था। राष्ट्रीय आवास बैंक, एसयूएनआरईएफ कार्यक्रम के माध्यम से, हरित आवास क्षेत्र के लिये बैंकों और आवास वित्त निगमों के माध्यम से वित्तपोषण प्रदान करेगा। €100 मिलियन का ऋण तीन साल की अवधि के लिये उपलब्ध होगा, जो जुलाई 2017 से शुरू हुई है। भारतीय आवास क्षेत्र के विकास की पृष्ठभूमि में जहाँ 2030 तक 70 प्रतिशत आवास इकाईयों का निर्माण किया जाना है, इस परियोजना का उद्देश्य पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करना है। यह ऐसे हरित आवासीय भवनों के विकास को प्रोत्साहित करना चाहता है, जो ऊर्जा, जल और भवन निर्माण सामग्री के उपयोग में अधिक कुशलता प्रदर्शित करते हैं।

आशा और हरि का घर

केरल के कुन्नूर जिले में अवस्थित यह घर पर्यावरण अनुकूल घर के सर्वोत्तम



उदाहरणों में से एक है। यह एक ऐसा घर है जिसमें 40 डिग्री के तापमान में भी ए.सी.-कूलर की बात कौन करें, पंखे की भी जरूरत महसूस नहीं होती। उन्होंने अपने जीवन को प्रकृति से जोड़ लिया है। उनके घर के चारों ओर एक छोटा

जंगल तैयार हो गया है। इस प्रकार के प्रकृति आधारित जीवनशैली का लाभ क्या है? सबसे बड़ा लाभ यह है कि उन्होंने पिछले 17 वर्षों में किसी भी दवा का उपयोग नहीं किया है। इस घर की पर्यावरणीय विशेषताओं में शामिल हैं:



1. मिट्टी की दीवारें जो केरल की स्थानीय जनजातियों के घरों से प्रेरित हैं, इन्हें हम जीवित भी मान सकते हैं क्योंकि ये दीवारें हवा को घर के अन्दर आने और बाहर जाने में सहायता करती हैं। दिन के समय सूरज का ताप धीरे-धीरे घर के अन्दर आता है जिससे घर धीरे-धीरे गर्म होता है, शाम तक घर गर्म हो जाता है और रात में 11 बजे तक गर्म रहता है, उसके बाद धीरे-धीरे ठंडा होता रहता है और यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है।
2. विद्युत का उपयोग कम-से-कम करने का प्रयास किया गया है और पूरे घर में प्राकृतिक रोशनी की व्यवस्था की गई है।
3. सोलर पैनल और बायो गैस का उपयोग किया जाता है।
4. एक सामान्य घर में कम-से-कम 50 यूनिट प्रतिमाह बिजली की खपत होती है जबकि इस घर में केवल 4 यूनिट प्रतिमाह जबकि उनके घर में भी अन्य घरों की तरह सभी घरेलू उपकरण हैं जैसे टी.वी., मिक्सर ग्राइंडर, कम्प्यूटर इत्यादि।

उपरोक्त उदाहरणों के आधार पर हम कह सकते हैं कि एक पर्यावरण अनुकूल घर, एक ऐसा घर है जो ऊर्जा खपत कम करता हो अर्थात् उसका कार्बन फुट प्रिंट बहुत ही कम हो (जो नोवेह के टेक्नोइकोसिस्टम के उलटा काम करता हो), जो पर्यावरण संरक्षण में सहायक हो, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में नहीं बल्कि प्रकृति के साथ मिलकर चलने वाला हो। इस प्रकार के घर न केवल प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करते हैं बल्कि स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी उचित हैं, जो हम आशा और हरि के घर के उदाहरण से समझ सकते हैं।



ई-वेस्ट और प्रदूषण

— मधुमिता, उप प्रबंधक



ई-वेस्ट यानी इलेक्ट्रॉनिक कूड़ा-कबाड़ से आज पूरी दुनिया में एक बहुत बड़ी समस्या पैदा हो गई है। साइबर क्रान्ति की देन ई-वेस्ट पर्यावरण के लिए किसी गन्दे पानी, रसायन से ज्यादा खतरनाक है। विकसित देश अपने ई-जंक को विकासशील एवं गरीब देशों में खपा रहे हैं इससे वहाँ के वातावरण के लिए खतरा पैदा हो गया है। साइबर क्रान्ति की इस दौड़ में हम भी काफी तेजी से दौड़ रहे हैं, लेकिन अब जरूरत है इस खतरे की तरफ ध्यान देने की यानी इलेक्ट्रॉनिक प्रदूषण से बचाव की।

आईटी के क्षेत्र में हो रही दिन दूनी-रात चौगुनी तरक्की यों तो कल्याणकारी है परन्तु इसने एक तकनीकी और व्यावहारिक समस्या भी खड़ी कर दी है। यह परेशानी है पुराने कम्प्यूटरों के बढ़ते अम्बार की। दरअसल बाजार में हर रोज नई-नई खूबियाँ और ज्यादा से ज्यादा मेमोरी वाले कम्प्यूटर के आ धमकने से ज्यादा पुराने कम्प्यूटरों को लोग यों त्याग रहे हैं जैसे पुराने कपड़े। मजे की बात यह है कि लाख ढूँढ़ने पर भी इन पुराने कम्प्यूटरों के खरीदार नहीं मिलते, इसलिए पश्चिमी देशों में लोग मजबूर होकर इन्हें कूड़े-कचरे के ढेर के हवाले कर देते हैं या फिर फूँकने के लिए आधुनिक संयंत्रों को सौंप देते हैं। परन्तु पुराने कम्प्यूटर से पीछा छुड़ाने के ये दोनों ही तरीके पर्यावरण के लिए गम्भीर खतरा है। वजह यह कि पुराने कम्प्यूटरों में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक कई धातुएँ मौजूद होती हैं, जैसे-लेड या सीसा, कैडमियम, मर्करी या पारा आदि। अमेरिका की पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी ने कम्प्यूटरों के कबाड़ को एक तेजी से उभरता हुआ पर्यावरणीय खतरा बताया है।



विशेषज्ञों के अनुसार यदि हर साल 'रिटायर' होने वाले कम्प्यूटरों को ढेर की शक्ल में खड़ा किया जाए तो शायद इसकी ऊँचाई एवरेस्ट पर्वत को चुनौती देने

लगे। अनुमान है कि अकेले अमेरिका में सन् 2007 तक लगभग 50 करोड़ कम्प्यूटर दम तोड़ चुके होंगे।

इस समस्या से निपटने के लिए दुनिया भर में तैयारी चल रही है। जिसके तहत पुराने पीसी के विभिन्न हिस्सों को दुबारा उपयोग में लाने की योजना है। फिलहाल पुर्नउपयोग की दर केवल 10 फीसदी है, जो अपेक्षाओं से बहुत कम है। यूरोपियन यूनियन ने एक नियम पारित कर सभी कम्प्यूटर निर्माताओं के लिए सन् 2008 तक कम्प्यूटर का पुर्नउपयोग करना अनिवार्य कर दिया है। दूसरी ओर अमेरिका में कई कम्पनियाँ स्वयं ही इस ओर पहल कर रही हैं। आईबीएम कम्प्यूटर के पुर्नउपयोग कार्यक्रम के तहत उपभोक्ता से 30 डॉलर का शुल्क लेकर उसके कम्प्यूटर का पर्यावरण हितैषी निपटान करती है। इसके लिए कम्पनी ने न्यूयार्क के बाहरी हिस्से में एक विशाल कबाड़खाना बनाया है। यहाँ दिन-रात कम्प्यूटर की तोड़-फोड़ कर उससे मूल्यवान धातुएँ, पदार्थ आदि अलग किए जाते हैं। अनुमान है कि यहाँ हर साल कोई पौने दो करोड़ किलोग्राम कम्प्यूटरों को ठिकाने लगाने का काम किया जाता है।

परन्तु पुराने कम्प्यूटरों को निपटाने का धन्धा कचरे से कंचन बनाने जैसा है। कम्प्यूटर के कबाड़ में सोने-चाँदी जैसी कई मूल्यवान धातुएँ छिपी रहती हैं। उदाहरण के तौर पर पेंटियम तथा प्रोसेसर के सिरे सुनहरे होते हैं। ताम्बे और फाइबर ग्लास से बने कम्प्यूटर के मुख्य सर्किट बोर्ड में चाँदी और सोने के कनैक्टर्स लगे होते हैं। कम्प्यूटर के फ्रेम से कोई ढाई किलोग्राम मजबूत स्टील हासिल हो सकती है और प्लास्टिक के बाहरी खोल से रोजमर्रा के उपयोग की तमाम वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं। यही कारण है कि विकासशील देशों में इलेक्ट्रॉनिक कचरे को चुनने के लिए वहाँ के लोग अपने स्वास्थ्य को ताक पर रख देते हैं।

पर्यावरण विशेषज्ञों ने पाया कि पुरुषों, महिलाओं और बच्चों तक सभी लोग बेखौफ होकर इन कम्प्यूटर अवशेषों के ढेर में से तार खींच-खाचकर रात को जलाते रहते हैं और हवा में प्रदूषण फैलाते रहते हैं और वातावरण में कैंसर फैलाने वाला धुंआ घोलते रहते हैं।

यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि एक तरफ तो उच्च तकनीक सभ्यता से बनी इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं और उपकरणों को कूड़ा-कचरा वातावरण में इतनी बुरी तरह जहर घोलते हैं, जिससे हममें से अधिकांश लोग अनजान हैं। यह इलेक्ट्रॉनिक कूड़ा पर्यावरण में इतनी बुरी तहर जहर घोलता है कि पीने के पानी को विषाक्त



बनाने के साथ-साथ बच्चों की सेहत पर बुरा असर डालता है। बच्चों में जन्मजात विकलांगता आती है। मछलियों से लेकर वन्य जीवों का जीवन भी प्रभावित होता है तथा गर्भपात और कैंसर का कारण पैदा करता है। कम्प्यूटरों में आमतौर पर ताम्बा, इस्पात, एल्युमिनियम, पीतल और भारी धातुओं जैसे— सीसा, कैडमियम तथा चाँदी के अलावा बैटरी, काँच और प्लास्टिक वगैरह का इस्तेमाल किया जाता है। विडम्बना यह है कि विकसित देशों द्वारा यह तमाम इलेक्ट्रॉनिक कचरा विकासशील देशों अथवा अल्प विकसित देशों में लाकर पटक दिया जा रहा है।

बहरहाल, मुद्दा यह है कि इस इलेक्ट्रॉनिक कूड़े-कचरे को हम ई-वेस्ट/ई-जंक/ई-गारबेज जैसा कोई भी नाम दें, लेकिन जरूरत है इस पर ध्यान दिए जाने की। कम्प्यूटर एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में एक हजार से भी ज्यादा ऐसे पदार्थ रहते हैं जो बहुत अधिक नुकसान पहुँचाते हैं। मिसाल के तौर पर क्लोरीन और ब्रोमीनयुक्त पदार्थ, विषैली गैसों, विषैली धातुएँ फोटोएक्टिव और जैविक सक्रियता वाले पदार्थ, अम्ल और प्लास्टिक वगैरह। हाल ही में पाए गए सबूतों से पता चलता है कि कम्प्यूटर की रिसाइक्लिंग का काम करने वालों के खून में बहुत ज्यादा मात्रा में खतरनाक रसायन मौजूद रहते हैं। 1998 में अकेले अमेरिका में ही 21 मिलियन पर्सनल कम्प्यूटर बेकार पड़े रह गए थे, और सन् 2004 तक इनकी संख्या 300 से 600 मिलियन तक हो जाने की सम्भावना है। और स्थिति यह है कि इनमें से केवल 10 प्रतिशत की ही रिसाइक्लिंग हो सकती है, जबकि सारा माल गोदाम या गैरेजों में जमा पड़ा रहता है जिसे विदशों में ले जाकर पटक दिया जाता है।

सेल फोन का चलन बहुत तेजी से चला हुआ है और इसका कूड़ा-कचरा एक और तरह का इजाफा करेगा। इस समस्या में इससे मुश्किलें और बढ़ जाएगी, जबकि एक खतरा यह भी नजर आ रहा है और वह है— विकसित देशों की यह प्रवृत्ति कि खराब या स्तरहीन इलेक्ट्रॉनिक सामानों को गरीब देशों में सस्ते दामों पर बेच दिया जाए।

मोबाइलों के ई-कचरे से पर्यावरण को संकट

इलेक्ट्रॉनिक चीजों को बनाने के उपयोग में आने वाली सामग्रियों में ज्यादातर कैडमियम, निकेल, क्रोमियम, एंटीमोनी, आर्सेनिक, बेरिलियम और मरकरी का इस्तेमाल किया जाता है। ये सभी पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए घातक हैं। इनमें से काफी चीजें तो रिसाइकल करने वाली कंपनियां ले जाती हैं, लेकिन कुछ चीजें नगर निगम के कचरे में चली जाती हैं। वे हवा, मिट्टी और भूमिगत जल में मिलकर जहर का काम करती हैं। कैडमियम से फेफड़े प्रभावित होते हैं, जबकि कैडमियम के धुएँ और धूल के कारण फेफड़े व किडनी दोनों को गंभीर नुकसान पहुंचता है। एक कम्प्यूटर में प्रायः 3.8 पौंड सीसा, फासफोरस, कैडमियम व मरकरी जैसे घातक तत्व होते हैं, जो जलाए जाने पर सीधे वातावरण में घुलते हैं। इनका

अवशेष पर्यावरण के विनाश का कारण बनता है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण संगठन 'ग्रीनपीस' के एक अध्ययन के अनुसार 49 देशों से इस तरह का कचरा भारत में आयात होता है। तमिलनाडु में सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार ने ई-कचरे के रूप में पर्यावरण के लिए गंभीर संकट पैदा कर दिया है। रायों में जहां-जहां सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी कंपनियों द्वारा लगातार अपने ठिकाने बनाए जाने से ई-कचरे का संकट व्यापक रूप लेता जा रहा है।

भारत की सिलिकॉन वैली के रूप में मशहूर आई.टी. शहर बंगलौर में ई-वेस्ट यानी इलेक्ट्रॉनिक कचरे की समस्या गंभीर होती जा रही है। इससे निकलने वाले हानिकारक रसायन न सिर्फ मिट्टी को दूषित कर रहे हैं बल्कि भू-जल को भी जहरीला बना रहे हैं। ई-कचरे ने पर्यावरण के लिए खतरा पैदा कर दिया है। खासतौर पर राजधानी चेन्नई के मूर मार्केट त्रिशुलम और रेडहिल समेत कई अन्य इलाकों में ई-कचरे का ढेर बढ़ता जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने वाली एक स्वैच्छिक संस्था के प्रोग्राम अधिकारी ने बताया कि बेकार पड़े इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को तोड़ने और बिनने के काम में लगे लोगों को इस बात का तनिक भी अंदाजा नहीं है कि ये उपकरण उनके स्वास्थ्य के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी कितने खतरनाक हैं। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण सेमीकंडक्टर तकनीक से बनाए जाते हैं। इनमें ऊर्जा स्रोतों को लघु से लघुतम करने, परम्परागत धातु तांबे के साथ ही सिलिकॉन, कैडमियम, सीसा, क्रोमियम, पारा व निकल जैसी भारी धातुओं का उपयोग किया जाता है। वैज्ञानिकों के अनुसार पर्यावरण में असावधानी व लापरवाही से इस कचरे को फेंका जाता है, तो इनसे निकलने वाले रेडिएशन शरीर के लिए घातक होते हैं। इनके प्रभाव से मानव शरीर के महत्वपूर्ण अंग प्रभावित होते हैं। कैंसर, तंत्रिका व स्नायु तंत्र पर भी असर हो सकता है।

क्या है नियम — केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने ई-कचरे के समुचित प्रबंध एवं निपटाने के लिए खतरनाक कचरा प्रबंधन, रखरखाव एवं सीमापार यातायात नियम 2008 बनाए हैं। नियमों के अनुसार ई-कचरे के निपटारे में इकाईयों की केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में पंजीकृत होना जरूरी है। शहरों में कबाड़ी ही कम्प्यूटर, मोबाइल व इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं को कबाड़ के रूप में खरीद रहे हैं। वे इस कचरे में से मतलब की उपयोगी वस्तुओं को निकालकर खतरनाक अपशिष्ट को खुले में फेंक देते हैं। इसमें से निकलने वाले हानिकारक रेडिएशन लोगों के जीवन के लिए खतरा बन सकते हैं। इसके निपटान व नियंत्रण के लिए जिम्मेदार प्रदूषण बोर्ड के अधिकारी दो साल बीतने के बाद भी लापरवाह बने हुए हैं। ई-कचरे को खरीदने के लिए नियमानुसार प्रदेश के प्रदूषण बोर्ड द्वारा अनुमति लेने के बाद केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड द्वारा पंजीयन कराना होता है। बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार अभी तक किसी को भी इस तरह के कचरे को खरीदने के लिए अधिकृत नहीं किया है।



आवास भारती

प्रस्तावित नियम – इलेक्ट्रॉनिक व इलेक्ट्रिक वस्तुओं की उपयोग की उम्र निपटान की जिम्मेदारी उत्पादक संस्थान की होगी। उत्पादक के लिए ही नहीं, अपितु इस तरह के कचरे के पुर्नचक्रण व निपटान के लिए जिम्मेदार संस्थाओं पर भी सही



तरीके से निपटान के लिए यह नियम लागू होगा। उपकरणों के खराब व अनुपयोगी होने पर उपयोगकर्ता की भी जिम्मेदारी होगी।

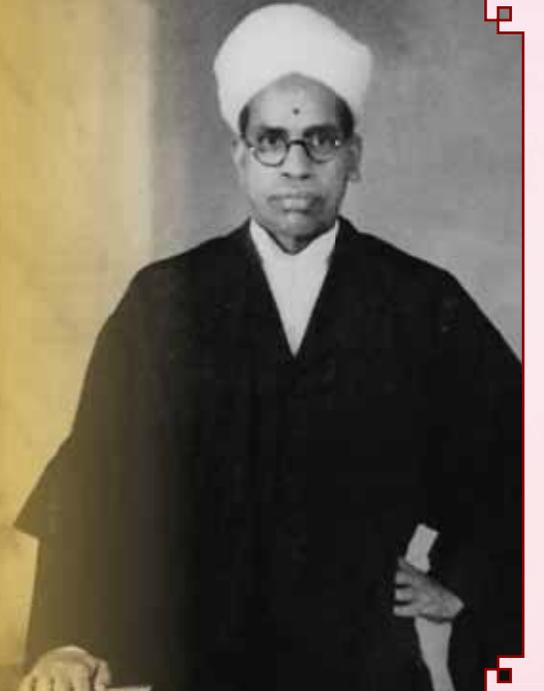
कड़े नियम जरूरी – अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेसल कन्वेंशन के अंतर्गत इलेक्ट्रॉनिक कचरे संबंधी नियमों का पालन होता है। चीन ने अपने यहाँ ई-कचरे आयात करने पर रोक कुछ महीने पहले ही लगाई है। हांगकांग में बैटरियाँ व कंथोड़ रे ट्यूब

का आयात नहीं किया जा सकता। इसके अलावा दक्षिण कोरिया, जापान व ताईवान ने यह नियम बनाया है कि जो भी कंपनियाँ इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद बनाती हैं वे अपने वार्षिक उत्पादन का 75 प्रतिशत रिसाइकल करें। वहीं भारत की बात की जाए तो अभी ई-कचरे के निपटान व रिसाइकलिंग के लिए कोई प्रयास ही शुरू नहीं हुए। देश में तेजी से बढ़ रही कम्प्यूटर व इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की संख्या से भी अब इस तरह के नियम-कायदे बनाना जरूरी हो गया है। सरकार और सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग को इस खतरे से निपटने के लिए तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

बहरहाल, विकसित देशों और विकासशील देशों में भी अब इस खतरे के प्रति जागरुकता आने लगी है और भविष्य में इस पर्यावरण के खतरे को कम करने के उद्देश्य से विभिन्न उपायों के बारे में विचार किया जा रहा है। यूरोपीय पार्लियामेंट इस पर अपने तरीके से नियन्त्रण कायम करने की पहल में लगा है। ऐसी व्यवस्था की जा सकती है कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के उत्पादकों, निर्माताओं द्वारा इन उपकरणों में खराबी आ जाने के बाद निःशुल्क वापस ले लिया जाए। निर्माण तकनीकों और रिसाइकलिंग का काम यथासम्भव बन्द कमरों या परिसरों में किया जाए। भारत जैसे देश में जहाँ पहले से ही पॉलीथीन के कचरे ने गम्भीर समस्या पैदा कर रखी है वहाँ अभी इसे इस इलेक्ट्रॉनिक कूड़े से उत्पन्न होने वाले खतरे पर नियन्त्रण की कोशिश तुरन्त शुरू कर दी जानी चाहिए।

“समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।”

– जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर





आवास ऋण के विकल्प

— आदित्य शर्मा, सहायक महाप्रबंधक



रोटी, कपड़ा और मकान यह हमेशा से हमारी बुनियादी जरूरत रही है। रोटी और कपड़ा की बात करें तो यह पहले की तुलना में थोड़ी महंगी तो हुई है लेकिन इसकी उत्पादन और उपलब्धता भी पहले के मुकाबले काफी बढ़ी है। इसलिए इस क्षेत्र में मांग और आपूर्ति का संतुलन उतना नहीं बिगड़ा है जितना मकान के मामले में हुआ है। शुरुआती दौर में ग्रामीण व्यवस्था, कृषि पर निर्भरता और संयुक्त परिवार होने के कारण लोगों को अपने अलग मकान होने की उतनी जरूरत महसूस नहीं होती थी। लेकिन जैसे-जैसे कृषि उत्पादन दर में और जनसंख्या बढ़ने के साथ जमीन का आकार छोटा होता गया, वैसे-वैसे बेरोजगारी बढ़ने लगी। ऐसे में जब इंग्लैंड से शुरु हुई औद्योगिक क्रांति भारत तक पहुंची तो एक नई व्यवस्था ने जन्म लिया जिसे हम शहरी व्यवस्था कहते हैं। इन शहरों में कल-कारखाने लगने लगे और लोग रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने लगे। शहरों में कल-कारखाने तो खुल गए लेकिन सही मायने में ये शहर इतनी बड़ी आबादी को रखने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं थे। लोगों को नौकरी तो मिल गई लेकिन रहने के लिए छत की कमी महसूस की गई। फिर किराया आवास की शुरुआत हुई। लेकिन यहां भी कई परेशानियां थी। ऐसे में लोग अपने-अपने परिवार के साथ अलग-अलग रहने लगे। अब संयुक्त परिवार व्यवस्था की जगह एकल परिवार ने ले ली। अब जब परिवार टूटे तो उन सबको अपने लिए मकान की जरूरत महसूस हुई। वे अब शहर में भी अपना मकान चाहने



लगे। शुरुआत में तो इसमें उतनी परेशानी नहीं हुई लेकिन जैसे-जैसे शहरों में आबादी बढ़ने लगी वैसे-वैसे जमीन घटने लगी और 1990 के दशक के

उदारीकरण के साथ भारत के महानगर आवास की समस्या से जुझने लगे। अब मकानों की जगह अपार्टमेंट, फ्लैटों ने ले ली। इस क्षेत्र में मुनाफा देख लोगों ने इसमें पैसे लगाने शुरु कर दिए और संपत्ति के दाम आसमान को छूने लगे। आज आलम यह है कि अगर आप दो कमरे का मकान भी खरीदने जाएं तो दिल्ली तो छोड़िए इसके आसपास के क्षेत्र जैसे कि आनंद विहार, फरीदाबाद जैसे शहरों में इनकी कीमत लाख से नीचे नहीं है। ऐसे में समस्या यह है कि अगर आप अपनी कमाई से घर खरीदना चाहें तो यह मुमकिन ही नहीं रह गया है। ऐसे में सबसे बेहतर विकल्प यही है कि आप मकान खरीदने के लिए बैंक से ऋण लें। ऐसे में एक विकल्प यह है कि आप मकान खरीदने के लिए बैंक से ऋण लें। आज कल प्रायः बैंक आवास ऋण दे रहे हैं। लेकिन इससे भी कई पेचीदगी है आवास ऋण पर ब्याज दर क्या है? किस बैंक से लोन लेने पर आपको कम बोझ पड़ेगा या फिर क्या आप उसके लिए पात्र हैं भी या नहीं। ये कुछ ऐसे सवाल हैं जिनका उत्तर मिल भी जाए तो एक सवाल यह है कि बाजार में किस तरह के आवास ऋण विकल्प मौजूद हैं। आवास ऋण में आपके पास चुनने के लिए फिक्स्ड, फ्लोटिंग और हाईब्रिड लोन प्रोडक्ट मौजूद होते हैं।

स्थिर आवास ऋण — इसमें आपको ऋण (लोन) की अवधि में एक समान ब्याज देना होता है, चाहे ब्याज दरें बढ़ें या घटें। इसमें उधारकर्ता भविष्य में कैसे भुगतान करता है इसकी सटीक गणना कर सकता है। अधिकतर ऋणकर्ता पूरे ऋण अवधि के लिए इसी विकल्प को पसंद करते हैं वह बाजार पर निर्भर नहीं रहना चाहते।

अस्थिर आवास ऋण — इसमें आपको बाजार में मौजूदा ब्याज दरों के हिसाब से ब्याज देना होता है यानी दरें बढ़ीं तो आपकी ई.एम.आई. भी बढ़ेगी। लेकिन कई विशेषज्ञों का मानना है कि जहां अस्थिर आवास ऋण कुछ मायनों में स्थिर आवास ऋण से बेहतर है। इसमें कई बार ईएमआई बाजार के हिसाब से काफी कम भी हो सकता है लेकिन यह कब तक और कितना होगा यह बाजार पर ही निर्भर करता है।

हाईब्रिड आवास ऋण — यह फिक्स्ड और फ्लोटिंग का मिश्रण होता है। जहां शुरुआत के कुछ सालों के लिए तो आपकी ब्याज दरें स्थिर रहती हैं लेकिन बाकी समय के लिए वे फ्लोटिंग हो जाती हैं।



आवास भारती

अब सवाल यह है कि क्या चुना जाए। अब यह आपको तय करना है कि आपके लिए कौन-सा ऋण (लोन) अच्छा रहेगा। यदि आप भविष्य में ब्याज दरों में बढ़ोतरी से बचना चाहते हैं तो आपको स्थिर आवास ऋण लेना चाहिए। आमतौर



पर स्थिर आवास ऋण मौजूदा ब्याज दरों से 1-2 फीसदी तक महंगा होता है। लेकिन इसे एक निश्चिंतता होती है।

स्थिर ऋण लेते वक्त आपको उसके साथ जुड़े रीसेट क्लॉज पर ध्यान देना होगा जो बैंक को एक अवधि के बाद आपकी स्थिर ब्याज दर को भी बदलने का अधिकार देता है। आम तौर पर हर स्थिर ऋण (लोन) में पुनर्निवास शर्त होती है। ऐसे में आप उस बैंक का लोन चुनें जिसमें पुनर्निवास शर्त कम से कम 3 साल हो यानी आपकी स्थिर ऋण की दरों में किसी तरह का बदलाव कम से कम तीन साल बाद ही हो।

इसी तरह यदि आप 3 से 5 साल की छोटी अवधि के लिए आवास ऋण लेना चाहते हैं तो अस्थिर आवास ऋण आपके लिए अच्छा विकल्प रहेगा लेकिन यहां ऋण (लोन) लेने से पहले आप कुछ बैंकों के बेस रेट की तुलना कर यह जरूर जान लें कि इन्होंने बीते वक्त में कितनी बार रेट बढ़ाए या घटाए हैं क्योंकि कई बार ऐसा होता है कि हम विज्ञापन और मौजूदा कम कीमत की लालच में उस बैंक से ऋण तो ले लेते हैं लेकिन बाद में उच्च ब्याज चुकाना पड़ सकता है।

इसके अलावा बैंक की पुनर्वितीयन, स्विचिंग या समय पूर्व भुगतान की शर्तों को जानना भी जरूरी है। बैंक की आपटर सेल्स सर्विस के बारे में भी पता लगाएं। इसके अलावा बिल्डर को सीधा ऋण संवितरित न करवाएं ताकि भविष्य में किसी भी तरह की दिक्कत आने पर नियंत्रण आपके हाथ में ही रहे।

जबकि आप अपने लिए एक घर ले रहे हैं तो आवास ऋण लेते समय छोटी-छोटी बात पर ध्यान देना लाजमी है। वरना एक छोटी सी चूक भविष्य में आपके लिए

कष्टदायक हो सकती है इसलिए आवास ऋण के बारे में आपको जागरूक रहना चाहिए। इसकी ब्याज दर या अवधि में परिवर्तन के बारे में आपको तुरंत पता चलना चाहिए। जब बेस रेट शुरू किए गए थे तो आवास ऋण ग्राहकों ने सोचा था कि अब उन्हें अपने बैंकों से अधिक पारदर्शी सौदे मिल सकेंगे। हालांकि अभी भी अनेक बैंक पुराने तथा नए ग्राहकों के बीच भेदभाव करते हैं और पुराने ग्राहकों से अधिक ब्याज दर वसूलते हैं जबकि नए ग्राहकों को अपेक्षाकृत कम ब्याज दरें ऑफर की जाती हैं। यदि आपका बैंक आपसे ऊंची ब्याज दर वसूल रहा है तो आपको अपने बैंक से इन नए ग्राहकों के समान ब्याज दर में परिवर्तित करने को कहना होगा। बैंक भी ग्राहकों से मोलभाव करने में इच्छा दिखाते हैं खासकर जब ग्राहक समय पर किस्तें अदा करता रहा हो। यदि बैंक आपकी बात मानने से इंकार करे तो अपना आवास ऋण दूसरे बैंक में शिफ्ट करने की हल्की-सी धमकी भी कई बार कमाल कर सकती है।

अवधि कम करवाएं, न कि किस्त

आवास ऋण पर ब्याज दर के कम होने पर किस्त की रकम को कम करवाने की गलती न करें। बेशक यह काफी लुभावना लगे क्योंकि इससे हर महीने आपकी जेब से जाने वाली रकम कम हो जाती है परंतु छोटी किस्त का मतलब है लोन की लम्बी अवधि तथा ब्याज की ऊंची दर। आपकी कोशिश होनी चाहिए कि आप ऋण की अवधि को ही कम करें। यदि आपको वास्तव में किस्त अदा करने में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा हो तो ही किस्त कम करवाएं। यह भी पता कर लें कि ब्याज की जो नई दर आपको ऑफर की जा रही है वह बैंक के बेस रेट से जुड़ी है या नहीं। सुनिश्चित कर लें कि यह वह प्रमोशनल रेट न हो जो नए ग्राहकों को ऑफर किया जा रहा है। बैंक 'नए ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उन्हें कम ब्याज दर पर आवास ऋण ऑफर करते हैं जिससे 2-3 साल बाद बढ़ा दिया जाता है। चूंकि आम तौर पर आवास ऋण 10 से 15 साल या अधिक की अवधि के लिए होते हैं, लोन पर प्रदान किए जा रहे अल्पकालीन लाभों से ही संतुष्ट न हों। लोन एग्रीमेंट में स्पष्ट रूप से लिखा होना चाहिए कि बैंक के ब्याज के बेस रेट तथा आपको ऑफर किए जा रहे ब्याज की दर के बीच कितना अंतर है। कम शब्दों में कहा जाए तो जिस प्रकार आप अपने घर को सजाने के लिए हर एक छोटी बात का ध्यान रखते हैं। वहां पर कौन सी चीज सही लगेगी, वहां कौन सा सामान रखना है। तो फिर उस घर को खरीदने में छोटी से छोटी बात को कैसे नजरअंदाज कर सकते हैं। इसलिए आवास ऋण लेते समय भी सभी बारीकियों पर ध्यान दें और अपने सपनों का घर खरीदे।



डिजिटल इंडिया - प्रारूप एवं अर्थव्यवस्था में इसकी उपयोगिता

— धीरज कुमार, प्रबंधक

भारतीय नागरिकों को सशक्त बनाने एवं सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के उद्देश्य हेतु भारत सरकार द्वारा अनेकों कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया

गया है जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य, शिक्षा, श्रम, रोजगार, एवं वाणिज्य आदि से संबंधित क्षेत्रों में सेवाओं का विस्तार किया गया है। इसी संदर्भ में सशक्त एवं प्रभावी बनाने हेतु भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की घोषणा की गयी है। डिजिटल इंडिया भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञानपूर्ण अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के रूप में परिकल्पना की गई है। ज्ञानपूर्ण अर्थव्यवस्था बनाने के लिए समस्त सरकार की समकालिक और समन्वित भागीदारी द्वारा प्रत्येक नागरिक के लिए सुशासन लाने के उद्देश्य से इस अकेले कार्यक्रम के अधीन विभिन्न पहलों को शामिल किया गया है।

यह कार्यक्रम इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों विभागों और/सरकारों के सहयोग से तैयार और समन्वित किया गया है। प्रधानमंत्री डिजिटल इंडिया की निगरानीराज्य समिति के अध्यक्ष हैं, इसलिए डिजिटल इंडिया के अधीन गतिविधियों पर सावधानीपूर्वक निगरानी की जा रही है। सभी वर्तमान और आगामी ई शासन पहलों को डिजिटल इंडिया के सिद्धांतों के अनुसार संशोधित तैयार किया गया है। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के विजन का उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक्स सेवाओं, उत्पादों, विनिर्माण और रोजगार के अवसरों आदि के क्षेत्रों का विकास करने का भी है।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में परिणत करना है। यह 7 अगस्त, 2014 को डिजिटल इंडिया कार्यक्रम पर प्रधानमंत्री की बैठक के दौरान कार्यक्रम के प्रारूप पर लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों का अनुपालन और सरकार के सभी मंत्रालयों को इस विशाल कार्यक्रम के प्रति जागरूक करने के लिए है जो सरकार के सभी क्षेत्रों पर रोशनी डालती है।

यह कार्यक्रम वर्तमान वर्ष से 2018 तक चरणबद्ध तरीके से कार्यान्वित किया जाएगा। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम परिवर्तनकारी प्रकृति का है जो यह सुनिश्चित करेगा की सरकारी सेवाएं इलेक्ट्रॉनिक रूप से नागरिकों के लिए उपलब्ध है। वर्तमान में अधिकतर ई-गवर्नेंस परियोजनाओं के लिए धन का स्रोत केन्द्रीय या राज्य सरकारों में संबंधित मंत्रालयों/विभागों के बजटीय प्रावधानों के माध्यम से होता है। डिजिटल इंडिया की परियोजना(ओं) के लिए धन की आवश्यकताओं का

आकलन संबंधित नोडल मंत्रालयों/विभागों द्वारा किया जाएगा।

डिजिटल इंडिया के कार्यान्वित क्षेत्र

डिजिटल इंडिया का विजन तीन मुख्य क्षेत्रों पर केन्द्रित है

- डिजिटल बुनियादी ढांचा प्रत्येक नागरिक की उपयोगिता के रूप में।
- मांग पर शासन एवं सेवाएं।
- नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण।

उपरोक्त विजन के साथ डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का उद्देश्य ब्रॉडबैंड हाईवे, मोबाइल जुड़ाव के लिए वैश्विक पहुंच, सार्वजनिक इंटरनेट पहुंच कार्यक्रम, शासन, ईक्रांति आपूर्ति की जानकारी सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण आयात शून्यलक्ष्य, रोजगार के लिए सूचना प्रौद्योगिकी और शीघ्र हार्वेस्ट कार्यक्रम उपलब्ध कराने का है।

- एक महत्वपूर्ण उपयोगिता के रूप में उच्च गति का इंटरनेट सभी ग्राम पंचायतों में उपलब्ध कराया जाएगा।
- जीवन से मृत्यु तक डिजिटल पहचान – अद्वितीय, आजीवन, ऑनलाइन और प्रमाणिक मोबाइल फोन और बैंक खाता व्यक्तिगत स्तर पर डिजिटल और वित्तीय प्रक्षेत्र में भाग लेने के लिए सक्षमता प्रदान करेगा।
- उनके इलाके में कॉमन सर्विस सेंटर खोला जाएगा।
- पब्लिक क्लाइड पर साझा करने योग्य निजी जगह।
- देश में निरापद और सुरक्षित साइबर-स्पेस।

इस कार्यक्रम का समग्र कार्य-क्षेत्र:

- भारत को एक ज्ञान भविष्य के लिए तैयार करना
- परिवर्तन को साकार करने के लिए महसूस करना – आईटी (इंडियन टैलेंट), आईटी (इंफोर्मेशन टेक्नोलॉजी) आईटी (इंडिया टुमोरो)
- परिवर्तन को सक्षम करने के लिए प्रौद्योगिकी को केन्द्रीय बनाना



आवास भारती

- एक शीर्ष कार्यक्रम बनना जो कई विभागों तक पहुंचे

यह एक बड़ी संख्या में विचारों और सोचो को एक एकल और व्यापक दृष्टि में पिरोता है जिससे उनमें से प्रत्येक को एक बड़े लक्ष्य के हिस्से के रूप में देखा जा सके। इस कार्यक्रम का प्रत्येक अंश अपने आप में पूर्ण है साथ ही वह एक बड़ी तस्वीर का हिस्सा है। एक साथ जोड़ने पर यह समग्रता में मिशन को परिवर्तनकारी बना देता है।

- डिजिटल इंडिया कार्यक्रम में कई मौजूदा योजनाओं को पुनर्गठित और पुनर्केंद्रित एवं एक सुगठित ढंग से लागू किया जाएगा। डिजिटल इंडिया के रूप में कार्यक्रमों की आम ब्रांडिंग, उनके परिवर्तनकारी प्रभाव पर प्रकाश डालता है।

देश में सूचना क्रांति के पहले कदम 1985 में पड़ने के बाद से सरकार और जनता ने कितनी तेजी से अब पूरी दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर बढ़ना शुरू किया यह आज सभी को पता है पर भारत में आधारभूत ढांचे को खड़ा करने और उसके सही तरह से संचालित होने में आने वाली कठिनाइयों के कारण आज भी हम उस स्तर पर प्रगति नहीं कर पाये हैं जो हमारे देश की क्षमता के अनुरूप कही जा सकती हो देश को पूरी तरह से डिजिटल करने की कोशिश में केन्द्र सरकार द्वारा शुरू की गयी डिजिटल इंडिया परियोजना अपने आप में बहुत कारगर हो सकती है यदि इसके क्रियान्वयन में सरकारी क्षेत्र के साथ आम जनता को भी जोड़ने का काम किया जा सके। सरकार इस योजना के तहत देश में नौकरियां और रोजगार सृजित करने की बात कर रही है और देश के बड़े उद्योगपतियों ने जिस तरह से पीएम मोदी के सामने केवल अपनी पीठ थपथपाने का काम किया उससे यही लगता है कि इस योजना से देश को उतना लाभ नहीं



मिलने वाला है जितना सोचा जा रहा है क्योंकि पिछले कई वित्तीय वर्षों में बड़ी कंपनियों द्वारा किए गए निवेश को भी जिस तरह से इस योजना का हिस्सा

बताया गया है वह निजी क्षेत्र और सरकार की मंशा जाहिर कर देता है।

देश के शहर अपने आप ही डिजिटल युग में किसी भी तरह से पहुंचे ही जा रहे हैं और इसके साथ हमारे गांवों के लिए वही समस्या बनी रहने वाली है जो आजादी एक बाद से ही स्थायी भाव के रूप में मौजूद है सार्वजनिक क्षेत्र के अतिरिक्त कोई भी निजी कंपनी आज तक भी देश के दूर दराज क्या शहरों से लगे हुए गांवों में अपनी किसी भी प्रकार की सेवाएं नहीं देना चाहती है क्योंकि उसे वहां पर व्यापार की संभावनाएं कम ही नजर आती हैं पिछले दस वर्षों में हुई मोबाइल क्रांति की बात भी हम करें तो यह भेद स्पष्ट रूप से सामने आ जाएगा कि निजी क्षेत्र की दिलचस्पी केवल शहरी क्षेत्रों में ही अधिक रही है और वे उन स्थानों पर ही अच्छा निवेश और बेहतर तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं जहां से उन्हें बहुत अच्छी आय दिखाई देती है यदि गौर से देखा जाए तो यह देश के बड़े शहरों के आसपास की आबादी वाले गांव आज भी सरकारी क्षेत्र पर पूरी तरह से निर्भर हैं और निजी क्षेत्र वहां से पूरी तरह गायब ही है। डिजिटल इंडिया में सरकार के पास ऐसा कोई भी साधन नहीं होगा जिसके अंतर्गत यह कहा जा सके कि वह निजी क्षेत्र को भी देश के गांवों तक पहुंचने के लिए मदद करने के लिए बाध्य कर सकती है जिससे शहर और गांवों के बीच की खाई पूरी तरह से बढ़ने की भी पूरी संभावनाएं हैं।

देश की साक्षरता दर अभी भी 75% तक ही पहुंच पायी है और इसमें से भी देश के अधिकांश लोगों के पास अभी भी कम्प्यूटर और मोबाइल नहीं है तो सरकारी डिजिटल सेवाओं के लिए उनके पास एक बार फिर से उन्हीं दफ्तरों के चक्कर काटने के अतिरिक्त कोई विकल्प शेष नहीं रहने वाला है यदि कोई स्पष्ट रूप से इन बातों पर विचार करे तो आम लोगों के लिए डिजिटल इंडिया अगले डेढ़ दशक तक सपना ही रहने वाला है हां यदि सरकार चाहे तो एक केन्द्रीय एजेंसी के माध्यम से निजी क्षेत्र के साथ मिलकर हर गांव में एक सौर ऊर्जा संचालित डिजिटल इंडिया केन्द्र की ग्राम सभा में स्थापना कर लोगों को आसानी से यह सब उपलब्ध कर सकती है कारण किसी भी योजना की देश भर में बिजली की उपलब्धता की सफलता पहले ही संदिग्ध हो जाती है जिसमें ऊर्जा की आवश्यकता है अब इसे निपटने के लिए भी राष्ट्रीय सौर मिशन की परिकल्पना पर तेजी से आगे बढ़ने के बारे में सोचने की आवश्यकता भी है बेशक डिजिटल इंडिया को बहुत अच्छे तरह से लांच किया गया है पर इसमें किसी भी नयी बात का समावेश नहीं किया गया है क्योंकि ये सारी योजनाएं पहले भी अलग-अलग नामों से देश में संचालित की जा रही हैं पर पीएम के इसमें इतनी दिलचस्पी दिखाने के बाद क्या यह अपनी गति को बढ़ा पाएगी या यह भी स्वच्छ भारत अभियान और योग दिवस जैसा एक बड़ा शो ही बनकर रह जाने वाला है।



प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण- एक अच्छा कदम

— संजीव कुमार सिंह, प्रबंधक

आजादी के बाद से ही जितनी भी सरकारें आई हैं चाहे वे केंद्र की हो या राज्यों की उन्होंने आम जनता के कल्याण के लिए कई प्रकार की कल्याणकारी योजनाओं की घोषणाएं की हैं। एक अनुमान के अनुसार सरकारों ने जितने प्रकार की कल्याणकारी योजनाओं की घोषणाएं की हैं उसके हिसाब से देश में गरीबी समाप्त हो जानी चाहिए थी। लेकिन सभी को मालूम है कि आज देश में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ है। मौजूदा सरकार ने सभी प्रकार की सब्सिडी फिर चाहे वह गैस सिलेंडर पर सब्सिडी हो या फिर खाद और बीज की खरीद पर सब्सिडी। इसे सीधे खाताधारक के खाते में वापस करने की योजना को क्रियान्वित करने की दिशा में काफी प्रयास किया है और इसी कारण सभी प्रकार के खातों को आधार कार्ड से जोड़ा जा रहा है और आने वाले समय में हो सकता है कि आपको क्रेडिट और डेबिट कार्ड की जगह केवल आधार कार्ड की जरूरत रह जाए। सरकार आने वाले समय में आधार एप को भी व्यापक तौर पर इस्तेमाल करने पर विचार कर रही है इसी के साथ वित्तीय लेनदेन में धोखाधड़ी को समाप्त करने की दिशा में भी काफी सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं। पिछले सालों के अनुभवों एवं सरकारी कल्याण योजनाओं के नतीजों से सरकार इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि इन योजनाओं के लिए खर्च किया जाने वाला धन आम एवं गरीब जनता के बीच पूरा नहीं पहुंचता है। श्री राजीव गांधी के द्वारा कहा गया यह कथन आज भी प्रासंगिक है जिसमें उन्होंने सार्वजनिक रूप से कहा था कि गरीबों को दिए जाने वाले पैसे का मात्र 15 फीसदी ही उन तक पहुंचता है। हाल ही के वर्षों में दिल्ली में केन्द्र व सरकार

लिया। आइए इसके दूरगामी प्रभावों पर एक नजर डालें-

मीडिया तथा अन्य सार्वजनिक मंचों पर पिछले दिनों सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के जरिये गरीबों को वितरित की जाने वाली चुनिंदा वस्तुओं के लिए सब्सिडी के नकद हस्तांतरण पर तमाम चर्चा की जा रही है। इस संदर्भ में आमतौर पर दिल्ली में हाल में किए गए एक अध्ययन का हवाला भी दिया जा रहा है। इस अध्ययन को सेल्फ इम्प्लॉयड वीमंस एसोसिएशन (सेवा) के लिए भारत विकास परिषद (आईडीएफ) ने अंजाम दिया। आईडीएफ के द्वारा यह अध्ययन दो वजहों से किया। पहला, आधार कार्ड और नकदी हस्तांतरण की चर्चाओं के बीच अध्ययन के नतीजे की समीक्षा और दूसरा इसकी वजह से शोध संबंधित कई महत्वपूर्ण सवालों के जवाब तलाशने का मौका मिलना।

नकदी हस्तांतरण पर अनेक अध्ययन हो चुके हैं। उनमें से ज्यादातर से यही संकेत मिलता है कि सशर्त नकदी हस्तांतरण गरीबी के लक्ष्यों से निपटने के क्रम में अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है, बजाय कि बिना शर्त नकदी हस्तांतरण के। वस्तुतः यह शोध माडल मुख्य रूप से लातिन अमेरिकी देशों में स्कूली शिक्षा में नामांकन की दर बढ़ाने पर केन्द्रित था। यह एक अत्यंत विवादस्पद मुद्दा है और इसने प्रमुख तौर पर हस्तांतरण को सशर्त बनाए जाने को लेकर नीति निर्माताओं और शिक्षा जगत का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया था। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो क्या हस्तांतरण को केवल उसी स्थिति में अंजाम दिया जाना चाहिए जबकि गरीब तबके के लोग कुछ विशिष्ट शर्तों को मानने के लिए तैयार हो जाएं? दूसरा विकल्प यह है कि क्या उनको बगैर किसी शर्त के नकदी हस्तांतरण कर दिया जाए? अगर दूसरा विकल्प मान लिया जाए तो इसके बाद निगरानी पर होने वाला बहुत बड़ा खर्च बच जाएगा। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले पीडीएस लाभार्थियों को सब्सिडी का लाभ केवल उसी स्थिति में मिलता है जबकि वे वस्तुएं उन दुकानों से खरीदते हैं जो सरकारी राशन दुकानें हैं। वहीं दूसरी ओर अगर छूट के जरिये दी जाने वाली राशि को सीधे गरीब घरों को मुहैया करा दिया जाए तो यह बिना शर्त नकदी हस्तांतरण होगा और उन पर कोई बोझ नहीं होगा कि वे इस राशि को कैसे खर्च करना चाहते हैं।



द्वारा किए गए एक शोध के नतीजों के आधार पर पीडीएस के स्थान पर प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण किए जाने की सिफारिश की गई, जिसे सरकार ने तुरंत मान

समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण को जितना लाभकारी मानता है, उससे ज्यादा कहीं हानिकारक भी मानता है। भारत में जहां भूमिहीन, गरीब मजदूरों के पास रोजगार/मजदूरी के अवसर न के बराबर हैं या बहुत कम मजदूरी प्राप्त होती है, वहां घर का मुखिया काम पर जाना छोड़ सकता है। लोगों का यह



आवास भारती

भी मानना है कि इस पैसे को ये मुखिया या मर्द नशाखोरी और शराबखोरी में खर्च करेंगे। इसका नतीजा होगा कि औरतों को घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ेगा। इसीलिए इनकी सलाह है कि पैसे घर की औरतों के नाम स्थानांतरित किया जाए।

ऐसा कहने वालों का यह मानना है कि प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण का गरीबों की हालत पर कोई खास असर देखने को नहीं मिलेगा क्योंकि वे अतिरिक्त राशि को खाने के अलावा अन्य चीजों पर खर्च कर देंगे। जैसे कि गरीब घरों के पुरुष खाने के बजाय शराब पर अधिक पैसा खर्च कर देंगे। ऐसे अनुमानों के पीछे कौन से भय छिपे हुए हैं इस बात को समझना कतई कठिन नहीं है। कुछ लोगों का मानना है कि गरीबों का व्यवहार मूलभूत तौर पर मध्यम वर्गों के लोगों से अलग होता है यह वर्ग नशाखोरी की बजाय खाना खरीदने पर खर्च कर देते हैं। इस तर्क का एक कारण यह भी हो सकता है कि मध्यम वर्ग की आमदनी गरीबों से ज्यादा होती है। फलतः शराब में किया गया खर्च कम दिखता है जबकि गरीब के द्वारा खर्च किया गया इतना ही पैसा ज्यादा दिखता है। हालांकि गरीब वर्ग खाने के बजाय शराब को अधिक पसंद करते हैं अथवा नहीं, यह शोध का विषय जरूर है।

इस अध्ययन में सबसे पहले लोगों से पूछा गया कि कितने लोग गरीबी रेखा के कार्ड से राशन की जगह नकद राशि लेना चाहेंगे। ज्यादातर पुरुष वर्ग नकद राशि के पक्ष में था, जबकि पचास फीसदी महिलाएं मुफ्त राशन के पक्ष में थीं। इस अध्ययन में लोगों को तीन समूहों में बांट दिया गया था। पहले समूह में शामिल लोगों को नकदी हस्तांतरण बैंक खाते के जरिये दिया गया, उनके गरीबी रेखा वाले कार्ड पर दिल्ली सरकार ने यह मुहर लगा दी कि वे वे दी गई तिथि से अगले एक साल तक पीडीएस के जरिये कुछ भी हासिल करने की पात्रता नहीं रखते। दूसरे समूह में परिवार की एक महिला सदस्य के नाम पर बैंक खाता खोला गया लेकिन उसे कोई धनराशि नहीं दी गई और वह गरीबी रेखा वाले कार्ड को पीडीएस की दुकान पर इस्तेमाल कर सकती थी। तीसरे समूह के लिए कुछ नहीं किया गया। दूसरे समूह के निर्माण का मकसद था नकदी हस्तांतरण के प्रभाव को बैंक खाते से अलग करना। हालांकि बैंक में नकदी हस्तांतरण एवं खाता संचालन एक अलग मुद्दा है क्योंकि कई लोग तो निरक्षर पाए गए और कइयों को केवल हस्ताक्षर करना आता था जो हर बार अलग-अलग तरह का होता है। जिससे बैंक कर्मियों की परेशानी बढ़ना स्वाभाविक है। कल्पना कीजिए कि जब दिल्ली जैसे महानगर में यह स्थिति है तो दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों का क्या हाल होगा।

यदि देखा जाए तो तीनों समूह कमोबेश अपने गुणों में और प्रयोग के व्यवहार में समान थे। उनके व्यवहार को दो और मौकों पर परखा गया— एक बार छह महीने के बाद और दूसरी बार एक साल पूरा होने पर। उनके व्यवहार का विश्लेषण किया गया और यह पाया गया कि समूह तीन के सदस्यों का व्यवहार अन्य समूहों के सदस्यों से अलग कैसे था?

किसी भी तरह की खाद्य सब्सिडी के स्थान पर बिना शर्त नकदी हस्तांतरण की एक आम आलोचना यह है कि उन घरों में खाने पर कम तथा अन्य वस्तुओं पर अधिक खर्च कर दिया जाएगा जो दरअसल पोषण से रहित होती हैं और लंबी अवधि के दौरान अत्यधिक नुकसानदेह भी होती है। खासतौर पर बच्चों के लिए। हालांकि इस अध्ययन में इसका कोई प्रमाण देखने को नहीं मिला। बल्कि औरतों को प्राप्त राशि में यह पाया गया कि बिना शर्त नकदी हस्तांतरण से उन परिवारों को अन्य पोषक तत्वों की ओर रुख करने का मौका भी मिला। गरीबी रेखा वाला कार्ड मुख्यतौर पर खाद्यान्न मसलन गेहूं और चावल आदि पर सब्सिडी दिलाता है। इसलिए यह बात तार्किक भी लगती है कि बिना शर्त नकदी हस्तांतरण होने से लोगों को मसलन दाल, अंडे, मछली, मांस, फल, सब्जियों जैसे पोषक तत्वों आदि का सेवन करने का मौका मिला। शोध से यह बात निकलकर आई कि बिना शर्त नकदी हस्तांतरण देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित कर पाने का एक बेहतर उपाय सिद्ध हो सकता है। बशर्ते कि इन परिवारों की महिलाओं को जागरूक बनाया जाए और सरकार की निगरानी में व्यवस्था चौकस हो।

प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण का एक रोचक प्रभाव उन लोगों पर भी देखने को मिला जिन्हें यह नहीं मिलती है। यह पाया गया कि प्रयोग की अवधि के दौरान पीडीएस दुकानों के सेवा के स्तर में सुधार हुआ। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पीडीएस दुकानों को निजी दुकानों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है। ऐसा इसलिए क्योंकि उनके कुछ ग्राहक अब निजी दुकानों का रुख कर रहे हैं। हालांकि, इस निष्कर्ष को पूरी तरह समझने के लिए और अधिक अध्ययन की आवश्यकता है।

यह अध्ययन कम से कम यह तो सुझाता ही है कि ऐसे गरीब घर हो सकते हैं जहां रहने वाले लोग पीडीएस के स्थान पर नकदी हस्तांतरण की प्राथमिकता दें और इसके बावजूद पीडीएस के लक्ष्यों को कोई नुकसान न पहुंचे। यह बात कम से कम उन मामलों में तो सही है जहां गरीबों की पहुंच आपूर्ति के अन्य वैकल्पिक माध्यमों तक है। अधिकांश शहरी स्थानों पर यह बात लागू होती है।

इस अध्ययन से एक बात यह भी निकल कर आई थी कि शहरी क्षेत्रों में तो यह योजना सफल हो सकती है क्योंकि बैंकिंग नेटवर्क मौजूद है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में अभी बैंकिंग व्यवस्था बहुत कमजोर एवं बिरल है। यदि इस व्यवस्था में पोस्टल बैंकिंग प्रणाली को शामिल किया जाए तो लक्ष्य जल्दी हासिल करने में सफलता मिल सकती है, अन्यथा ग्रामीण इलाकों में अभी दसियों वर्ष लग जाएंगे, तब कहीं जाकर वे शहरी क्षेत्र के समान सेवाएं प्राप्त कर सकेंगे। इसके साथ ही पीडीएस प्रणाली को मजबूत एवं सघन बनाने की आवश्यकता है। इन सबके बावजूद सघन निगरानी एवं ग्राम पंचायतों व गैर सरकारी संगठनों से सहयोग लेने की जरूरत है और उनके लिए ऐसे उपाय बनाने होंगे, जहां वे अपनी शिकायत दर्ज कराएं एवं तुरंत कार्यवाही किए जाने का आश्वासन एवं समाधान मिलें। यदि ऐसा नहीं हुआ तो अन्य तमाम प्रणालियों की भांति ही यह प्रणाली भी बिचौलियों एवं भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाएगी।



घर सुरक्षित हो अपना

— रवि कुमार सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक



घर अपना हो या किराया पर लिया गया हो। घर से जुड़ी हर छोटी से छोटी बात पर हम बारीकी से ध्यान देते हैं। फिर चाहे बात उसके उसकी कीमत की हो, लोकेशन की हो यहां तक कि उसके डिजाइनिंग की। आए दिन खबरें सुनने की मिलती है कि कई सारे लोगों को बिल्डर से बड़े-बड़े सपने दिखाए। लेकिन आज वे लोग अपने को ठगा महसूस कर रहे हैं। समय-समय पर सरकार और जन जागरूकता के द्वारा इन सबसे निपटने का तरीका ढूंढा जाता है। लेकिन कहते हैं न कि आपकी पीड़ा आप ही जान सकते, कोई दूसरा उसको समझ नहीं सकता। इसलिए जहां हम इतनी सारी चीजों का ध्यान रखते हैं वहीं आराम के चक्कर में कई बार अपने मकान की सुरक्षा के मामले में चूक कर देते हैं। लेकिन आज जिस प्रकार के वारदात हो रहे हैं ऐसे में हमें घर खरीदने से पहले इसके सुरक्षा के बारे में सोचना चाहिए। सुरक्षा कई तरीके का हो सकता है। हम यहां आपको इन्हीं सुरक्षा पहलुओं पर कुछ जानकारी देने की कोशिश करेंगे।

आज महानगरों में ऊंचे-ऊंचे और भव्य मकान या अपार्टमेंट तो बनाए जा रहे हैं लेकिन कई बार इसमें सुरक्षा के सही बंदोबस्त नहीं होने के कारण भयावह अग्निकांड आदि की खबर सुनने को मिलता है। इसलिए आप जब भी घर लें तो यह जांच लें कि वहां सुरक्षा के सही बंदोबस्त हैं या नहीं। क्या वहां आपात स्थिति में वहां से निकलने का इंतजाम है या नहीं। ईमारत में किसी कारणवश आग लेने की स्थिति में उसे बुझाने के क्या इंतजाम हैं, सी.सी.टी.वी कैमरा, रात्रिकालीन पहरेदार हैं या नहीं। उनका सिर्फ होना काफी नहीं है बल्कि यह भी जांच लें कि आपके अनुसार पर्याप्त हैं या नहीं। आए दिन जिस प्रकार से प्राकृतिक असंतुलन के कारण में प्राकृतिक आपदाएं हो रही है ऐसे में यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि आपका मकान उनसे निपटने में कितना समर्थ है। अगर आप भूकंप संभावित क्षेत्र में रहते हैं तो यह सुनिश्चित कर लें कि आपका मकान भूकंपरोधी हो। आज कल विशेषतौर पर महानगरों में इन सुरक्षा पहलुओं को ताक में रखकर कार्य किया जा रहा है और हम भी कई बार इस ओर ध्यान नहीं देते और जब कोई आपदा हो जाती है तो हाथ मलने के सिवा हमारे पास कोई चारा नहीं रहता। सुरक्षा केवल मकान की मजबूती और सी.सी.टी.वी. जैसे सुरक्षा उपकरण से नहीं होती। बल्कि हमें कई और बातों को ध्यान में रखना होता है। मसलन हमें वहां की परिस्थिति का विश्लेषण भी करना चाहिए। किसी भी स्थान पर नए लोगों को

अपने पड़ोसियों से बहुत मदद मिल सकती है। उन्हें सेटल होने के लिए पड़ोसियों से मदद को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। जिस इलाके में आप मकान ले रहे हैं



यदि वह पहले से बसा है वहां रहने वाले परिवारों से आपको इलाके के बारे में जानने के लिए काफी कुछ मिल सकता है और वे आपके काफी काम भी आ सकते हैं। शुरुआत में ही पड़ोसियों से आपकी दोस्ती हो जाए तो आपको मकान में शिफट होने व सेटल होने में उनसे काफी मदद मिलेगी।

बड़े-बड़े शहरों में लोगों के रहने और बेहतर सुविधा हेतु हाउसिंग सासाइटी बनाई जा रही हैं। कई परिवार इस प्रकार की सोसाइटी में ही रहना पसंद करते हैं। यदि आप किसी हाउसिंग सोसायटी में रहने जा रहे हैं तो अन्य सदस्यों के साथ भी मेल-जोल बढ़ाएं। ऐसी सोसायटियों में अक्सर समस्याओं का हल मिल-जुलकर निकाला जाता है। इसके अलावा नोटिस बोर्ड को भी नियमित रूप से देखते रहें, इससे आपको सोसायटी के नियमों के अलावा अन्य महत्वपूर्ण जानकारी भी मिलती रहेगी। यह भी देख लें कि बिजली के मेन स्विच तथा सर्किट ब्रेकर कहां लगे हैं और जरूरत पड़ने पर उन्हें बंद करने के तौर-तरीके भी जान लें। एक फोन बुक की तरह ही एक डायरी में ऐसे सभी लोगों के फोन नंबर तथा पते लिख लें जिनकी सेवाओं की जरूरत आपको पड़ सकती है। इनमें बिजली वाला, प्लम्बर आदि प्रमुख रूप से शामिल होंगे। किसी भी तरह की समस्या के दौरान आपको विभिन्न पेशेवर सेवाएं प्रदान करने वालों की जरूरत पड़ सकती है। उनके फोन नंबर आपके पास होंगे तो आप तुरंत सम्पर्क करके अपने काम समय पर करवा सकेंगे। घर पर एक अच्छा टूल बॉक्स भी रखें। यदि कोई छोटी-मोटी मरम्मत का काम हो तो इसकी मदद से आप उसे खुद ही निपटा सकेंगे।



आवास भारती

आज कल जब हम कोई संपत्ति खरीदते हैं तो हमें कई प्रक्रियाओं से होकर गुजरना पड़ता है। यदि आप किसी बिल्डर आदि से भी कोई मकान खरीदते हैं तो वे आपको मकान खरीद के समय कई प्रकार के दस्तावेज देते हैं। हमें यह मालूम होना चाहिए कि हमारे लिए कौन-कौन से दस्तावेज जरूरी हैं और कहीं आपसे कुछ छुपाया तो नहीं जा रहा। कई बार ऐसा होता है कि किन्हीं कारणवश हमारे लिए जरूरी कागजात हमारे पास नहीं रहते। इसलिए आज के समय पर हमें इसे सुरक्षित ढंग से रखना भी बहुत जरूरी है। आजकल इनकी डिजिटल कॉपी तैयार करना भी समझदारी है। मूल प्रतियों तथा उनकी फोटोकॉपीयों को संभाल कर लॉकर में रखना चाहिए जबकि डिजिटल कॉपी भी आपके काफी काम आ सकती है।

बीमा करवाएं

अक्सर लोग अपना, अपने परिवार, बाइक, टीवी इत्यादि का बीमा करवाते हैं। यह आम है। लेकिन आज भी कई लोगों को नहीं मालूम की उनके घर का भी बीमा हो सकता है या फिर जानकर ऐसा नहीं करते। अक्सर लोग अपने घर का बीमा नहीं करवाते क्योंकि उन्हें लगता है कि यह फिजूल या अतिरिक्त खर्च है परंतु इससे आप भविष्य में किसी भी तरह की आपात स्थिति में घर को होने वाले नुकसान से चिंतामुक्त हो सकते हैं।



हम कई बार नया मकान खरीदते हैं तो कई बार किराए के मकान में रहते हैं। पुराना मकान भी खरीदते हैं। यदि आप किसी पुराने मकान में शिफ्ट कर रहे हैं

तो उसके दरवाजों पर लगे सभी तालों को बदलवा लें। साथ ही दरवाजों की अतिरिक्त चाबियां भी तैयार करके रखें क्योंकि गलती से घर के अंदर चाबियां रह सकती हैं और दरवाजा लॉक हो सकता है। अतिरिक्त चाबी को अपने पर्स में रखें ताकि ऐसी स्थिति में वह आपके काम आ सकें।

अपने आशियाने का निर्माण सजावट में रखे ध्यान

शुरुआत में फर्नीचर तथा रि-मॉडलिंग पर ज्यादा खर्च न करें। इस बात पर भी गौर करें कि क्या आप अपनी पुरानी चीजों में बदलाव करके उन्हें नए घर में प्रयोग कर सकते हैं। अधिकतर लोगों को अपने घर को खुद सजाना पसंद है परंतु कुछ लोग इसके लिए इंटीरियर डैकोरेटर की सेवाएं लेना भी पसंद करते हैं। इन दिनों कई तरह की सेवाएं ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं। फर्नीचर या किसी उपकरण के संबंध में बड़ी खरीद से आपकी वित्तीय योजना प्रभावित हो सकती है इसलिए इनके संबंध में फैसला लेने से पहले अपनी बचत तथा खर्चों का ध्यान अवश्य रखें। साथ ही सभी खरीदी गई चीजों की रसीदें तथा गारंटी कार्ड को संभाल लेना भी आवश्यक है।

स्टोरेज का ख्याल

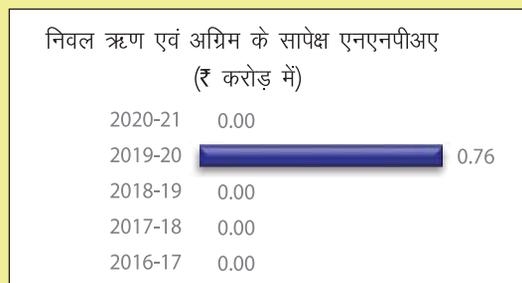
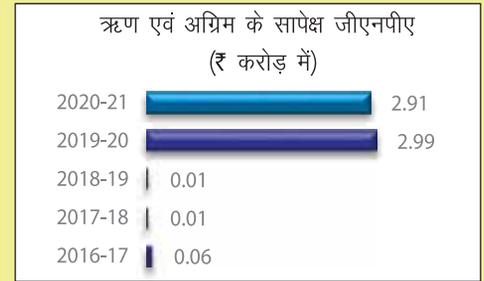
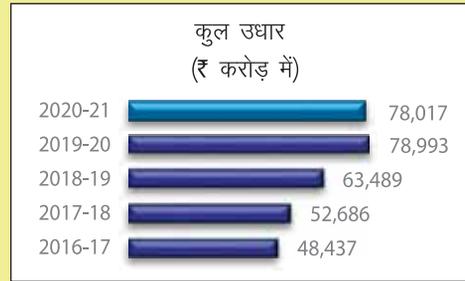
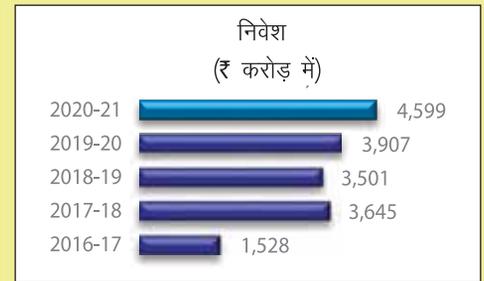
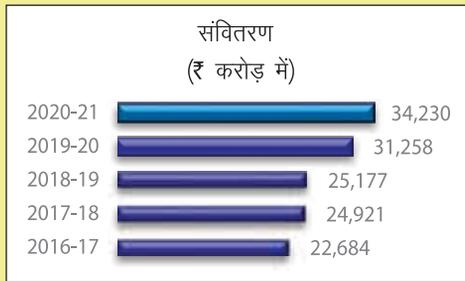
जब एक मकान का घर का रूप लेता है तो उसमें विभिन्न चीजों को सहेजने के लिए पर्याप्त स्टोरेज स्पेस बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है। बड़े फर्नीचर तथा बिस्तरों आदि को रखने के लिए आपको खाली स्थान की जरूरत होगी। वैसे बिल्ट-इन-स्टोरेज की मदद से काफी सामान टिकाया जा सकता है। साथ ही हर परिवार के सदस्यों की जरूरतों के अनुरूप स्टोरेज स्पेस के बारे में पहले ही इंतजाम कर लें।

उपयोगिता की चीजों का बंदोबस्त करना

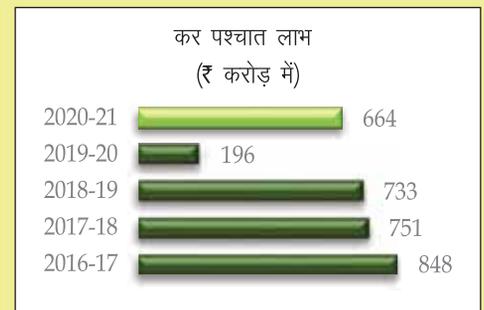
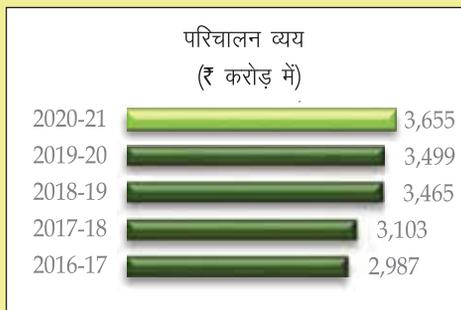
यदि आपका मकान ऐसे इलाके में है जहां मोबाइल का सिग्नल कमजोर रहता है तो लैंडलाइन फोन लगवाना आपके पास एक विकल्प है। इन दिनों बढ़ती 'कॉल ड्रॉप' समस्या के चलते लैंडलाइन वैसे भी अच्छा उपाय है। इसके अलावा ऊर्जा की बचत का भी ध्यान रखना होगा। जरूरत न होने पर उपकरणों का बंद रखें, इससे बिल में काफी पैसे भी बचेंगे। पानी भी यूं ही बहता न रहे। हाऊसिंग सोसायटी में रहने वालों को पार्किंग स्पेस, बगीचों आदि सांझे स्थलों को स्वच्छ रखने में भी अपना योगदान देना चाहिए जिससे आप एक जिम्मेदार मकान मालिक तथा अच्छे पड़ोसी होने का सबूत दे सकते हैं।

राष्ट्रीय आवास बैंक की पिछले 5 वर्षों की प्रमुख कार्य-निष्पादकता मैट्रिक्स

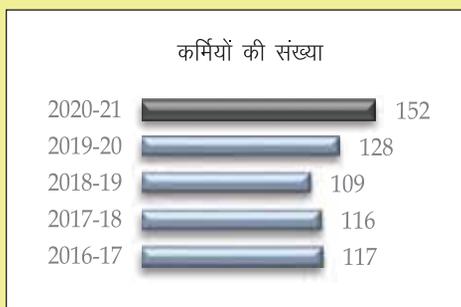
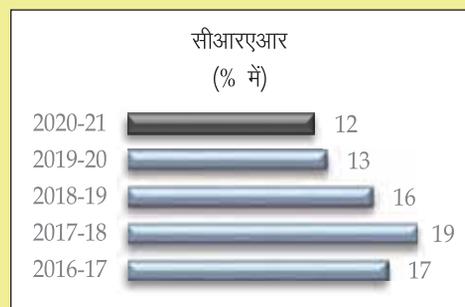
तुलन-पत्र मैट्रिक्स*



लाभ एवं हानि मैट्रिक्स*



दक्षता मैट्रिक्स



बैंक का वित्त वर्ष जुलाई से जून होता है।

* पूर्व वर्ष के आंकड़ों को चालू वर्ष के साथ तुलनीय बनाने हेतु पुनः समूहित किया गया है।



31 दिसम्बर, 2021 को समाप्त छमाही हेतु वित्तीय परिणाम की सीमित समीक्षा

(₹ लाख में)

विवरण	31.12.2021 को समाप्त छमाही	31.12.2020 को समाप्त छमाही	31.06.2021 को समाप्त वित्त वर्ष
	अलेखापरीक्षित	अलेखापरीक्षित	लेखा परीक्षित
1. अर्जित ब्याज (क)+(ख)+(ग)+(घ)	2,20,124.95	2,59,647.42	4,82,735.24
(क) अग्रिमों पर ब्याज	2,09,221.90	2,44,153.06	4,58,633.62
(ख) निवेशों पर आय	9,033.84	7,629.54	14,343.04
(ग) बैंक जमाओं पर ब्याज	1,869.21	7,864.82	9,758.58
(घ) अन्य	-	-	-
2. अन्य आय	46,640.11	2,363.32	5,084.40
3. कुल आय (1+2)	2,66,765.06	2,62,010.74	4,87,819.64
4. व्यय किया गया ब्याज	1,63,240.54	1,84,068.19	3,57,380.91
5. परिचालन व्यय (i)+(ii)	7,330.40	3,481.99	8,111.50
(i) कर्मचारियों के लिए भुगतान एवं प्रावधान	1,737.23	1,409.98	3,750.15
(ii) अन्य परिचालन व्यय (क)+(ख)+(ग)	5,593.17	2,072.01	4,361.35
(क) ब्रोकरेज, गारंटी शुल्क एवं अन्य वित्त प्रभार	157.09	186.85	346.98
(ख) उधारों पर स्टॉप शुल्क	10.37	5.02	54.17
(ग) अन्य व्यय	5,425.71	1,880.14	3,960.20
6. विनियम उतार-चढ़ाव के कारण (लाभ)/हानि	(951.09)	4,390.74	6,078.12
7. प्रावधान एवं आकस्मिक व्ययों को छोड़कर कुल व्यय (4+5+6)	1,69,619.85	1,91,940.92	3,71,570.53
8. प्रावधान एवं आकस्मिक व्ययों से पूर्व परिचालन लाभ (3-7)	97,145.21	70,069.82	1,16,249.11
9. कर एवं आकस्मिक व्ययों के अलावा अन्य प्रावधान	(97,095.78)	60,364.78	70,252.38
10. असामान्य मदें	-	-	-
11. कर पूर्व सामान्य गतिविधियों से लाभ (+)/ हानि (-) (8-9-10)	1,94,240.99	9,705.04	45,996.73
12. कर व्यय	48,900.00	18,100.00	(20,315.75)
13. कर के पश्चात सामान्य गतिविधियों से निवल लाभ (+)/ हानि (-) (11-12)	1,45,340.99	(8,394.96)	66,312.48
14. असाधारण मदें (कर व्यय का निवल)	-	-	-
15. अवधि हेतु निवल लाभ (+)/ हानि (-) (13-14)	1,45,340.99	(8,394.96)	66,312.48
16. चुकता पूंजी (भारत सरकार के संपूर्ण स्वामित्व में)	1,45,000.00	1,45,000.00	1,45,000.00
17. पुनर्मूल्यांकन भंडार को छोड़कर भंडार (पिछले लेखा वर्ष के तुलन पत्र के अनुसार)	8,34,501.57	7,67,936.64	8,34,501.57
18. विश्लेषणात्मक अनुपात:			
(i) पूंजीगत पर्याप्तता अनुपात	15.53%	12.56%	12.14%
(ii) प्रति शेयर आय (ईपीएस)	लागू नहीं	लागू नहीं	लागू नहीं
19. एनपीए अनुपात			
क) सकल एनपीए की राशि	1,53,510.38	2,50,284.59	2,50,284.59
ख) निवल एनपीए की राशि	-	-	-
ग) सकल एनपीए का %	2.11%	3.18%	2.91%
घ) निवल एनपीए का %	-	-	-
ड़) आस्तियों पर लाभ (वार्षिक)	3.46%	(0.19)%	0.75%

टिप्पणी:

- उपरोक्त परिणाम लेखा परीक्षा समिति द्वारा समीक्षित एवं 11 फरवरी, 2022 को नई दिल्ली में आयोजित निदेशक मंडल की बैठक में अनुमोदित किए गए हैं।
- डीएचएफएल खाते के समाधान के तहत, बैंक को पीरामल हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड से ₹ 1,054.88 करोड़ की राशि प्राप्त हुई। राशि को ₹ 86 करोड़ के ब्याज और शेष ₹ 968 करोड़ के मूल बकाया के बीच प्रभाजित किया गया है जिसके परिणामस्वरूप किये गए एनपीए प्रावधान को वापस ले लिया गया है।
- 1991-92 घोटाले के मामले में बैंक को अभिरक्षक से ₹ 523.18 करोड़ (ब्याज के साथ दावा राशि) भी प्राप्त हुए। इसमें से बैंक ने ₹ 428.98 करोड़ की ब्याज राशि अन्य आय (एकमुश्त असाधारण मद) के रूप में बुक की थी। चूंकि बैंक ने अभिरक्षक को वचनपत्र दिया है, अतः राशि को आकस्मिक देयता के रूप में चिह्नित किया गया है।
- भारतीय रिजर्व बैंक के 04 अगस्त, 2016 के परिपत्र के अनुसार, बैंक निरंतर प्रोफार्मा आईएनडी एएस विवरणी तैयार कर रहा है और नियमित रूप से विनियामक को प्रस्तुत कर रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक ने 15 मई, 2019 के अपने पत्र के माध्यम से यह सलाह दी है कि अखिल भारतीय वित्तीय संस्थानों (एआईएफआई) द्वारा भारतीय लेखांकन मानकों के कार्यान्वयन को अगली सूचना तक स्थगित कर दिया गया है।
- जहां आवश्यक था वहां पिछले वर्षों के आंकड़ों को पुनः वर्गीकृत / पुनः व्यवस्थित किया गया है।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 11 फरवरी, 2022

ह/-
(सी ए सिद्धार्थ बंसल)
भागीदार
सदस्यता सं. 518004

सम तारीख की हमारी मूल्यांकन रिपोर्ट के अनुसार
कृते बंसल एंड कंपनी एलएलपी
सनदी लेखाकार
फर्म पंजी. सं. 0001113 एन/एन 500079

प्रधान कार्यालय

राष्ट्रीय आवास बैंक, कोर 5-ए, भारत पर्यावास केंद्र, 3-5 तल, लोधी रोड नई दिल्ली- 110003
टेली : 011-3918 7000 वेबसाइट : <http://www.nhb.org.in>



राष्ट्रीय
आवास बैंक
NATIONAL
HOUSING BANK

क्षेत्रीय एवं क्षेत्रीय प्रतिनिधि कार्यालय

नई दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद, बैंगलूरु, हैदराबाद, कोलकाता, भोपाल, चेन्नई, लखनऊ, गुवाहाटी